

प्रेमबानी
(चतुर्थ भाग)



परम गुरु हुज़ूर महाराज

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186736

UNIVERSAL
LIBRARY

QUP—24—4-4-69—5,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No.

H294.554

Accession No.

P. Q.

H98P

H2935

Author

हजूर महाराज .

Title

प्रेमवानी . चौथा भाग . 1960

This book should be returned on or before the date last marked below.

राधास्वामी दयालुकी दया
राधास्वामी सहाय

प्रेमबानी

(चौथा भाग)

परम गुरु हुजूर महाराज

— प्रकाशक —

राधास्वामी सतसंग सभा, दयालबाग (आगरा)

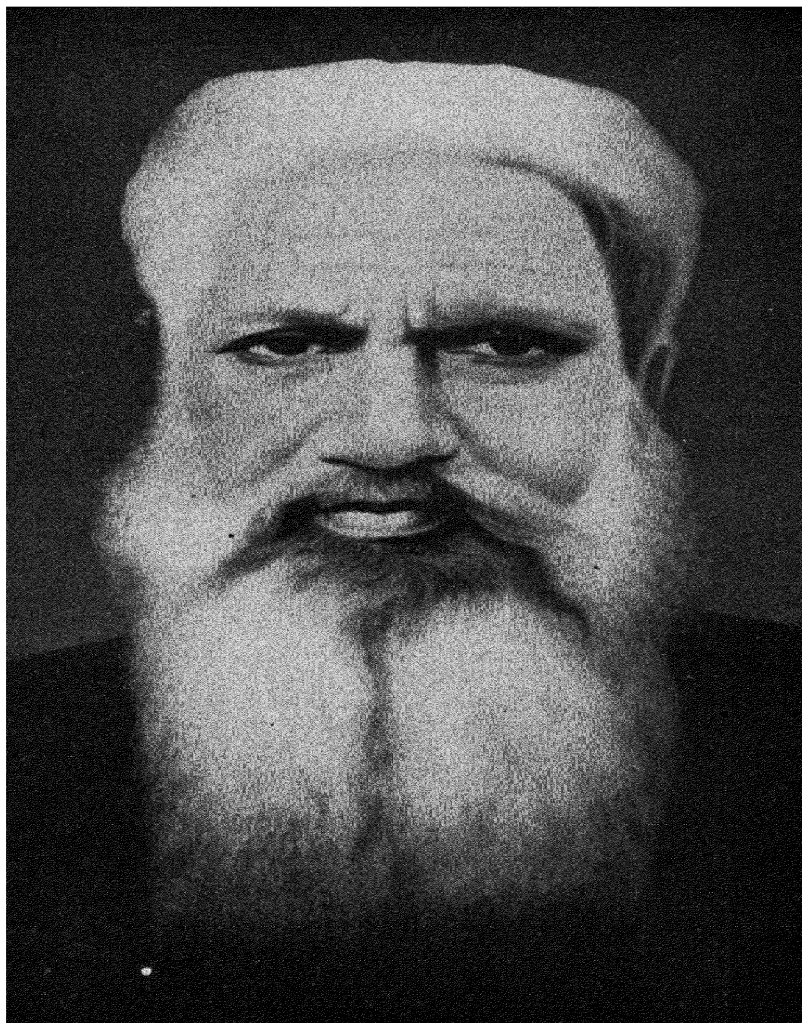
राधास्वामी संवत् १४३

सन् १९६० ई०

(All Rights Reserved)

First Edition	1950	1000
Second Edition	1960	1000

PRINTED BY BABU RAM JADOUN, M.A.
AT THE DAYALBAGH PRESS, DAYALBAGH, AGRA



परम गुरु हुजूर महाराज

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

निवेदन

राधास्वामी मत के दूसरे पूज्य आचार्य परम गुरु हुजूर महाराज ने परम पुरुष पूरन धनी स्वामीजी महाराज के गुप्त होने पर सन् १८७८ ई० में सतसंग का कार्यभार सँभाला और ६ दिसम्बर सन् १८९८ ई० को गुप्त होने की मौज फरमाई। आपने प्रथम आचार्य परम पुरुष पूरन धनी स्वामीजी महाराज की जो अनन्य भक्ति की और उनके चरण कमलों का अपार प्रेम जो आपके हृदय में लहराया उसे आपने निहायत रसीले और मनोहर शब्दों में प्रकट किया था। यह अनमोल शब्द प्रेमबानी के रूप में प्रकाशित किए गए थे।

सतसंगी भाइयों के हृदय में इन शब्दों के लिए विशेष प्रेम व आदर है। इस कारण राधास्वामी सतसंग सभा ने सन् १९४९ में प्रेमबानी के प्रकाशित करने का प्रबंध किया और प्रेमबानी के चारों भाग प्रकाशित किए गए। प्रेमबानी के चौथे भाग का दूसरा संस्करण अब प्रकाशित किया जाता है। आशा है प्रेमीजन इससे लाभ उठाएँगे।

दयालबाग (आगरा)
अक्तूबर २५, १९६० ई०

प्रकाशक—

राधास्वामी सहाय

प्रेमबानी

(चौथा भाग)

सूचीपत्र

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अ		क	
अचरज आरत गुरु की धारूँ	३६	करूँ गुरु सतसँग नित्त अली	१२२
अहो मेरे सतगुरु अहो मेरी जान	१८	करूँ पहिले महिमा गुरु की	१८
आ		करूँ संत मत का मैं थोड़ा बयाँ	१४
आओ री सखी चलो गुरु के पासा	८४	कस जायँ री सखी मेरे मन के	१६८
आओ री सखी चलो गुरु सतसँग	८५	कस पिया घर जाऊँ री सँग	१६८
आग लगी संसार में	१५५	कोइ दिन का है जग में रहना	६०
आज आनंद रहा मौज से	६	कोई कछू कहे मैं नेक न मानूँ	८७
आज गरज गरज घन गरजे	२३	कौन विधि मनुआँ रोका जाय	६५
आज गुरु प्यारे के चरणों में	८	क्यों अटक रही जग प्यारी	२८
आज धुन अनहद बाज रही है	६	क्यों जग में रहे भरमानी	२५
आज प्यारी तू समझ सोच के कर	५	क्यों सोच करे मन मूरख	२७
आज मम भाग जगे गुरु सतसँग	४	ग	
आज मेघा रिमझिम बरसे	२२	गहो रे चरन गुरु धर हिये प्रीती	१६७
आज सतगुरु की सरन भाग से	१	गुरु की धर हिये मैं परतीत	१२६
आज सतगुरु के चरण में तू लगा	३	गुरु चरणन लौलीन सुरत जग	७१
आज सतसँग गुरु का कीजे	२१	गुरु प्यारे का धर विश्वास मन	१६६
आज हंगामये शादी का गरम	७	गुरु प्यारे का ले बल हाथ करम	१६८
इ		गुरु प्यारे की आरत सार	१६८
इतनी अरज मेरी मानो स्वामी	१६२	गुरु प्यारे के नित गुन गाय	१६६
उ		गुरु प्यारे चरण पर आज मनुआँ	१६८
उठत मेरे मन में नित्त उचंग	१४७	घ	
		घट में दर्शन दीजिये मेरे राधास्वामी	८१

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
च		प	
चरन गुरु दम दम हिरदे धार	१६६	पिया का दरस कस पाऊँ सखी	१७२
चलो चलो घर घंट पुकारे	१६१	पिया मेरे और मैं पिया की	१६२
चलो री सखी आज गगनपुरी	३५	पिरेमन लाई आरती साज	१२६
चुपके चुपके बैठ कर करो नाम	१६१	पिरेमन सुरत आरती धार	१५६
चेतोरे घर घाट सम्हारो	४६	पिरेमी सुरत रंगीली आय	१२३
चेतोरे जग काम न आवे	४७	प्रेम की दौलत अपर अपार	१३७
ज		प्रेम की महिमा क्या गाई	१३४
अगत जीव सब होली पूजें	१०१	प्रेम गुरु रहा हिये में छाव	१३०
जगत तज गुरु चरनन में भाज	१६६	प्रेम दात गुरु दीजिये मेरे समरथ	७६
जगत भोग मोहि नेक न भावें	७७	प्रेम भरी भोली बाली सुरतिया	३७
जगत से मन को तोड़ चलो	१६६	प्रेमी जइयो रे सतसंग में	३८
जागो रे यहाँ कब लग सोना	५०	प्रेमी जागो रे तुम अब ही	४२
जुड़ मिल के हंस सारे दर्शन	१३	प्रेमी भागो रे जगत से	४०
जैसे बने तैसे करो कमाई	१६६	प्रेमी मानो रे बचन को	४१
जो मेरे प्रीतम से प्रीति करे	६६	प्रेमी मिलियो रे सतगुरु से	३६
झ		प्रेमी रहियो रे हुशियार	४२
भूलत घट में सुरत हिंडोला	१५२	प्रेमी लीजो रे सुध घर की	४३
त		ब	
तुम अब ही गुरु से मिलो जगन	६४	बचन सुना जग भाव हटाया	१६५
तुम अब ही गुरु सँग धाओ बहुर	६२	बार बार मैं भूलनहार	१६६
तुम अब ही गुरु सँग रलो हिये में	६५	बाहर की मत देख	१६१
तुम अब ही बिरह जगाय शब्द में	६४	बिन दर्शन कल नाहिं पड़े	८२
तुम अब ही मन को माँजो	६३	बिन दर्शन चित रहे उदासा	१७३
तुम अब ही सतसंग धारो	६३	बिन दर्शन मन तड़प रहा कस	१७२
तुम जीते सुरत चढ़ाओ मुए पर	६२	बिन दर्शन मैं बिकल रहूँ	१७३
द		बिन दर्शन मोहि कुछ न सुहावे	१७३
दरश आज दीजिये	१६६	बिन दर्शन मोहि चैन न आवे	१७२
ध		बिरहनी सुरत हिये धर प्यार	१२८
धन धन राधास्वामी गाय रहूँगी	१५७	बंधन ही से ऊपजें	१६१
धाओ रे गुरु सरन सम्हारी	५०	भ	
न		भक्त का पंथ निराला है	६३
न जग में चैन और न स्वर्ग सुख	१०	भक्तन के स्वामी काज सँवारे	१७०
नाम का लीना कर हथियार	१६७	भजन मैं कैसे करूँ हेली री	६१
नाम रूप से प्यार कर	१६१	भाग भरी स्तुत अजब अनोखी	१७३
		भाग भरी स्तुत सतसंग करती	१५२

शब्द	पृष्ठ
भागो रे जग से अब भागो	४८
भूल भरम राकलत अब छोड़ो	१५८
भोग बासना छोड़ पियारे	१००
म	
मन इंद्री मेरे चुप न रहावें	१६७
मन की मत मान के पछताओगे	१२
मन के घाट बैठ सुत घर की सुद्ध	६८
मन चंचल चहुँ दिस धाय सखी	७३
मन तू करले हिये धर प्यार	७५
मन तू भज ले बारम्बार	१७०
मन तू सुन ले चित दे आज	७६
मन मेरा मुझे नचाय रहा	१६५
मनुआँ अनाड़ी को समझाओ	६७
मनुआँ अनाड़ी से कह दीजो जाव	६६
मनुआँ कहन न माने सखी मैं कौन	७४
मनुआँ मेरा सोवे जगत में जगा	६४
मनुआँ हठीला कहन न माने	१६६
माया रूप नवीन धार कर	१०३
मुझे अपने प्रीतम से है यह करार	१६१
मेरा भीज रहा मन प्रेम रंग	१५६
मेरी प्यारी सहेली हो क्यों जनम	५६
मेरी प्यारी सहेली हो दया कर	६०
मेरे तपन उठत हिय भारी	२४
मेरे प्यारे गुरु दातार	१६६
मेरे प्यारे बहन और भाई क्यों जग	१६४
मेरे प्यारे बहन और भाई राकलत	५२
मेरे प्यारे बहन और भाई क्यों	१६४
मेरे प्यारे बहन और भाई गुरु का	१६५
मेरे प्यारे बहन और भाई गुरु चरन	५५
मेरे प्यारे बहन और भाई गुरु बचन	१६५
मेरे प्यारे बहन और भाई गुरु सत	५७
मेरे प्यारे बहन और भाई जग	१६४
मेरे प्यारे बहन और भाई जग मोह	५६
मेरे प्यारे बहन और भाई जग यों	१६३
मेरे प्यारे बहन और भाई जरा	५८
मेरे प्यारे बहन और भाई दुक	१६३

शब्द	पृष्ठ
मेरे प्यारे बहन और भाई तुम्हें	५१
मेरे प्यारे बहन और भाई भोगन	१६४
मेरे प्यारे बहन और भाई यह जग	१६४
मेरे प्यारे बहन और भाई यह देश	१६४
मेरे प्यारे बहन और भाई या	५४
मेरे प्यारे बहन और भाई राधा	१६५
मेरे राधास्वामी जग आये करन	८८
मेरे राधास्वामी प्यारे हो दरस दे	८८
मैं तो पड़ी री दूर निज घर से	६२
मोहि नाच नचावे मन ठगिया	१७२
मंसा बाचा कर्मना	१६०
य	
यह देह मलीन और नाशमान	१५७
र	
राधास्वामी दाता दयाल हैं	१६०
राधास्वामी दाता दीनदयाला	१३८
राधास्वामी दीनदयाल सुने हैं	१६३
राधास्वामी नाम सदा सुखदाई	१७०
राधास्वामी सत मत जिसने धारा	१४१
रुनभुन रुनभुन हुइ धुन घट में	८६
ल	
लगे हैं सतगुरु मुझे पियारे	११
स	
सखी री घर जाऊँगी सतगुरु	१६६
सखी री घर जाने दे मोहि	१७०
सखी री मैं कैसे बचूँ इस मन से	१६३
सखी री मैं जाऊँगी घर नहि	६६
सतगुरु प्यारी चरन अधारी	१०२
सतगुरु प्यारे ने जगाई मन में	१६८
सतगुरु प्यारे ने बचाई जम से	१६८
सतगुरु प्यारे ने बुझाई जग तपन	१६८
सतगुरु प्यारे ने रचाया जग	१६७
सतगुरु प्यारे ने सुलाये पंच दूत	१६७
सतसँग बिन जिया तरसे	१७०
सरन में लीजिये मेरे राधास्वामी	१६६

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
सुन री सखी मानो कहन मेरी	३४	सुरतिया नींद भरी नित सोवत	१७१
सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी		सुरतिया प्रेम जगाय रही	१७०
आज अचरज	३०	सुरतिया बचन गुरु के जाँच	१७१
सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी		सुरतिया बिगस रही	१७२
आज अद्भुत	३०	सुरतिया बिनती करत रही	१७२
सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी		सुरतिया बिनती धार रही	१७०
आज नइ	३१	सुरतिया भाव सहित आई	१०६
सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी		सुरतिया मगन हुई घट शब्द	१२२
आज प्रेम	३३	सुरतिया वार रही तन मन	११३
सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी		सुरतिया वाह वाह करती	१७१
मोहि प्यार	३२	सुरतिया सिमट गई गुरु दर्शन	१०८
सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी		सुरतिया सुनत रही नित	१०६
मोहि मेहर	३३	सुरतिया सोच करत कस जाऊँ	११६
सुन री सखी रात प्यारे	१६६	सुरतिया हरष रही निरखत	११५
सुरत निज घर बिसरानी हो	८४	सुरतिया हरष रही मन माहिँ	१७१
सुरत पियारी शब्द अधारी	१४६	सुरतिया हैरत रूप भई गुरु	१७१
सुरत प्यारी गुरु सन्मुख आई	१५१	सुरतिया हँस हँस गावत निज	१७१
सुरत प्यारी बँध गई हो	८३	संत में यार परघट है	१६३
सुरत रँगिली सतगुरु प्यारी	१५०	स्वामी प्यारे अब ही मेहर	१६७
सुरत शिरोमन फाग रचाया	१६७	स्वामी प्यारे अब ही लेव सुधारी	१६७
सुरतिया अचरज करत रही	११०	स्वामी प्यारे क्यों नहिँ सुनो	१६७
सुरतिया उमँग उमँग गुरु आरत	१०६		
सुरतिया उमँग भरी होली खेलत	१२२	ह	
सुरतिया करत रही गुरु दर्शन	११०	हे मन भोगी सदा के रोगी	६७
सुरतिया खिलत रही देख गुरु	११२	हे मन मानी सद अज्ञानी	६७
सुरतिया खेलत बाल समान	१०४	हे मन रसिया काया के बसिया	६५
सुरतिया घट में आनँद पाय	१०७	हे मेरे मित्रा मनुआँ क्यों न चले	६४
सुरतिया घट में धावत निज	१७१	हे मेरे समर्थ साईँ निज रूप	६८
सुरतिया झुरत रही मन माहिँ	१७१	हेरी तुम कैसी हो री जग बिच भर	४५
सुरतिया धार बसंती रंग	१७२	हेरी तुम कैसी हो री जग बिच भूलन	४६
सुरतिया धार बहाय रही	१७१	हेरी तुम कौन हो री मोहि अटका	४४
सुरतिया धूम मचाय रही	१०४	हेरी तुम कौन हो री मोहि भरमा	४७
सुरतिया ध्याय रही गुरु रूप	११८	होली खेले रँगिली नार	१५४

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

प्रेमबानी

चौथा भाग



वचन २०—ग़ज़ल व मसनवी

भाग पहला

॥ ग़ज़ल १ ॥

आज सतगुरु की सरन
भाग^१ से मैंने पाई ।
शब्द धुन बाज रही
चाँदनी घट में छाई ॥ १ ॥
कर्म और धर्म भरम
जान के^२ सब छोड़ दिये ।
टेक पिछलों की तजी
प्रेम गुरु में लाई ॥ २ ॥

सुन के सतगुरु के बचन
 पिया अमी^१ रस सारा ।
 बैठ सतसंग में
 परतीत हिये में आई ॥ ३ ॥
 गुरु से ले शब्द का
 उपदेश किया अभ्यासा ।
 घंटा और संख सुने
 जोत लखी^२ नभ^३ जाई ॥ ४ ॥
 आगे चढ़ करके सुनी
 तिरकुटी में धुन मिरदंग ।
 सुन में हंसन से मिली
 रागनी^४ नइ नइ गाई ॥ ५ ॥
 संग सतगुरु के चली
 जाय मिली सोहँग से ।
 सतपुरुष मेहर करी
 बीन की धुन सुनवाई ॥ ६ ॥
 लख अलख आगे
 अगमलोक का निरखानूरा^५ ।
 राधास्वामी का दरश पाय
 चरन में धाई ॥ ७ ॥

॥ गज़ल २ ॥

आज सतगुरु के चरन में
 तू लगा ले नेहरा^१ ॥ टेक ॥
 शीक के साथ करो
 चेत के सतसँग उनका ।
 मेहर से उनके तेरा
 छूटे चौरासी फेरा^२ ॥ १ ॥
 चूके मत प्यारी कहन
 मान ले हितकर^३ मेरी ।
 माया और काल ने याँ^४
 डाला है भारी घेरा^५ ॥ २ ॥
 शब्द उपदेश गुरू से ले
 कमाओ निस दिन ।
 चालो घर की तरफ़
 अब छोड़ के मेरा तेरा ॥ ३ ॥
 राधास्वामी की सरन
 धार ले दूढ़ कर मन में ।
 वे करें मेहर तेरा
 पार लगावें बेड़ा ॥ ४ ॥

॥ गज़ल ३ ॥

आज मम^१ भाग जगे
 गुरु सतसँग आय मिली ॥ टेक ॥
 सुनके सतगुरु के बचन
 हो गई मैं आज निहाल ।
 संग में प्रेमी जनों के
 मैं मगन होय रली^२ ॥ १ ॥
 भेद सतगुरु ने दिया
 ऊँचे से ऊँचे देशा ।
 और मत जितने हैं
 उनका रहा सिद्धान्त^३ तली^४ ॥ २ ॥
 शब्द घट घट में रहा बोल
 सुनो दिन और रात ।
 भाग बड़ वह है जो
 सुनता है उसे चित से अली^५ ॥ ३ ॥
 ध्यान गुरु आज सम्हालो
 सुनो धुन को घट में ।
 श्याम द्वारे^६ के परे नभ में
 लखो जोत बली^७ ॥ ४ ॥

१—मेरे । २—मिल गई । ३—लक्ष्य स्थान । ४—नीचे । ५—सखी ।

६—श्याम द्वारे—तीसरे तिल । ७—जलती हुई ।

तिरकुटी जाय मिला
 अद्भुत दर्शन गुरु का ।
 माया और काल की ताक़त
 यहाँ सब आज गली^१ ॥ ५ ॥
 सुन्न के पार भँवर में
 गई सूरत चढ़ कर ।
 मुरली और बीन सुनी
 सत्तपुरुष पास पली^२ ॥ ६ ॥
 गुरु से ले भेद चली
 आगे की सूरत प्यारी ।
 राधास्वामी का दरश पाय के
 धुर धाम वली^३ ॥ ७ ॥

॥ गज़ल ४ ॥

आज प्यारी तू समझ सोच के
 कर काम अपना ॥ टेक ॥
 क्यों पचो^४ दुनिया में
 यह देश तुम्हारा नहीं ।
 मिलके सतगुरु से करो
 खोज भला धाम अपना ॥ १ ॥

तेरा हितकारी नहीं
 दुनिया में गुरू सम कोई ।
 वे जतावेंगे तुम्हें मेहर से
 निज नाम अपना ॥ २ ॥

शब्द का भेद जुगत
 देवेंगे सतगुरू तुमको ।
 नेम^१ से करना तुम अभ्यास
 सुबह शाम अपना ॥ ३ ॥

राधास्वामी की सरन
 धार के चलना घर को ।
 उनके चरन अंबु^२ से तुम
 नित भरों जाम^३ अपना ॥ ४ ॥

॥ गज़ल ५ ॥

आज आनंद रहा
 मौज से चहुँ दिस छाई ।
 राधास्वामी की रहे
 सब मिल महिमा गाई ॥ १ ॥

मेहर से गुरू के मिला
 ऐसा सुहावन संजोग^४ ।

१—नियम पूर्वक यानी हर रोज़ । २—जल । चरन अंबु—चरणामृत ।

३—प्याला । ४—मौक़ा ।

खुश हुए देख के यह
 औसर सज्जन भाई ॥ २ ॥
 शादियाने^१ के लगे बाजे
 चहूँ दिस बजने ।
 राग और रागनी सुर^२ संग
 उमँग कर गाई ॥ ३ ॥
 हर तरफ़ नारे^३ खुशी के
 लगे करने गुंजार ।
 अर्श^४ ने गरज गरज
 बूँद अमी बरसाई ॥ ४ ॥
 उमँग उमँग हर कोई
 देता है मुबारकबादी^५ ।
 राधास्वामी रहें निज मेहर से
 नित प्रति सहाई ॥ ५ ॥

॥ गज़ल ६ ॥

आज हंगामये शादी का गरम
 हो रहा^६ देखो हर जा^७ ।
 राधास्वामी की दया का
 करो सब शुक्र अदा^८ ॥ १ ॥

१—खुशी । २—धुन । ३—आवाज़ें । ४—आकाश । ५—बधाई । ६—
 हंगामये... हो रहा—शादी की धूमधाम हो रही है । ७—हर जा—सब जगह ।
 ८—करो अदा—करो ।

हंस और हंसिनी खुश होके

बधाई देते ।

अर्श^१ से भी चली आती है

खुशी की यह सदा^२ ॥ २ ॥

राधास्वामी की दया से

यह मुबारक जोड़ा ।

खुश रहे याद में चरनों के

करे मन को फ़िदा^३ ॥ ३ ॥

॥ ग़ज़ल ७ ॥

आज गुरु प्यारे के चरनों में झलकती है

अजब मेंहदी की लाली ॥ टेक ॥

देखो गुरु प्यारे के चरनों में

अजब मेंहदी की लाली ।

हाथ भी सुख हैं और मुखड़े की

छबि देखी निराली ॥ १ ॥

हार और फूल लिये आती हैं

सखियाँ घर से ।

मेंहदी हाथों में लगाती हैं

सरब सूरत वाली^४ ॥ २ ॥

१—आकाश । २—आवाज़ । ३—निष्ठावर । ४—सरब सूरत वाली—

लाल रँग छाया रहा गुरु के
महल में चहुँ दिस ।

देख परकाश तले^१ रह गई
माया काली ॥ ३ ॥

सुर्त बन्नी का मिला भाग के
गुरु बन्ने से जोड़ा ।

राधास्वामी की दया पाय के
निज घर चाली ॥ ४ ॥

॥ गजल ८ ॥

आज धुन अनहद बाज रही है ।

अधर चढ़ सूरत गाज^२ रही है ॥ १ ॥

देख घट जगमग जोत उजार^३ ।

मगन होय भाग सराह रही है ॥ २ ॥

सुनत धुन गगना ओअंकार ।

रूप गुरु अद्भुत निरख रही है ॥ ३ ॥

सुन्न में खिली चाँदनी सार ।

ररँग धुन अक्षर गाज रही है ॥ ४ ॥

बाँसरी बीन की परखत^४ धार ।

दरश राधास्वामी भाँक रही है ॥ ५ ॥

१—नीचे । २—गरज । ३—प्रकाश । ४—पहचानती ।

॥ गज़ल ट ॥

न जग में चैन और न स्वर्ग सुख है।

न ब्रह्म पद में अमर^१ अनंदा ॥

जहाँ तलक^२ हैगा माया घेरा ।

वहाँ तलक हैगा जम का फंदा ॥ १ ॥

पड़े भटकते हैं जग में सारे ।

पदारथ और इंद्रियों के मारे ॥

वहाँ से अब उनको कौन उबारे ।

हुआ है अति करके जीव गंदा ॥ २ ॥

पुरानी टेकों में अटक रहे हैं ।

करम धरम में भटक रहे हैं ॥

सुरत शब्द की जुगत न मानें ।

हुआ है सारा ही जगत अंधा ॥ ३ ॥

मिलें न जब लग गुरू पियारे ।

छुटें न मन के बिकार^३ भारे ॥

न सुर्त चीन्हे न शब्द सम्हारे ।

रहे हैं बंधन में जीव बंधा ॥ ४ ॥

बिरह जगा गुरू चरन में धाओ ।

कर उनका सतसंग धर के भाओ^४ ॥

उलट के धुन में सुरत लगाओ ।

पिंड का चढ़ के नाका^१ खंडा^२ ॥ ५ ॥

गुरू मेहर से सुरत चढ़ावें ।

सुन्न की धुन आजब सुनावें ॥

करम का लेखा^३ तेरा चुकावें ।

लखावें निज घट की तोहि संधा^४ ॥ ६ ॥

वहाँ से भी फिर अधर चढ़ावें ।

अलख अगम सत^५ की धुन सुनावें ॥

पियारे राधास्वामी से मिलावें ।

दिलावें भक्ती का तुझको भंडा ॥ ७ ॥

॥ गज़ल १० ॥

लगे हैं सतगुरू मुझे पियारे ।

कर उनका सतसंग शब्द धारे ॥

छुटे हैं मन के बिकार सारे ।

कहूँ मैं कैसे गुरू की गतियाँ ॥ १ ॥

सुरत शब्द में लगाऊँ दमदम^६ ।

सुनूँ मगन होय धुनों की भ्रमभ्रम^७ ॥

होत सब दूर मन की हमहम^८ ।

सुने कौन ऐसी घट में बतियाँ ॥ २ ॥

१—किलेबंदी । २—तोड़ो । ३—कर्र्जा, हिसाब । ४—संध, मार्ग । ५—सत्तलोक । ६—हर वक्त, बार बार । ७—गूँज । ८—अहंकार ।

बढ़तपिरेम और पिरीत दिन दिन ।
 होत मन से सुरत भिन भिन^१ ॥
 गावतीगुरु की महिमा छिन छिन ।
 रहत नित गुरु चरन में रतियाँ^२ ॥ ३ ॥
 जगत के जीव हैं अभागी सारे ।
 फिरें हैं मन इंद्रियों के मारे ॥
 जाल से उनको को निकारे ।
 सुनें न चित देके संत मतियाँ^३ ॥ ४ ॥
 जगा है मेरा अपार भागा ।
 चरन में राधास्वामी आन लागा ॥
 गायें सब जीव माया रागा^४ ।
 रहे हैं थक मग^५ में जोगी जतियाँ^६ ॥ ५ ॥

॥ गज़ल ११ ॥

मन की मत मान के पछताओगे ।
 नज़रे मेहर से गिर जाओगे ॥ १ ॥
 भूलो मत दुनिया में रहना हुशियार ।
 काल के द्वारे पे टकराओगे ॥ २ ॥
 करनी का अपने क्या दोगे जवाब ।
 धर्म^७ के सामने चकराओगे ॥ ३ ॥

१—अलहदा । २—लीन । ३—मजहब । ४—गीत । ५—रास्ते । ६—जोगी
 जतियाँ—योगी और यती यानी साधन करने वाले । ७—धर्मराय, यमराज ।

पकड़ो सतगुरु के चरन जल्दी से ।

रक्षा हो जावेगी जो उनकी सरन आओगे।
जो न मानोगे बचन काल करेगा सख्ती ।

देख जमदूतों को घबराओगे ॥ ५ ॥
सख्त दुख भोगोगे चौरासी में ।

दामन अपना जो कहीं माया को पकड़ाओगे
राधास्वामी का सुमिर नाम हिये से अपने ।

छिन में सब दुखों से बच जाओगे ॥ ७ ॥

॥ गज़ल १२ ॥

जुड़ मिल के हंस सारे, दर्शन को गुरु के आये।

बंगला अजब बनाया, सोभा कही न जाये। १।

जब आरती सँवारी, हुई धूम धाम भारी ।

निज भाग सब सरावत, ओसर अधिक सुहाये
सब मिल के शब्द गावत, भर भर पिरेम लावत ।

नइ २ उमँग जगावत, चहुँदिस हरष समाये ३
घंटा और सुख गाजें, मिरदंग ढोल बाजें ।

सारँग सितार बीना, धुन बाँसुरी जगाये । ४।
हुये गुरु दयाल परसन, सब को लगाया चरनन ।

वारत रहे हैं तन मन, राधास्वामी ओट आये

भाग २

॥ मसनवी १ ॥

करूँ संतमत का मैं थोड़ा बयाँ^१ ।

वही सत्त मत हैगा अंदर जहाँ^२ ॥ १ ॥

उसी को कहें राधास्वामी पंथ सार ।

होवे जिस्से जीवों का सच्चा उधार ॥ २ ॥

परे सबके है कुल मालिक का धाम ।

परम पुर्ष राधास्वामी है उनका नाम ॥ ३ ॥

यही नाम ज़ाती^३ है असली निदा^४ ।

होत जिसकी धुन घट में सबके सदा^५ ॥ ४ ॥

जो गावेगा यह नाम धर करके प्यार ।

उसी जीव का होगा सच्चा उधार ॥ ५ ॥

मगर भेद भी जानना है जरूर ।

बिना भेद कारज न होवेगा पूर^६ ॥ ६ ॥

उठी स्वामी चरनों से इक आदि धार ।

वही कुल रचना की करतार^७ यार^८ ॥ ७ ॥

उसी आदि धारा का राधा है नाम ।

उसी से सरे^९ सबके कारज तमाम ॥ ८ ॥

१—वर्णन । २—संसार । ३—असली, कुल मालिक का । ४—शब्द ।

५—हमेशा । ६—पूरा । ७—कर्ता, रचने वाली । ८—हे मित्र । ९—बनते हैं ।

जहाँ से वह धारा निकस्ती^१ भई ।
 वही आदि स्वामी है सबका सही ॥ ८ ॥
 उतर कर के वह धार ठहरी जहाँ ।
 अगम लोक की हुई रचना वहाँ ॥ १० ॥
 अगम लोक का भारी मंडल बँधा ।
 वही कुल्ल रचना का घेरा^२ हुआ ॥ ११ ॥
 हुई जिस कदर उसके रचना तले ।
 वह इक गोशे^३ में उसके निस दिन पले ॥ १२ ॥
 अगम की हुई जब कि रचना तमाम ।
 उठी वहाँ से फिर इक धारा अगाम^४ ॥ १३ ॥
 उतर करके नीचे किया बास आय ।
 अलख लोक की वहाँ रचना रचाय ॥ १४ ॥
 बँधा उसका मंडल बदस्तूर आय ।
 वहाँ से उतर धार सतपुर रचाय ॥ १५ ॥
 हुआ सतपुरुष का वह सतलोक धाम ।
 हुई गिर्द^५ हंसों की रचना तमाम ॥ १६ ॥
 जुदे दीप हंसों के पैदा किये ।
 पुरुष का दरश कर मगन सब हुए ॥ १७ ॥
 हुआ सत्त रचना का यहाँ तक ज़हूर^६ ।
 नहीं जहाँ माया नहीं काल कूर^७ ॥ १८ ॥

१—निकलती । २—मुह्यीत । ३—कोने । ४—आगे को चलने वाली । ५—
 चारों तरफ । ६—प्रकाश । ७—कठोर ।

नहीं कोई आसा नहीं कोई कार^१ ।

दरश पुर्ष का और अमी का अहार ॥१८॥
करें मिल के सब ऐश^२ आनंद सार ।

नहीं काल कष्ट और नहीं कर्म भार^३ ॥२०॥
बहुत काल तक ऐसी रचना रही ।

वही देश सत्त और आनंदमई ॥२१॥
उठी नीचे सतपुर से इक श्याम धार ।

उतर कर किया उसने बहुतक पसार ॥२२॥
पुरुष सेव वह नित करती रही ।

वले^४ मन में कुछ चाह धरती रही ॥२३॥
किया उसने इस तरह इज़हार हाल ।

कि हे सतपुरुष मेरे दाता दयाल ॥२४॥
जुदे देश में राज दीजे मुझे ।

सुरत अंस का बीज दीजे मुझे ॥२५॥
मुझे यहाँ का रहना सुहाता नहीं ।

तुम्हारा मुझे देश भाता^५ नहीं ॥२६॥
यह सुनकर दिया पुर्ष ने अस जवाब ।

निकल जाओ तू यहाँ से खाना खराब^६ ॥२७॥
तले^७ देश में जाके रचना करो ।

वहाँ बैठ कर राज अपना करो ॥२८॥

१—काम । २—विलास । ३—बोझ । ४—पर । ५—अच्छा लगता । ६—
खाना खराब—घर को बरबाद करने वाली । ७—नीचे ।

निरंजन हुआ नाम उस धार का ।

हुआ काल का अंग उस धार का ॥२८॥

पुरुष ने लई दूसरी धार उपाय^१ ।

हुआ पीत^२ रँग आद्या नाम ताय^३ ॥३०॥

हुकम से यह धारा उतारी गई ।

निरंजन के सँग जाय मिलती भई ॥३१॥

हुए सुन में पुर्ष और परकिर्त^४ यह ।

हुए माया और ब्रह्म त्रिकुटी में यह ॥३२॥

सहसदलकँवल जाय कीन्हा निवास ।

हुआ तीन गुन का यहाँ से उजास^५ ॥३३॥

धारा आद्या ने यहाँ जोत रूप ।

निरंजन ने धारा शियामी सरूप ॥३४॥

प्रथम ब्रह्म सृष्टी इन्होंने करी ।

हुई फिर त्रिलोकी की रचना खड़ी ॥३५॥

निरंजन ने धारा पुरुष का धियान ।

हुई सारी रचना की जोती प्रधान^६ ॥३६॥

हुए तीन गुन उसके नायब^७ यहाँ ।

हुई उनसे फिर सारी रचना अयाँ^८ ॥३७॥

१—लई उपाय—उत्पन्न कर ली । २—पीला । ३—उसका । ४—प्रकृति ।

५—जहूर । ६—मुख्य शक्ति । ७—कारपरदाज । ८—प्रकट ।

॥ मसनवी २ ॥

करूँ पहिले महिमा गुरू की बयान ।

किया जिसने रहमत^१ से पैदा जहान^२ ॥१॥

परम गुरू परम पुर्ष राधास्वामी नाम ।

अजब हैरतो हैरत^३ है उनका धाम ॥२॥

लिया मुझको चरनों में अपने लगा ।

सुरत शब्द मारग का दीन्हा पता ॥३॥

दया से जो संजोग पैदा किया ।

मेहर का रहे हाथ उस सँग लगा ॥४॥

जपूँ चित्त से नित राधास्वामी नाम ।

पाऊँ मेहर से एक दिन आदि धाम ॥५॥

॥ मसनवी ३ ॥

अहो मेरे सतगुरू अहो मेरी जान ।

अहो मेरे प्यारे अहो मेरे प्रान ॥ १ ॥

नज़र मेहर की मुझ पे अब कीजिये ।

मुझे अबके जम^४ से छुड़ा लीजिये ॥ २ ॥

निकालो मुझे काल के जाल से ।

बचा लेव माया के जंजाल से ॥ ३ ॥

तड़पता हूँ दर्शन को दिन रात मैं ।

सहूँ दुख मन इंदरी साथ मैं ॥ ४ ॥

जगत भोग देवें भुकोले सदा ।

पंच दूत फोड़ें फफोले^१ जुदा ॥ ५ ॥

बिना दर्श तुम्हरे बने कैसे काम ।

मेहर बिन करे कौन मेरी सहाम^२ ॥ ६ ॥

सुनो बीनती मेरी दाता दयाल ।

दरश दे करो आज मुझको निहाल^३ ॥ ७ ॥

जो चाहो करो मुझ पे छिन में दया ।

नहीं कुछ कठिन तुम्हरे आगे मया^४ ॥ ८ ॥

मेरे वास्ते अब हुए क्यों कठोर ।

मैं कुरबान जाऊँ तुम पे हे बंदी छोड़ ॥ ९ ॥

सदा से तुम्हारा दयालू है नाम ।

करो क्यों नहीं मेरा अब पूरा काम ॥ १० ॥

चरन में कछूँ बीनती बार बार ।

सुनो हे दयाल मेरी जल्दी पुकार ॥ ११ ॥

दरश देके सूरत चढ़ा दीजिये ।

मुझे रस भरी धुन सुना दीजिये ॥ १२ ॥

मिटानो मेरे अब सभी दुख साल^५ ।

करो मुझको निरभय हे दाता दयाल ॥ १३ ॥

सरन में पड़ा तुम्हरे दुनिया से भाज^६ ।

मेरे काज की अब है तुम ही को लाज ॥ १४ ॥

१—फोड़ें फफोले—दुश्मनी निकालते हैं । २—सहायता । ३—सरशार ।

४—कृपा । ५—कष्ट । ६—भाग कर ।

तुम्हारा ही हूँ जैसा तैसा कपूत^१ ।

बना लीजिये मुझको अपना सपूत ॥१५॥

सरापा^२ भरा हूँगा मैं खोट^३ से ।

बचाओ मुझे अपनी अब ओट^४ दे ॥१६॥

करो राधास्वामी मेहरकी निगाह^५ ।

लेवो मुझको अब जैसे तैसे निबाह ॥१७॥

बिना तुम चरन कोइ दीखे न ठौर ।

बिना तुम सहाई नहीं कोइ और ॥१८॥

मैं बालक पड़ा हूँ तुम्हारी सरन ।

सम्हालो दिखाओ मुझे निज चरन ॥१९॥

बिरह में रहूँ मैं तपत रात दिन ।

दरश बिन नहीं चैन मोहि एक खिन^६ ॥२०॥

गुनाहों से अपने मैं शर्मिदा हूँ ।

छिमा कर छिमा मैं तेरा बंदा हूँ ॥२१॥

नहीं बनते मुझ से जो पाप और कसूर ।

छिमा की तेरी होती फिर क्या ज़रूर ॥२२॥

मैं नालायक हूँ इसमें कुछ शक नहीं ।

दया जो करें प्यारे अचरज नहीं ॥२३॥

कसूरों को बख़्शो मेरे हे दयाल ।

गरीबी पे मेरे धरो अब खयाल ॥२४॥

१—बुरा लड़का । २—सर से पैर तक, भरपूर । ३—दोषों । ४—शरण ।

५—दृष्टि । ६—क्षण ।

दया के भरोसे बने सब क़सूर ।

मेहर से देओ बरुश आली^१ हज़ूर ॥२५॥

मैं तुम्हरा हूँ और तुम हो मेरे सही ।

पिता पुत्र का नाता^२ पूरा चही ॥२६॥

पिता तुम हो और मैं हूँ बालक समान ।

करो मेहर दीन और निबल मोहि जान ॥२७॥

लगाया जिसे तुमने चरनों के साथ ।

सम्हाला उसे मेहर से देके हाथ ॥२८॥

करो जब कि तुम निन्दकों का उधार ।

मुझे कैसे छोड़ेगे अब नौ^३ के वार^४ ॥२९॥

मेहर माँगूँ फिर मेहर माँगूँ दयार ।

लेवो प्यारे राधास्वामी जल्दी उबार ॥३०॥

वचन २१—भाग पहला

॥ शब्द १ ॥

आज सतसँग गुरु का कीजे ।

दीखे घट बिमल बिलासा ॥टेका॥

यह जगत जाल दुखदाई ।

क्यों या में बैस^५ बिताई ॥

ले सतगुरु की सरनाई ।

धर राधास्वामी चरनन आसा ॥१॥

गुरु बचन चित्त में धरना ।

सुत शब्द कमाई करना ॥

मन माया से नित लड़ना ।

तब देखे अजब तमाशा ॥ २ ॥

गुरु चरनन प्रीति बढ़ाना ।

मन सूरत अधर चढ़ाना ॥

राधास्वामी सरन समाना ।

तब पावे निज घर बासा ॥ ३ ॥

गुरु दया संग ले भाई ।

गगना में पहुँची धाई ॥

फिर सत्तनाम पद पाई ।

किया राधास्वामी चरन निवासा । ४ ।

॥ शब्द २ ॥

आज मेघा रिझिम बरसे ।

हिये पिया की पीर सतावे ॥ टेक ॥

पिया छाय रहे परदेसा ।

मैं पड़ी काल के देसा ॥

मोहि निस दिन यही रे अँदेसा^१ ।

कोइ पिया से आन मिलावे ॥ १ ॥

पपिहा जब पिउ पिउ गावे ।
 मोहि पिया प्यारे की याद आवे ॥
 बिरह अगिन भड़क भड़कावे ।
 पिया बिन को तपन बुझावे ॥ २ ॥
 सतगुरु हितकारी मिलिया ।
 उन पिया का सँदेसा कहिया ॥
 मारग का भेद सुनइया ।
 सुत धुन सँग अधर चढ़ावे ॥ ३ ॥
 मोहि दीन अधीन निहारा ।
 गुरु कीन्ही मेहर अपारा ॥
 मोहि भौजल पार उतारा ।
 सुत चढ़ चढ़ अधिक हरषावे ॥ ४ ॥
 धुन सुन सुत अधर सिधारी ।
 सत अलख अगम्भ लखारी ॥
 पिया राधास्वामी रूप निहारी ।
 उन महिमा छिन छिन गावे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

आज गरज गरज घन गरजे ।
 मेरा जियरा सुन सुन लरजे ॥ टेक ॥
 प्रियाम घटा रही छाई ।
 अमी धार की बरषा लाई ॥

दामिन^१ की दमक^२ सुहाई ।
 मेरा पिया बिन मनुआँ तरसे ॥ १ ॥
 सतगुरु पिया भेद बतावें ।
 गैल^३ चलन की जुगत लखावें ॥
 उनसे नित प्रीति बढ़ावें ।
 तब पिया प्यारे का पद दरसे ॥ २ ॥
 मैं पिय की पीर दिवानी^४ ।
 मारग की पाय निशानी^५ ॥
 तन मन धन कर कुरबानी ।
 गुरु चरन गगन जाय परसे^६ ॥ ३ ॥
 वहाँ से भी चली अगाड़ी ।
 सतपुर सतरूप निहारी ॥
 गइ अलख अगम के पारी ।
 राधास्वामी दरश पाय हरषे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

मेरे तपन उठत हिय भारी ।
 गुरु प्रेम की बरषा कीजे ॥ टेक ॥
 बिरह अग्नि सुलगत नित घट में ।
 कस निरखूँ छबि तिल पट^७ में ॥

१—बिजली । २—चमक । ३—रास्ता । ४—पीर दिवानी—पीड़ा से पागल ।

५—पता । ६—स्पर्श किए । ७—परदे ।

मेरी उमर गई खटपट^१ में ।
 अब तो गुरु दरशन दीजे ॥ १ ॥
 बिन दरशन जिय घबरावे ।
 जग भोग नहीं अब भावे^२ ॥
 कोइ बात न मोहि सुहावे ।
 अस^३ काया^४ छिन छिन छीजे ॥ २ ॥
 गुरु मेहर करो अब भारी ।
 देव चरनन प्रीति करारी^५ ॥
 तुम दरशन नित निहारी ।
 तब सुरत प्रेम रँग भीजे ॥ ३ ॥
 तुम राधास्वामी समरथ दाता ।
 मुझको भी करो सनाथा^६ ॥
 तुम चरन रहूँ रस राता^७ ।
 मेरी सुरत सरन में लीजे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

क्यों जग में रहे भरमानी ।
 मिल गुरु से घर को चलना ॥ टेका^८ ॥
 यह देश बिगाना^९ भाई ।
 नित तिमिर^{१०} रहे यहाँ छाई ॥

१—बखेड़ों । २—अच्छा लगता । ३—इस तरह । ४—शरीर । ५—तेज ।

६—करो सनाथा—शरण में लीजिये । ७—लीन । ८—पराया । ९—अंधेरा ।

और काल करम भरमाई ।

भोगन सँग छिन छिन गलना^१ ॥ १ ॥

सतसँग का देख बिलासा ।

गुरु चरनन धर बिश्वासा ॥

निज घर की धारो आसा ।

जग भाठी^२ में नहि जलना ॥ २ ॥

गुरु प्रेम हिये में धारो ।

जग आसा दूर निकारो ॥

दूतन^३ को मार पछाड़ो ।

मन माया छिन छिन दलना^४ ॥ ३ ॥

सुत शब्द जुगत ले सारा ।

गुरु नाम करो आधार ॥

करमों का काटो जारा^५ ।

धुन सुन सुन घट में चढ़ना ॥ ४ ॥

त्रिकुटी का देख उजेरा ।

सतपुर जाय कीन्हा फेरा ॥

कर अलख अगम से नेहरा^६ ।

फिर राधास्वामी से जाय मिलना ॥ ५ ॥

१—नाश होना । २—भट्टी । ३—काम, क्रोध इत्यादि । ४—जेर करना ।

५—जाल । ६—प्रेम ।

॥ शब्द ई ॥

क्यों सोच करे मन मूरख ।

प्यारे राधास्वामी हैं रखवारे ॥ टेक ॥

जब जनमा तब दूध दियो तोहि ।

माता गोद पलाया ॥

सर्व भाँति तेरी रक्षा कीन्ही ।

चरनन मेल मिलाया ॥

रहा था फँस नौ द्वारे ॥ १ ॥

सर्व भोग इंद्रिन के दीन्हे ।

जगत तमाशा दिखाया ॥

खेंच लिया सतसँग में फिर तोहि ।

निज घर भेद सुनाया ॥

मेहर से खोल चलो दस द्वारे ॥ २ ॥

बचन सुना तेरी समझ बढ़ावें ।

मन की निरख^१ करावें ।

करम भरम और टेक छुड़ाकर ।

शब्द में सुरत लगावें ॥

अधर चढ़ देख बहारे^२ ॥ ३ ॥

घंटा संख सुनावें नभपुर ।
 त्रिकुटी लख गुरु नूरा^१ ॥
 चंद्र चाँदनी चौक निहारो ।
 गुफा परे पद पूरा ॥
 आरती^२ सतगुरु धारे ॥ ४ ॥
 ले दुरबीन पुरुष से प्यारी ।
 अलख अगम को चाली ॥
 तिस पर राधास्वामी धाम अपारा ।
 लख लख हुई निहाली ॥
 सीस उन चरनन डारे ॥ ५ ॥
 ॥ शब्द ७ ॥

क्यों अटक रही जग प्यारी ।
 यामें दुख भोगे भारी ॥ टेक ॥
 कोई यहाँ तेरा संग न साथी ।
 स्वारथ सँग सब मिल रहते ॥
 क्यों धोखा खाओ इन में ।
 क्यों भोगन सँग नित बहते ॥
 जम दंड सहो सरकारी ॥ १ ॥

१—प्रकाश । २—थाल में जलता हुआ दीपक लेकर इष्टदेव के सन्मुख घुमाने की क्रिया को 'आरती' या 'आरत' कहते हैं । सतसंग में सतगुरु से दृष्टि जोड़ कर ध्यान करने के साधन के लिए और चित्त को सब ओर से हटा कर सतगुरु के चरणों में लगाने या उनसे प्रेम करने के लिए या उनकी अनन्य भक्ति करने के लिए भी 'आरती' शब्द का प्रयोग करते हैं । 'आरती' के समय पढ़े जाने वाले शब्द को भी 'आरती' कहते हैं ।

सतसँग में मेल मिलाना ।
 गुरु चरनन भाव^१ बढ़ाना ॥
 सुन सुन निज वचन कमाना ।
 घट में गुरु रूप धियाना ॥
 गुरुभक्ती रीत सम्हारी ॥ २ ॥
 स्तुत शब्द जुगत ले गुरु से ।
 नित नेम से कर अभ्यासा ॥
 मन इंद्री सुरत समेटो ।
 फिर घट में देख बिलासा ॥
 ले गुरु की मेहर करारी^२ ॥ ३ ॥
 गुरु करम भरम सब टारें ।
 मन के करें दूर बिकारा^३ ॥
 सब पिछली टेक निकारें ।
 दरसावें फिर घर न्यारा^४ ॥
 लख उनकी गत मत न्यारी ॥ ४ ॥
 राधास्वामी सरन सम्हारो ।
 गुरु के सँग अधर सिधारो ।
 लख जोत सूर और चंदा ।
 सत अलख अगम को धारो ॥
 हुई राधास्वामी चरन दुलारी^५ ॥ ५ ॥

॥ भाग २ ॥

॥ शब्द १ ॥

सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी।

आज अचरज बचन सुनाय रहे री। टेका
सुन सुन बानी सब हुए हैं दिवाने।

तन मन सुध बिसराय रहे री ॥ १ ॥

मेहर दया की बरषा भारी।

प्रेम के बदरा^१ छाये रहे री ॥ २ ॥

धुन भनकार सुनत घट अंतर।

नइ नइ उमँग जगाय रहे री ॥ ३ ॥

सेवा कर हिये होत हुलासा^२।

तन मन वार धराय रहे री ॥ ४ ॥

राधास्वामी पर जावें बलिहारी।

जुड़ मिल उन गुन गाय रहे री ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी।

आज अद्भुत दरश दिखाय रहे री ॥ टेका ॥
दर्शन कर मोहे^३ नर नारी।

छबि पर दूष्टि तनाय^४ रहे री ॥ १ ॥

क्या कहूँ महिमा अचरज रूपा ।

बहु सूर चंद शरमाय रहे री ॥ २ ॥

जिन जिन दरश करा मेरे गुरु का ।

सोइ निज भाग जगाय रहे री ॥ ३ ॥

जगत जीव क्या जानें महिमा ।

सब करम धरम भरमाय रहे री ॥ ४ ॥

आओ रे आओ जीव सरनी आओ ।

राधास्वामी मेहर कराय रहे री ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी ।

आज नइ धुन घट में सुनाय रहे री । टेका

सुन सुन धुन सुत हुइ मतवाली ।

काल करम सुरभाय रहे री ॥ १ ॥

मन और सुत दोऊ रस पावत ।

गगन और अब धाय रहे री ॥ २ ॥

हंसन संग करत नित केला^१ ।

मानसरोवर न्हाय रहे री ॥ ३ ॥

अधर जाय सुत मिली भक्तन से ।

भँवरगुफा ढिग छाया रहे^२ री ॥ ४ ॥

धुन सुन गई जहँ राधास्वामी प्यारे ।

अचरज दरश दिखाय रहे री ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी ।

मोहि प्यार से गोद बिठाय रहे री । टेका
में तो नीच अधम नाकारा^१ ।

मेहर से मोहि अपनाय रहे री ॥ १ ॥

सतसँग में मोहि खेंच लगाया ।

भक्ती रीति सिखाय रहे री ॥ २ ॥

बल अपना दे सेव^२ कराई ।

छिन छिन रक्षा कराय रहे री ॥ ३ ॥

शब्द भेद दे जुगत बताई ।

घट में सुरत चढ़ाय रहे री ॥ ४ ॥

क्योंकर कहूँ शुकुराना उनका ।

(मेरे) रोम रोम गुन गाय रहे री ॥ ५ ॥

चरन ओट^३ दे जीव बचावें ।

काल और करम लजाय रहे री ॥ ६ ॥

जो कोइ चरन सरन में आये ।

सबका काज^४ बनाय रहे री ॥ ७ ॥

जीव निबल क्या करे बिचारा ।

अपनी दया से निभाय रहे री ॥ ८ ॥

परम गुरु समरथ राधास्वामी ।

सब पर मेहर कराय रहे री ॥ ९ ॥

॥ शब्द ५ ॥

सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी ।

मोहि मेहर से अँगवा लगाय रहे री।टेक॥

सतसँग कर बाढ़ा बिश्वासा ।

गहरी प्रीति जगाय रहे री ॥ १ ॥

स्वामी चरनन पर जाऊँ बलिहारी ।

मेहर का सब गुन गाय रहे री ॥ २ ॥

शब्द अभ्यास करत मन सूरत ।

गगन ओर नित धाय^१ रहे री ॥ ३ ॥

दया हुई सुत सतपुर आई ।

अलख अगम दरसाय रहे री ॥ ४ ॥

राधास्वामी धाम गई सुत सज के^२ ।

निज महल में संग खिलाय रहे री ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी ।

आज प्रेम रंग बरसाय रहे री ॥ टेक ॥

अनुरागी^१ जन जुड़ मिल आये ।

बहु बिधि बिनती लाय रहे री ॥ १ ॥

प्रेम दान दीजे गुरु प्यारे ।

सब मन में तरसाय रहे री ॥ २ ॥

सुन बिनती प्यारे राधास्वामी दाता ।

घट में सुरत चढ़ाय रहे री ॥ ३ ॥

मगन होय सुन नइ धुन घट में ।

धन धन राधास्वामी गाय रहे री ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

सुन री सखी मानो कहन मेरी ।

चलो गुरु सँग खेलो फाग^२ आज । टेका

मोह नींद में कब लग सोना ।

मिल सतगुरु से जाग आज ॥ १ ॥

सतसँग कर हित^३ चित से उनका ।

तेरा सोता जागे भाग आज ॥ २ ॥

शब्द जुगत ले घट में बैठी ।

सुन ले अनहद राग^४ आज ॥ ३ ॥

दया मेहर ले चढ़ो अधर में ।

मारो काला नाग^५ आज ॥ ४ ॥

सरन धार राधास्वामी मन में ।

माया घर से भाग आज ॥ ५ ॥

मिल हंसन से खेलो होली ।

छोड़ो संगत काग^१ आज ॥ ६ ॥

सत्त अलख और अगम के पारा ।

राधास्वामी चरनन लाग आज ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

चलो री सखी आज गगनपुरी ।

जहँ गुरु प्यारे फाग^२ रचाय रहे री । टेका

गुरु सतसंगी सब मिल खेलें ।

प्रेम का रंग बहाय रहे री ॥ १ ॥

आगे चल देखो सुन नगरी ।

जहँ हंस हंसिनी गाय रहे री ॥ २ ॥

शब्द शोर जहँ मच रहा भारी ।

अमृत धार चुवाय रहे री ॥ ३ ॥

महासुन्न चढ़ भँवरगुफा लख^३ ।

जहँ बंसी मधुर बजाय रहे री ॥ ४ ॥

सतपुर जाय दरश पुर्ष कीन्हा ।

जहँ अचरज बीन सुनाय रहे री ॥ ५ ॥

राधास्वामी चरन हुई लीलीना^४ ।

जहँ अलख अगम दर^५ छाया रहे^६ री ६ ॥

१—मन रूपी कौए की । २—होली । ३—देख कर । ४—लीन । ५—द्वार पर । ६—छाया रहे—ठहरे हुए हैं ।

प्रेम का सोत पोत^१ जहँ भारी ।

मेहर दया उमँगाय रहे री ॥ ७ ॥

राधास्वामी मात पिता पति मेरे ।

मोहि प्यार से गोद बिठाय रहे री ॥ ८ ॥

॥ शब्द ८ ॥

अचरज आरत^२ गुरु की धारूँ ।

उमँग नई हिये छाये रही री ॥ टेक ॥

सतसंगी सब हरषत आये ।

सतसंगिन उमँगाय रही री ॥ १ ॥

अजब समा^३ क्या बरन सुनाऊँ ।

चहुँ दिस आनँद गाय रहे री ॥ २ ॥

बस्तर भोजन बहु बिधि^४ साजे ।

देख भाव हरषाय रहे री ॥ ३ ॥

बढ़त हुलास हिये में भारी ।

धन फल फूल लुटाय रहे री ॥ ४ ॥

धूम मची आरत की भारी ।

बहु जिव अब घिर^५ आय रहे री ॥ ५ ॥

सकल समाज हरष रहा मन में ।

उमँग बधाई गाय रहे री ॥ ६ ॥

१—सोत पोत—भंडार । २—देखिए पृष्ठ २८ नोट नं० २ । ३—अवसर ।

४—तरह । ५—इकट्ठे हो कर ।

अस अस देख बिलास^१ नवीना^२ ।

सब जीव अचरज लाय रहे री ॥ ७ ॥

राधास्वामी दयाल प्रसन्न होय कर ।

मेहर दया फ़रमाय रहे री ॥ ८ ॥

अपनी दया से काज बनाया ।

आपहि करनी कराय रहे री ॥ ९ ॥

सेव कराय दया से अपनी ।

जन^३ का भाग जगाय रहे री ॥ १० ॥

राधास्वामी मेहर से हिये में सबके ।

छिन छिन प्रेम बढ़ाय रहे री ॥ ११ ॥

॥ शब्द १० ॥

प्रेम भरी भोली बाली सुरतिया ।

पल पल गुरु को रिझाय^४ रही ॥ १ ॥

दीन होय लागी सतसँग में ।

बचन सुनत हरषाय रही ॥ २ ॥

लिपट रही चरनन में हित से ।

हिये गुरु रूप बसाय रही ॥ ३ ॥

शब्द उपदेश पाय मगनानी ।

धुन में सुरत जमाय^५ रही ॥ ४ ॥

१—प्रियतम के दर्शन व उनके साथ एक रस होने पर प्राप्त होने वाला विशेष आनंद । २—नया । ३—सेवक । ४—प्रसन्न कर । ५—एकाग्र कर ।

गुरु की दया परख^१ अंतर में ।
 उमँग उमँग गुन गाय रही ॥ ५ ॥
 प्रेम बढ़ा अब हिये अंतर में ।
 तन मन वार धराय रही ॥ ६ ॥
 गुरु का सतसँग लगा प्यारा ।
 दरशन को नित धाय^२ रही ॥ ७ ॥
 जस जल मीन^३ हरष दरशन कर ।
 हिये का कँवल खिलाय रही ॥ ८ ॥
 खेलत बिगसत संग गुरू के ।
 मेहर दया नित चाह रही ॥ ९ ॥
 प्रेमी जन सँग नाचत गावत ।
 सुध बुध सब बिसराय^४ रही ॥ १० ॥
 राधास्वामी दयाल लिया अपनाई ।
 नित नया प्रेम जगाय रही ॥ ११ ॥

भाग ३

॥ शब्द १ ॥

प्रेमी जइयो रे सतसँग में ।
 लीजो सुरत जगाय ॥ टेक ॥
 बिन सतसँग मन चेत नही ।
 सतगुरु प्यारे की सरनाय ॥ १ ॥

अमृत रूपी बचन गुरू के ।

सुन सुन रहे चरन लीं^१ लाय^२ ॥ २ ॥

शब्द भेद लेकर सतगुरू से ।

मन और सूरत अधर चढ़ाय ॥ ३ ॥

सुन सुन धुन सूरत मगनानी ।

मन से लीना खूँट^३ छुड़ाय ॥ ४ ॥

सतगुरू लार^४ चली फिर प्यारी ।

सत्तलोक किया आसन जाय ॥ ५ ॥

सत्तपुरुष का दरशन पाया ।

हंसन सँग लिया मेल मिलाय ॥ ६ ॥

वहाँ से राधास्वामी धाम सिधारी ।

मगन होय निज भाग सराय ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

प्रेमी मिलियो रे सतगुरू से ।

देवें काज बनाय ॥ टेक ॥

दया निधान^५ परम हितकारी ।

जीवों को दें ओट^६ बुलाय ॥ १ ॥

दीन होय जो सरनी आवे ।

ताको मेहर से लें अपनाय ॥ २ ॥

प्रीति प्रतीति बड़ा चरनन में ।

सुरत शब्द अभ्यास कराय ॥ ३ ॥

घट में तेरे दरशन देकर ।

मन और सुरत अधर चढ़ाय ॥ ४ ॥

शब्द शब्द से मेला^१ करके ।

इक दिन दें निज घर पहुँचाय ॥ ५ ॥

जो कुछ करें करें गुरु प्यारे ।

जीव निबल क्या कार^२ कमाय ॥ ६ ॥

राधास्वामी सतगुरु प्यारे ।

महिमा उनकी को सके गाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

प्रेमी भागो रे जगत से ।

या सँग क्यों तू धोखा खाय ॥ टेक ॥

यह दुनिया काहू^३ की नहीं ।

भोग दिखा लिया जीव फँसाय ॥ १ ॥

याते छूटन कठिन बिचारो^४ ।

सब ही या सँग गये लुभाय ॥ २ ॥

बिन सतगुरु कोइ छूटे नहीं ।

उनका सतसँग करो बनाय^५ ॥ ३ ॥

बचन सुनो और चित में धारो ।

सूरत घट धुन संग लगाय ॥ ४ ॥

प्रीति प्रतीति चरन में धारो ।

राधास्वामी इक दिन काज बनाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

प्रेमी मानो रे बचन को ।

रहियो गुरु चरनन ली^१ लाय^२ ॥ टेक ॥

गुरु की महिमा कही न जावे ।

देवें घट का भेद लखाय ॥ १ ॥

कुल मालिक राधास्वामी प्यारे के ।

चरनन में दें सुरत जुड़ाय ॥ २ ॥

नित अभ्यास करे जो घट में ।

चरन धार रस ले त्रिपताय^३ ॥ ३ ॥

वही धार धुन शब्द पहिचानो ।

वही धार अमृत बरसाय ॥ ४ ॥

वही धार गह^४ सुरत चढ़ाओ ।

उसी धार से रहो लिपटाय ॥ ५ ॥

चढ़ चढ़ पहुँचो धुर दरबारा ।

राधास्वामी दरशन पाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥

प्रेमी जागो रे तुम अब ही ।

मोह की नींद बिसार^१ ॥ टेक ॥

भूल भरम में कब तक रहना ।

गफलत तज^२ अब हो हुशियार ॥ १ ॥

गुरु सतसँग से नाता^३ जोड़ो ।

बिरह अनुराग सम्हार ॥ २ ॥

कुल मालिक राधास्वामी चरनन में ।

चित को जोड़ो धर कर प्यार ॥ ३ ॥

धुन भनकार सुनो फिर घट में ।

प्रेम अंग ले सुरत सुधार ॥ ४ ॥

बिमल बिलास लखे अंतर में ।

गुरु चरनन पै तन मन वार^४ ॥ ५ ॥

राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें ।

पहुँचे इक दिन निज दरबार ॥ ६ ॥

॥ शब्द ६ ॥

प्रेमी रहियो रे हुशियार ।

माया घात^५ बचाय ॥ टेक ॥

यह मन माया दोउ संसारी ।

जीव गये इन हाथ^६ ठगाय ॥ १ ॥

१—भुलाकर । २—छोड़ कर । ३—संबंध । ४—निष्कावर कर दे ।
५—चोट । ६—इन हाथ—मन और माया से ।

निकसन^१ की कोइ जुगत न पावें।

बार बार जग में भरमाय ॥ २ ॥

कनक^२ कामिनी^३ मान बढ़ाई ।

जाल बिछा लिया जीव फँसाय ॥ ३ ॥

बिन सतगुरु कोइ बचन न पावे।

उनकी सरन पड़ो तुम जाय ॥ ४ ॥

सुरत शब्द की जुगत कमाओ ।

गुरु चरनन में प्रीति बढ़ाय ॥ ५ ॥

मेहर से घट में देहि सहारा।

पिंड अंड के पार पड़ाय^४ ॥ ६ ॥

राधास्वामी दीनदयाल कृपानिधि।

माया काल से लेहि बचाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७ ॥

प्रेमी लीजो रे सुध^५ घर की ।

गुरु सँग शब्द कमाय ॥ टेक ॥

शब्द धार धुर^६ घर से आई ।

वही धार गह^७ अधर चढ़ाय ॥ १ ॥

वही धार गुरु चरन कहावे ।

वा में गहरी प्रीति बसाय ॥ २ ॥

१—निकलने । २—सोना, धन । ३—स्त्री । ४—पहुँच जाओ । ५—याद ।
६—सबसे ऊँचे । ७—पकड़ कर ।

गुरु सरूप को सँग ले अपने ।

शब्द शब्द से मिलना जाय ॥ ३ ॥

या बिधि^१ चाल चले जो कोई ।

दिन दिन चरनन प्रेम बढ़ाय ॥ ४ ॥

घट में लीला लखे नियारी ।

नित नवीन रस आनंद पाय ॥ ५ ॥

चढ़ चढ़ पहुँचे राधास्वामी धामा ।

दरश पाय निज भाग सराय^२ ॥ ६ ॥

भाग ४

॥ शब्द १ ॥

हेरी^३ तुम कौन हो री ।

मोहि अटकावनहारी ॥ टेक ॥

मैं दर्शन को गुरु प्यारे के ।

जाऊँगी मानूँ न कहन तुम्हारी ॥ १ ॥

मेरा चित्त बैसे गुरु चरनन ।

तुम बिरथा^४ क्यों करो पुकारी ॥ २ ॥

गुरु मेरे दीन दयाल कृपाला ।

उनके चरन पर जाऊँ बलिहारी ॥ ३ ॥

मोसी अधम^५ को चरन लगाया ।

तुमको भी वे लेहैं उबारी ॥ ४ ॥

१—या बिधि—इस तरह । २—भाग सराय—अपने को सुराक्रिस्मत माने ।

३—हे सखी । ४—व्यर्थ में । ५—नीच ।

आओ चलो सजनी सँग मेरे ।

सतगुरु चरन सीस अब डारी ॥ ५ ॥

सब जीवन को यही सँदेसा ।

जैसे बने तैसे सरन सम्हारी ॥ ६ ॥

राधास्वामी प्यारे सतगुरु मेरे ।

सब जीवन का काज सुधारी^१ ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

हेर तुम कैसी हो री ।

जग बिच भरमनहारी ॥ टेक ॥

जीव कल्याण की सुढु न लीनी ।

दिन दिन मोह जाल बिस्तारी^२ ॥ १ ॥

काम क्रोध के धक्के खाती ।

लोभ मोह सँग सहो दुख भारी ॥ २ ॥

जहँ जहँ आसा सुख की धारी ।

वहीं वहीं भटके^३ छिन छिन खारी । ३ ॥

निस दिन सब जग जाता देखो ।

अपनी मौत की सुढु बिसारी ॥ ४ ॥

जल्दी चेत करो सतसंगत ।

गुरु की दया ले काज सँवारी^४ ॥ ५ ॥

भक्ति भाव अब मन में धारो ।

जीते जी कुछ काज बना री ॥ ६ ॥

ले उपदेश करो अभ्यासा ।

मन के सबहि बिकार निकारी ॥ ७ ॥

राधास्वामी चरन धार लो मन में ।

मेहर से भोजल पार उतारी ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥

हेरी तुम कैसी हो री ।

जग बिच भूलनहारी ॥ टेक ॥

जनम जनम का भूला मनुआँ ।

भोगन में यहँ आन बँधा री ॥ १ ॥

जैसा संग मिला देही में ।

वैसी ही जग आसा धारी ॥ २ ॥

जतन करे और दुख सुख पावे ।

जनम मरन का सहे दुख भारी ॥ ३ ॥

बिन सतगुरु कोइ बचे न भाई ।

याते सतगुरु सरन सम्हारी ॥ ४ ॥

वे दयाल तोहि जुगत लखावें ।

मेहर से तेरा करें छुटकारी ॥ ५ ॥

राधास्वामी सतगुरु दीनदयाला ।

सब जीवों की आस पुरा री ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४ ॥

हेरी तुम कौन हो री ।

मोहि भरमावनहारी ॥ टेक ॥

बहु दिन कीना संग तुम्हारा ।

दिन दिन जग बिच रही फँसारी ॥ १ ॥

अब मोहि मिले गुरू दातारा^१ ।

उन सँग अपना काज सुधारी ॥ २ ॥

समझ तुम्हारी मैं नहि धारूँ ।

तुम अजान^२ बहती मन लारी^३ ॥ ३ ॥

मैं गुरू सीख^४ धरूँ हिरदे में ।

सुरत शब्द की कार^५ कमा री ॥ ४ ॥

गुरू की दया ले नभ पर धाऊँ ।

निरखूँ जाकर गगन अटारी ॥ ५ ॥

सतपुर सतगुरू दर्शन करके ।

राधास्वामी चरन मिलत सुखियारी । ६ ॥

भाग ५

॥ शब्द १ ॥

चेतीरे जग काम न आवे ॥ टेक ॥

यह जग चार दिनों का सुपना ।

कोई थिर^६ न रहावे ॥ १ ॥

पता भेद तुम्हरे निज घर का ।
 गुरु बिन कौन बतावे ॥ २ ॥
 वह निज घर है राधास्वामी धामा ।
 शब्द पकड़ सुत जावे ॥ ३ ॥
 शब्द भेद लेकर सतगुरु से ।
 धुन सुन अधर चढ़ावे ॥ ४ ॥
 चढ़ चढ़ पहुँचे दसवें द्वारा ।
 बेनी^१ में पैठ^२ अन्हावे ॥ ५ ॥
 सतपुर जाय मिले सतगुरु से ।
 अलख अगम को धावे ॥ ६ ॥
 सतगुरु दया काज हुआ पूरा ।
 राधास्वामी चरन समावे ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

भागो रे जग से अब भागो ॥ टेक ॥
 भूल भरम गफलत अब छोड़ो ।
 जागो रे गुरु से मिल जागो ॥ १ ॥
 सतसँग कर ले भेद गुरु से ।
 लागो रे चरनन में लागो ॥ २ ॥
 मन इंद्री को रोक अँदर में ।
 त्यागो रे बिषयन^३ को त्यागो ॥ ३ ॥

नैन कँवल में बाट^१ लखाई ।

ताको^२ रे गुरु नैना ताको ॥ ४ ॥

राधास्वामी दया संग ले अपने ।

सूरत शब्द अधर में राखो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

चेतो रे घर घाट^३ सम्हारो^४ ॥ टेक ॥

या देही सँग क्यों दुख सहना ।

निज सुख घर की ओर सिधारो^५ ॥ १ ॥

बिन सतगुरु को भेद बतावे ।

उनका संग करो धर प्यारो ॥ २ ॥

करम धरम सब भरम हटा कर ।

गुरु का बचन हिये बिच धारो ॥ ३ ॥

शब्द भेद और जुगत चलन की ।

ले गुरु से घट अधर^६ पधारो^७ ॥ ४ ॥

घंटा संख सुनी धुन दोई ।

गगन माहि गुरु रूप निहारो ॥ ५ ॥

निर्मल हुई सुन सारँग बानी ।

मुरली सुन धुन बीन सम्हारो ॥ ६ ॥

सुन सुन बतियाँ अलख अगम की ।

राधास्वामी चरन करो दीदारो^८ ॥ ७ ॥

१—रास्ता । २—देखो । ३—दिशा । ४—पकड़ो । ५—चलो । ६—अंतर
में । ७—चलो । ८—दर्शन ।

॥ शब्द ४ ॥

जागो रे यहाँ कब लग सोना ॥ टेक ॥
चेत करो निज घर को खोजो ।

बिरथा वक्तु यहाँ नहिं खोना ॥ १ ॥
मन मलीन जग में भरमावे ।

सतसँग कर कलमल^१ सब धोना ॥ २ ॥
गुरु के बचन हिये में धरना ।

सुरत शब्द में निस दिन पोना^२ ॥ ३ ॥
जगत मोह अब छिन छिन तजना ।

भक्ती बीज हिये में बोना ॥ ४ ॥
पिंड अंड ब्रह्मंड के पारा ।

राधास्वामी धाम करो अब गौना^३ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

धात्रो रे गुरु सरन सम्हारी ॥ टेक ॥
घट में निरख बहार^४ नवीना ।

सुरत शब्द मत धारी ॥ १ ॥
सुन सुन धुन सुत अधर चढ़ाओ ।

लखो जोत उजियारी ॥ २ ॥
बंकनाल धस त्रिकुटी पारा ।

सुन में जाय अक्षर धुन धारी^५ ॥ ३ ॥

१—काल के मैल । २—प्रवेश करना । ३—गमन । करो गौना—जाओ ।
४—विलास । ५—ग्रहण की ।

भँवरगुफा मुरली धुन सुन कर ।

सुरत हुई सतगुरु दरबारी ॥ ४ ॥

अलख अगम का मुजरा^१ करके ।

राधास्वामी चरन सीस डारी ॥ ५ ॥

अचरज रूप निरख मगनानी ।

वाह वाह प्रीतम बलिहारी ॥ ६ ॥

॥ भाग ६ ॥

॥ शब्द १ ॥

मेरे प्यारे बहन और भाई ।

तुम्हें लाज न आई ।

क्यों नहि मोहि सम्हारो ॥ टेक ॥

मैं भरमत्त रहूँ जग में निस दिन ।

तुम नित सतसँग करो बनाई ।

और सतगुरु की सेवा धारो ॥ १ ॥

क्यों नहि मुझको बचन सुनाओ ।

और अपने सँग लेव लगाई ।

मोहि मेहर दया कर प्यारो ॥ २ ॥

जो तुम एती^२ दया बिचारो ।

गुरु सँग मेरा मेल मिलाई ।

मेरा उतरे करम का भारो^३ ॥ ३ ॥

गुरु हैं दीनदयाल गुसाईं ।

जीव दया नित चित्त बसाई ।

मोहि अधम^१ को देहि सहारो ॥ ४ ॥

मैं अब तक रहा मनमुख^२ भारी ।

भोगन में रहा अधिक फँसाई ।

नहि खोजा निज घर न्यारो ॥ ५ ॥

मोहि सूझ पड़ा यह अबही भाई ।

गुरु बिन नहि कोइ और सहाई ।

जग भूठा खेल पसारो^३ ॥ ६ ॥

अब मैं भक्ति करूँ तन मन से ।

सतगुरु चरन सरन गह^४ भाई ।

जाऊँ भौसागर पारो ॥ ७ ॥

तुम सब करो मदद मेरी मिल कर ।

तब प्यारे राधास्वामी चरन निहारी ।

तन मन से होकर न्यारो ॥ ८ ॥

॥ शब्द २ ॥

मेरे प्यारे बहन और भाई ।

क्यों ग़फ़लत में रहो सोते ।

गुरु लेव सम्हारी ॥ टेक ॥

१—नीच । २—मन के कहने में चलने वाला । ३—पसारा, विस्तार ।

४—पकड़ कर ।

या जग में नित रहना नाहीं ।

इक दिन तन तज जाना ।

टुक^१ वहाँ की बात बिचारी ॥ १ ॥
सतगुरु वहाँ के भेदी कहियन ।

मिल उनसे लेव समझौती^२ ।

निज घर वे देहि लखा री ॥ २ ॥
सतसँग उनका करो चित लाई ।

बचन अमोल हिये बिच धारो ।

तोहि कर दें जग से न्यारी ॥ ३ ॥
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे ।

भेद उनका दें घट में सारा ।

सुत शब्द की जुगती धारी ॥ ४ ॥
मन और सुरत अधर नित धावें ।

सुन सुन घट धुन भनकारी ।

पावे रस आनँद भारी ॥ ५ ॥
गुरु पद परस^३ गई सतपुर में ।

मधुर बीन धुन सुनी सारी ।

पद अलख अगम निरखा री ॥ ६ ॥

वहाँ से चल पहुँची निज धामा ।
 प्यारे राधास्वामी दरश लखा री ।
 उन चरनन पर बलिहारी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

मेरे प्यारे बहन और भाई ।
 या जग बिच घोर^१ अँधेरा ।
 तन में भी तम^२ रहा छाई ॥ टेक ॥
 मन इंद्री का जोर घनेरा^३ ।
 पाँच दूत^४ अति कर बलवाना ।
 जीवन का बल पेश न जाई ॥ १ ॥
 काल करम से बचना चाहो ।
 तौ सतगुरु सँग चालो ।
 मग^५ में कोइ बिघन न आई ॥ २ ॥
 जनम मरन का दुख अति भारी ।
 देही सँग दुख सुख नित सहना ।
 याते जिव लेव बचाई ॥ ३ ॥
 सतगुरु हैं सच्चे हितकारी ।
 वे काटें सब काल कलेशा ।
 सरन गहे^६ ताके होयँ सहाई ॥ ४ ॥

१—बहुत । २—अंधकार । ३—बहुत ज्यादा । ४—काम, क्रोध इत्यादि ।

५—रास्ते । ६—लेवे ।

चलो री सखी अब देर न कीजे ।

गुरु सतसँग में तन मन दीजे ।

धार हिये राधास्वामी सरनाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

मेरे प्यारे बहन और भाई ।

गुरु चरन सरन गह चालो ।

मन माया का जोर घनेरा^१ ॥ टेक ॥

यह मन मूरख चेतें नाहीं ।

भोगन में रहे सदा अधीना ।

दुनिया का न छोड़े बखेड़ा ॥ १ ॥

बिन गुरु सतगुरु कौन चितावे ।

वे देहि दया का सहारा ।

तब यह छूटे सबेरा^२ ॥ २ ॥

अपने बल से छूटे नाहीं ।

खोजो सतगुरु दयाल गुसाई ।

मत कर तू बहुत अबेरा^३ ॥ ३ ॥

भाग जगे जिन सतगुरु पाये ।

सुरत शब्द की जुगत कमाये ।

घट में निज पद को हेरा^४ ॥ ४ ॥

सुरत चढ़ी पहुँची दस द्वारे ।

राधास्वामी चरन धुर धाम निहारे ।

हुआ सहजहि आज निबेड़ा^१ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

मेरे प्यारे बहन और भाई ।

जग मोह बिसारो ।

सतगुरु से नेह^२ लगा लो ॥ टेक ॥

यह जग तुम्हरा संगी नहीं ।

गुरु का सतसँग धारो ।

भूल और भ्रम मिटा लो ॥ १ ॥

दया लेव तुम उनकी हर दम ।

सुरत शब्द की जुगत सम्हालो ।

मन और सुरत जगा लो ॥ २ ॥

भोग बासना चित से छोड़ो ।

मन और सुत निज घट में जोड़ो ।

विघन और बिकार^३ निकालो ॥ ३ ॥

जस जस आनंद घट में पावे ।

प्रीति प्रतीति चरन में बाढ़े ।

प्रेम रँग सुरत रंगा लो ॥ ४ ॥

चरन सरन राधास्वामी हिये धर ।
धुन सँग सुरत चढ़ाओ अधर घर ।
मेहर से आजहि काज बना लो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

मेरे प्यारे बहन और भाई ।
गुरु सतसँग का रस लीजे ।
असर औसर फिर न मिलेगा ॥ टेक ॥
बिन सतसंग समझ नहि आवे ।
जगत भोग सब भूठे ।
कोई सँग न चलेगा ॥ १ ॥
गुरु सँग प्रीति करे सोई बाचे ।
सुरत शब्द का मारग ताके ।
वही सतसँग में रलेगा^१ ॥ २ ॥
ध्यान लाय गुरु प्रीति बढ़ावे ।
सुन सुन धुन सुत अधर चढ़ावे ।
वाही का कर्म जलेगा ॥ ३ ॥
अनुभव जागे^२ तो सब कुछ सूझे ।
गुरु का बल ले काल से जूझे^३ ।
वहि सज्जन माया को दलेगा^४ ॥ ४ ॥

१—हिल मिल जावेगा । २—अनुभव जागे—अंतरी तजरुबा होवे ।

३—लड़े । ४—हरावेगा ।

राधास्वामी चरन सरन जिन धारी ।
 वहि जन पहुँचे निज दरबारी ।
 अचरज दरशन पाय खिलेगा^१ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

मेरे प्यारे बहन और भाई ।
 ज़रा सोचो समझो मन में ।
 गुरु लो पहिचानी ॥ टेक ॥
 सतसँग कर उन बचन बिचारो ।
 मन में उनका असर निहारो ।
 अस परखो^२ साध निशानी ॥ १ ॥
 कोइ दिन सँग कर देखो रहनी^३ ।
 सत मत^४ सँग परखो उन गहनी^५ ।
 तब सहज सहज मन मानी ॥ २ ॥
 प्रीति सहित करो शब्द अभ्यासा ।
 घट में देखो बिमल बिलासा ।
 तब सतगुरु की दया नज़र आनी^६ ॥ ३ ॥
 गुरु हैं समरथ दीन दयाला ।
 सरन पड़े को लेहि सम्हाला ।
 तेरी छिन छिन रक्षा ठानी^७ ॥ ४ ॥

१—प्रसन्न होगा । २—पहचानो । ३—रहन सहन । ४—सत मत—सच्ची बुद्धि से । ५—ग्रहण अर्थात् स्वीकार किए हुए विचार व भाव । ६—आवे । ७—करते हैं ।

अस परचे^१ जो नित प्रति देखे ।
 अंतर बाहर दया नित पेखे^२ ।
 सो मन में परतीत समानी ॥ ५ ॥
 जो धारे अस दूढ़ परतीती ।
 दिन दिन जागे हिये में प्रीती ।
 वह सतगुरु की महिमा जानी ॥ ६ ॥
 दया करें गुरु सुरत चढ़ावें ।
 घट का भेद सबहि दरसावें ।
 इक दिन राधास्वामी चरन समानी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

मेरी प्यारी सहेली हो ।
 क्यों जनम गँवाओ हो ॥ टेक ॥
 दर्शन कर मेरे गुरु प्यारे का ।
 निज भाग जगाओ हो ॥ १ ॥
 आज काज करो जीव अपने का ।
 नहि जमपुर जाय पछताओ हो ॥ २ ॥
 छोड़ो अब ही लाज जगत की ।
 गुरु सतसँग में आओ हो ॥ ३ ॥
 दर्शन कर उमँगें हिये प्यारा ।
 बचन सुनत जग भाव^३ भुलाओ हो ॥ ४ ॥

निर्मल दृष्टि से देखो लीला ।

दम दम उमँग बढ़ाओ हो ॥ ५ ॥

भेद पाय मन सुरत समेटो^१ ।

घट अधर चढ़ाओ हो ॥ ६ ॥

बिमल बिलास लखो हिये अंतर ।

तब निज भाग सराहो हो ॥ ७ ॥

राधास्वामी दया परख फिर घट में ।

नया नया प्रेम जगाओ हो ॥ ८ ॥

बिन गुरु सरन होय जीव अकाजा^२ ।

कुटँब को भी सँग लाओ हो ॥ ९ ॥

राधास्वामी दयाल की दया अपारा ।

सब को पार लगाओ हो ॥ १० ॥

ऐसी महिमा राधास्वामी निरखत ।

हरष हरष गुन गाओ हो ॥ ११ ॥

॥ शब्द ९ ॥

मेरी प्यारी सहेली हो ।

दया कर कसर^३ जतादो री ॥ टेक ॥

तुम प्यारी प्यारे साँचे गुरु की ।

मोहि सँग में मिला लो री ॥ १ ॥

घट का भेद और राह चलन की।

गुरु महिमा सुना दो री ॥ २ ॥

प्रेम रंग गुरु नित बरसावें।

मेरी सुरत रँगा दो री ॥ ३ ॥

मन इंद्री के बिकार^१ हटा कर।

गुरु चरन लगा दो री ॥ ४ ॥

दीन होय गुरु चरनन आई।

मोपै मेहर करा दो री ॥ ५ ॥

अपना जान सम्हालो मुझको।

घट प्रेम जगा दो री ॥ ६ ॥

राधास्वामी चरन सरन गह^२ बैठूँ।

ऐसी दया करा दो री ॥ ७ ॥

औगुन पर मेरे दूष्टि न कीजे।

मेरा आजहि काज बना दो री ॥ ८ ॥

दया छिमा तुम हिरदे बसती।

मेहर से खोट^३ हटा दो री ॥ ९ ॥

दीन अधीन पड़ी गुरु द्वारे।

काल से खूँट छुड़ा दो री ॥ १० ॥

सुरत चढ़ाय अधर में धाऊँ।

राधास्वामी दरस दिखा दो री ॥ ११ ॥

भाग ७

॥ शब्द १ ॥

तुम जीते सुरत चढ़ाओ ।
 मुए^१ पर क्या करिहौ ॥ १ ॥
 सुन सुन शब्द चढ़ो घट अंतर ।
 गुनना^२ छोड़ रहो ॥ २ ॥
 चढ़ चढ़ जाओ त्रिकुटी पारा ।
 सतपुर जाय बसो ॥ ३ ॥
 राधास्वामी का दर्शन पाकर ।
 चरनन लिपट रहो ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

तुम अब ही गुरु सँग धाओ ।
 बहुर^३ पछताना पड़े ॥ १ ॥
 सतसँग कर गुरु सेवा धारो ।
 मन में उमँग भरे ॥ २ ॥
 शब्द भेद ले करो अभ्यासा ।
 सूरत अधर चढ़े ॥ ३ ॥
 राधास्वामी दयाल दया करें अपनी ।
 तौ सब काज सरे^४ ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

तुम अब ही मन को माँजो^१ ।
 बहुर क्या काज सरे ॥ १ ॥
 सतसँग^२ करो बचन उर धारो ।
 नित नित मनन^३ करे ॥ २ ॥
 सार^४ धार^५ फिर करे कमाई ।
 सूरत गगन भरे ॥ ३ ॥
 तब मन निश्चल चित होय निर्मल ।
 राधास्वामी ध्यान धरे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

तुम अब ही सतसँग धारो ।
 बहुर^६ नहिँ औसर मिले ॥ १ ॥
 सतगुरु से करो प्रीति घनेरी^७ ।
 सूरत अधर चले ॥ २ ॥
 चढ़ चढ़ पहुँचे सहस्रकँवल में ।
 जगमग जोत बले^८ ॥ ३ ॥
 वहँ से पहुँचे सतगुरु देशा ।
 राधास्वामी चरन रले^९ ॥ ४ ॥

१—साफ़ करो । २—विचार । ३—तत्त्व । ४—ग्रहण करके । ५—फिर ।

६—बहुत । ७—जलती है । ८—तीनी जावे

॥ शब्द ५ ॥

तुम अब ही गुरु से मिलो ।
 जगत की लज्जा तजो ॥ १ ॥
 सतसँग उनका करो प्रेम से ।
 जग से आज भजो^१ ॥ २ ॥
 दया लेव उनकी तुम हरदम ।
 सुरत चरन सजो^२ ॥ ३ ॥
 बिरह अंग ले अधर चढ़ाओ ।
 शब्द शब्द सँग आज गजो^३ ॥ ४ ॥
 मेहर दया सतगुरु की लेकर ।
 राधास्वामी चरनन जाय रजो^४ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

तुम अब ही बिरह जगाय ।
 शब्द में सुरत धरो ॥ १ ॥
 सतगुरु का सतसँग कर हित^१ से ।
 दीन होय उन चरन पड़ो ॥ २ ॥
 मेहर से जब वे भेद सुनावें ।
 घटमें नित अभ्यास करो ॥ ३ ॥
 भजन करो और धारो ध्याना ।
 काल करम से नाहि डरो ॥ ४ ॥

१—भागो । २—चरन सजो—चरणों में सँवार कर लगाओ । ३—प्रसन्न होवो । ४—वृत्त होवो । ५—प्रेम ।

राधास्वामी चरन सरन हिये दूढ़ कर।

भौसागर से आज तरौ^१ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

तुम अब ही गुरु सँग रलो^२ ।

हिये में प्रेम भरो ॥ १ ॥

अब नहि मिलो बहुर^३ कब मिलिहो ।

चौरासी में जाय पड़ो ॥ २ ॥

याते^४ चेतो समझो अब ही ।

सतसँग कर गुरु सरन गहो^५ ॥ ३ ॥

राधास्वामी नाम सुमिर निज नामा ।

गुरु मूरत का ध्यान धरो ॥ ४ ॥

शब्द धार घट हरदम जारी ।

चित से उसको चेत^६ सुनो ॥ ५ ॥

राधास्वामी मेहर से पार लगावें ।

अस भौसागर सहज तरौ ॥ ६ ॥

भाग ८

॥ शब्द १ ॥

हे मन रसिया^७ काया^८ के बसिया^९ ।

छोड़ो हमारी डगरिया^{१०} हो ॥ टेक ॥

१—पार जाओ । २—मिलो । ३—फिर । ४—इसलिए । ५—लो । ६—होश में आकर । ७—भोगों का रस चाहने वाले । ८—शरीर । ९—निवास करने वाले । १०—रास्ता ।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
 बसूँ न तोरी^१ नगरिया हो ॥ १ ॥
 सतगुरु मोहि निज भेद बताया ।
 जाओ घर भाँक भँभरिया हो ॥ २ ॥
 शब्द डोर निज घर से लागी ।
 चलो चढ़ पकड़ रसरिया^२ हो ॥ ३ ॥
 मारग में अटकूँ नहि कबहीं ।
 माया की हाट बजरिया हो ॥ ४ ॥
 गुरु बल काल करम सिर फोड़ूँ ।
 माया की फाड़ूँ चदरिया हो ॥ ५ ॥
 जोत रूप लख त्रिकुटी धाऊँ ।
 चंदा की निरखूँ उजरिया^३ हो ॥ ६ ॥
 हंसन संग मानसर न्हाऊँ ।
 भर लूँ अमी गगरिया हो ॥ ७ ॥
 भँवरगुफा भेटूँ^४ सोहं से ।
 जहाँ बाजे मधुर^५ बँसुरिया हो ॥ ८ ॥
 ठुमक ठुमक पग^६ धरूँ अधर में ।
 सुन धुन बीन अमरिया^७ हो ॥ ९ ॥
 राधास्वामी चरन जाय फिर परसूँ^८ ।
 मिला पद अमर अजरिया^९ हो ॥ १० ॥

१—तुम्हारी । २—रस्सी, शब्द की डोर । ३—प्रकाश । ४—मिलूँ ।

५—सुरीली । ६—ऊँच । ७—अमर पद की । ८—स्पर्श करूँ । ९—अजर ।

॥ शब्द २ ॥

हे मन भोगी सदा के रोगी ।
 चलो घर हमरे साथ हो ॥ टेक ॥
 जनम जनम तुम दुख सुख भोगी ।
 काया^१ संग बँधाता हो ॥ १ ॥
 अब के चेत करो सतसंगा ।
 गुरु सँग जोड़ो नाता^२ हो ॥ २ ॥
 वे हैं समरथ बंदी छोड़ा ।
 मेहर से घर पहुँचाता हो ॥ ३ ॥
 जगत भोग की आसा छोड़ो ।
 गुरु चरनन मन राता^३ हो ॥ ४ ॥
 शब्द कमाई करो उमँग से ।
 सूरत अधर चढ़ाता हो ॥ ५ ॥
 गगन जाय सूरत अलगानी ।
 मन वहँ राज कमाता हो ॥ ६ ॥
 राधास्वामी मेहर से आगे चाली ।
 लखा^४ निज धाम सुहाता^५ हो ॥ ७ ॥

॥ भाग ३ ॥

हे मन मानी सद^६ अज्ञानी ।
 क्यों दुख सुख यहँ सहना हो ॥ टेक ॥

सुरत पड़ी बस तेरे तन में ।
 निज घर बार भुलाना हो ॥ १ ॥
 इंद्रो संग बहिरमुख^१ बरते^२ ।
 भोगन माहिं लुभाना हो ॥ २ ॥
 धन सम्पत्ति सँग रहे मदमाता^३ ।
 कुल परिवार बँधाना हो ॥ ३ ॥
 परमारथ की सार^४ न जाने ।
 जगत सत्त कर जाना हो ॥ ४ ॥
 अब तो चेत ज़रा तू हे मन ।
 खोजो सतगुरु स्याना^५ हो ॥ ५ ॥
 सेवा कर सतसँग कर उनका ।
 शब्द में सुरत लगाना हो ॥ ६ ॥
 राधास्वामी मेहर से देवें तुझको ।
 चरनन माहिं ठिकाना हो ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥

मन के घाट^६ बैठ सुत
 घर की सुढु^७ बिसारी ।
 इंद्रियन सँग भरमाय
 फँसी अब भोगन लारी^८ ॥

१—संसार के पदार्थों में । २—व्यवहार करता है । ३—मदवाला ।

४—असलियत । ५—चतुर । ६—स्थान । ७—याद । ८—साथ ।

पाँच दूत^१ मिल खेंचते
 याहि अपनी अपनी ओर^२ ।
 बिन सतगुरु अस कौन है
 जो देहि ठिकाना ठौर ॥
 खोज सतगुरु का करो प्यारी । १ ।
 पंडित भेष^३ शेख और मुल्ला
 देखे सब संसारी ।
 इनका संग करे जो कोई
 जाय न भोजल पारी ॥
 यह सब अटके मान में
 और लोभ संग भरमाय ।
 काल करम के जाल में
 यह फिर फिर भी भटकाय ॥
 साध सँग ले गुरु ज्ञान बिचारी २
 सतसँग जल अशनान कर
 ले तन मन आज पखारी^४ ।
 गुरु चरनन परतीत लाय नित
 आरत^५ सेवा धारी ॥

१—काम, क्रोध इत्यादि । २—तरफ । ३—भेषधारी साधु । ४—ले
 पखारी—धो लो । ५—देखिए पृष्ठ २८ नोट नं० २ ।

करम धरम सब त्याग कर
 दे भोगन को बिसराय ।
 शब्द जोग अभ्यास कर
 ले सूरत अधर चढ़ाय ॥
 प्रेम रँग भीज रहे सारी^१ ॥ ३ ॥
 सुन सुन अचरज शब्द
 हुई सूरत मतवारी^२ ।
 सतगुरु दीनदयाल
 लिया मोहि आप सम्हारी ॥
 अनहद बाजे बज रहे
 और चहुँ दिस धुन भनकार ।
 सुरत मगन होय थिर^३ खड़ी
 और मनुआँ अति सरशार ॥
 दया से मिला और भारी ॥४॥
 राधास्वामी हुए परसन्न
 सुरत मेरी दीन सिगारी ।
 मन इंद्री के घाट^४ से
 किया (मोहि) छिन में न्यारी ॥

हरष हरष निरखत रहूँ
 प्यारे राधास्वामी चरन बिलास ।
 राधास्वामी दरशन नित चहूँ
 मेरे और न दूजी^१ आस ॥
 दया परतन मन धन वारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

गुरु चरनन लीलीन
 सुरत जग किरत^२ हटाई ।
 मन इंद्रियन सँग प्यार
 और ब्योहार घटाई ॥
 सतसँग प्यारा लागता
 और सुरत शब्द अभ्यास ।
 सतगुरु सेवा धार कर
 हिये होवत नित्त हुलास ॥
 रीति गुरु भक्ति लगी प्यारी ॥ १ ॥
 गुरु आरत^३ बिधि धार
 लिया सब साज बनाई ।
 गुरु सोभा अद्भुत बनी
 कुछ कहा न जाई ॥

प्रेम मगन सब हो रहे
 और चहुँ दिस आनँद छाये।
 गुरु प्यारे का दरस कर
 सब लीन्हा भाग जगाय॥
 गाऊँ कस महिमा गुरु भारी॥२॥
 सतसँग में गुरु बैठ के
 निज बचन सुनाई।
 सुन सुन बाढ़ा प्रेम
 सुरत मन अति सरसाई^१॥
 घट में भूँक मगन होय
 सुन अनहद भनकार।
 दूत^२ सकल^३ निरबल हुए
 गुरु कीन्ही मेहर अपार॥
 भोग सब लागे अब खारी^४॥३॥
 गुरु की सरन सम्हार
 बिरह हिये नई उमँगाई।
 काल करम बल तोड़
 सुरत को अधर चढ़ाई॥

१—हरे भरे हो रहे हैं। २—काम, क्रोध इत्यादि। ३—सभी। ४—कड़वे।

गगन पार सुन में गई
 और देखा हंस बिलास ।
 भँवरगुफा सुन बाँसरी
 किया सतगुरु चरन निवास ॥
 सुरत हुई राधास्वामीकी प्यारी ४

॥ शब्द ६ ॥

मन चंचल चहुँ दिस धाय^१ ।
 सखी में नहि जाने दूँगी ॥
 गुरु बल हियरे धार ।
 बिघन कोइ नहि आने दूँगी ॥ टेक ॥
 माया भोग दिखाय ।
 भुलावत जीवन को जग में ॥
 मैं गुरु नाम आधार ।
 दाव^२ वाहि नहि पाने दूँगी ॥ १ ॥
 मन है बड़ा गँवार ।
 करे नहि चरनन बिश्वासा ॥
 मैं गुरु टेक सम्हार ।
 भरम कोइ नहि लाने दूँगी ॥ २ ॥

१—दौड़ता है । २—मौका ।

गुरु का ध्यान सम्हार ।
 चरन में मन को साध^१ रहूँ ॥
 बिन राधास्वामी नाम ।
 और कुछ नहि गाने दूँगी ॥ ३ ॥

॥ शब्द ७ ॥

मनुआँ कहन न माने सखी ।
 मैं कौन उपाय करूँ ॥ टेक ॥
 बहु विधि रहा समझाय ।
 भरमता फिर फिर भोगन में ॥
 गुरु की कान^२ न माने मूरख ।
 क्योंकर बाँध रखूँ ॥ १ ॥
 निरभय होय तरंग उठावत ।
 रोक टोक माने नाहीं ॥
 मैं तो कीन्हे जतन^३ अनेका ।
 कैसे इसको मार मरूँ ॥ २ ॥
 सतसँग करता नित्त ।
 शब्द का करता अभ्यासा ॥
 अपनी हठ नहि छोड़े ।
 कहो फिर कैसे पार पड़ूँ ॥ ३ ॥

गुरु की दया ले संग ।
 सुरत रहे चरनन में राती^१ ॥
 राधास्वामी सरन सम्हार ।
 जगत से या बिधि^२ आज तरूँ ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

मन तू करले हिये धर प्यार ।
 राधास्वामी नाम का आधार^३ ॥ टेक ॥
 राधास्वामी नाम है अगम अपारा ।
 जो सुमिरे तिस लेहि उबारा ॥
 सुन घट में अनहद भनकार ॥ १ ॥
 राधास्वामी धाम है ऊँच से ऊँचा ।
 संत बिना कोइ जहाँ न पहुँचा ॥
 दरस किया जाय कुल करतार ॥ २ ॥
 राधास्वामी नाम की महिमा भारी ।
 शेष महेश कहत सब हारी ॥
 लीला अपर अपार ॥ ३ ॥
 राधास्वामी परम पुरुष जग आये ।
 हंस जीव सब लिये मुक्ताये^४ ॥
 और जीवन पर बीजा डार^५ ॥ ४ ॥

१—लीन । २—या बिधि—इस तरह । ३—अवलंब । ४—उबार लिए ।

५—बीजा डार—उद्धार की काररवाई का सिलसिला शुरू किया ।

नाम की महिमा बहु बिधि गाई ।

मुक्तो की यहि जुगत बताई ॥

सुमिरो राधास्वामी बारम्बार ॥ ५ ॥

राधास्वामी नाम का भेद सुनाया ।

सुरत शब्द मारग दरसाया ॥

धुन सँग सुरत चढ़ाओ पार ॥ ६ ॥

धुन आत्मक^१ जो राधास्वामी नामा ।

तिस महिमा कस कहूँ बखाना ॥

जो सुने सोइ जाय निज घरबार । ७ ॥

॥ शब्द ट ॥

मन तू सुन ले चित दे आज ।

राधास्वामी नाम की आवाज ॥ टेका ॥

अनहद बाजे घट घट बाजें ।

अनुरागी^२ सुन सुन आराधे^३ ।

प्रेम भक्ति का लेकर साज^४ ॥ १ ॥

तीन लोक में अनहद^५ राजे^६ ।

सत्तलोक सत शब्द बिराजे ।

तिस परे राधास्वामी नाम की गाज^७ ॥ २ ॥

१—धुन आत्मक—धुन्यात्मक यानी ध्वनि या शब्द ही जिसका असली रूप है। २—प्रेमी। ३—उपासना करें। ४—सामान। ५—शब्द। ६—मौजूद है। ७—गरज।

शब्द की महिमा संतन गाई ।

जिन मानी धुन तिन्हें सुनाई ।

कर दिया उनका पूरा काज ॥ ३ ॥

राधास्वामी नाम हिये में धारा ।

सोई जन हुआ सबसे न्यारा ।

त्याग दई कुल जग की लाज ॥ ४ ॥

राधास्वामी नाम प्रीति जिन धारी ।

राधास्वामी तिसको लिया सुधारी ।

दान दिया वाहि भक्ती दाज^१ ॥ ५ ॥

राधास्वामी नाम है अपर अपारा ।

राधास्वामी नाम है सार का सारा ।

जो सुने सोइ करे घट में राज ॥ ६ ॥

॥ शब्द १० ॥

जगत भोग मोहि नेक न भावें ।

मैं तो सतगुरु ढूँढूँगी ॥ टेक ॥

सतगुरु की महिमा अति भारी ।

बिन उनके कोइ जाय न पारी ।

मैं तो उनहीं को सेऊँगी^२ ॥ १ ॥

सतसँग कर गुरु चरन धियाऊँ ।
 सुन सुन बचन हिये उमगाऊँ ।
 मैं तो उनहीं की जुगत कमाऊँगी ॥ २ ॥
 भाग जगे सतगुरु मिले आई ।
 दीन देख मोहि लिया अपनाई ।
 चरनन प्रीति बढ़ाऊँगी ॥ ३ ॥
 ले उपदेश सुनूँ घट धुन को ।
 घेर^१ और फेर^२ लगाऊँ मन को ।
 गगन और नित धाऊँगी ॥ ४ ॥
 गुरु पद परस^३ सरोवर न्हाऊँ ।
 भँवरगुफा सोहं धुन गाऊँ ।
 सतपुर बीन बजाऊँगी ॥ ५ ॥
 अलख पुरुष की आरत^४ धारूँ ।
 अगम पुरुष का रूप निहारूँ^५ ।
 राधास्वामी चरन समाऊँगी ॥ ६ ॥
 सतगुरु दया परम पद पाया ।
 राधास्वामी धाम अजब दरसाया ।
 छिन छिन उन गुन गाऊँगी ॥ ७ ॥

१—चारों तरफ से एकाम्र करके । २—संसार की तरफ से लौटा कर ।

३—स्पर्श करके । ४—देखिए पृष्ठ २८ नोट नं० २ । ५—देखूँ ।

भाग ८

॥ शब्द १ ॥

प्रेम दात गुरु दीजिये ।

मेरे समरथ दाता हो ॥ १ ॥

दरस पाय नित मगन^१ रहूँ ।

मेरे यही अभिलाषा हो ॥ २ ॥

प्रेम रंग भीजत रहूँ ।

नित तुमहि धियाता हो ॥ ३ ॥

मेरे सर्व^२ अंग में बसि रहो ।

नित तुम गुन गाता हो ॥ ४ ॥

माया के सब बिघन हटाओ ।

काल रहे मुरझाता हो ॥ ५ ॥

मन इंद्री का जोर न चाले ।

नित रहूँ रँग राता^३ हो ॥ ६ ॥

भोग बिलास जगत के सारे ।

मोको कुछ न सुहाता हो ॥ ७ ॥

यह बख्शिष्य करो राधास्वामी प्यारे ।

अब क्यों देर लगाता हो ॥ ८ ॥

देर देर में होत अकाजा ।

योहि दिन बीते जाता हो ॥ ९ ॥

यह बिनती मानो मेरे प्यारे ।
 राधास्वामी पित और माता हो ॥१०॥
 प्रेम दात बिन सुनो मेरे प्यारे ।
 यह मन नाच नचाता हो ॥११॥
 मेरा बस यासे नहि चाले ।
 भोगन में मदमाता^१ हो ॥१२॥
 दया करो मेरी सुरत चढ़ाओ ।
 घट में शब्द बजाता हो ॥१३॥
 जो तुम दया करो मेरे प्यारे ।
 फूला अँग न समाता हो ॥१४॥
 नाम तुम्हार सुनाऊँ सबको ।
 जग में धूम मचाता हो ॥१५॥
 बल बल जाऊँ चरन पर तुम्हरे ।
 छिन छिन तुम्हें रिझाता^२ हो ॥१६॥
 खुल खुल खेलूँ सुन में प्यारे ।
 काटूँ करम बिधाता^३ हो ॥१७॥
 खेलूँ बिगसूँ^४ संग तुम्हारे ।
 दया पाय इतराता^५ हो ॥१८॥
 मगन रहूँ नित घट में अपने ।
 चरनन संग इठलाता हो ॥१९॥

१—मतवाला । २—मैं प्रसन्न करता रहूँ । ३—सृष्टि का आधारभूत कर्म
 अर्थात् आदि कर्म । ४—हर्षित होऊँ । ५—फूल जाता ।

सुन सुन शब्द होय मतवाला ।

छिन छिन अमी^१ चुआता हो ॥२०॥

ऐसी मौज करो अब प्यारे ।

दम दम बिनय सुनाता हो ॥२१॥

होय निश्चित मेरे प्यारे राधास्वामी ।

तुम चरनन माहि समाता हो ॥२२॥

॥ शब्द २ ॥

घट में दर्शन दीजिये ।

मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥ १ ॥

बिन दर्शन मोहि चैन न आवे ।

मेरी आँखों के तारे हो ॥ २ ॥

बिन दर्शन मैं तड़प रहूँ ।

मेरे प्रान अधारे हो ॥ ३ ॥

बिन दरशन मोहि कछु न सुहावे ।

मेरे जग उजियारे हो ॥ ४ ॥

बिन दर्शन तुम्हरे मेरे प्यारे ।

सहत रहूँ दुख भारे^२ हो ॥ ५ ॥

बिन दरशन मोहि नेक^३ न भावे^४ ।

यह जग संसारे हो ॥ ६ ॥

१—अमृत । २—जबरदस्त । ३—जरा भी । ४—अच्छा लगे ।

दर्शन देव और बचन सुनाओ ।

गुरु मेरे अगम अपारे हो ॥ ७ ॥

सुनो पुकार मेरी अब जल्दी ।

सतगुरु दीनदयारे हो ॥ ८ ॥

मेहर करो मानो मेरी बिनती ।

कीजे मम उपकारे हो ॥ ९ ॥

रहूँ अचित मगन निज मन में ।

नित तुम दरस निहारे हो ॥ १० ॥

अब ही दया करो मेरे दाता ।

मैं चरनन बलिहारे हो ॥ ११ ॥

शुकर करूँ और नित गुन गाऊँ ।

घट में देख बहारे हो ॥ १२ ॥

दरस आधार जियत रहूँ प्यारे ।

राधास्वामी सत करतारे हो ॥ १३ ॥

॥ शब्द ३ ॥

बिन दर्शन कल नाहि पड़े ।

मेरे गुरु प्यारे हो ॥ टेक ॥

जब से मैं बिछड़ी चरन कँवल से ।

चैन न पाया नाहि धीर धरे ॥ १ ॥

निस दिन सोच रहे यहि मन में ।

भौसागर अब कैसे तरे ॥ २ ॥

काल अनेकन बिघन लगाये ।

चिन्ता में दिन रात जरे^१ ॥ ३ ॥

भजन भक्ति कुछ बन नहि आवे ।

मन माया से नित्त डरे ॥ ४ ॥

हे सतगुरु सब बिघन हटाओ ।

तुम बिन को अस दया करे ॥ ५ ॥

राधास्वामी मेहर से दर्शन दीजे ।

तब मेरा सब काज सरे^२ ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सुरत प्यारी बँध गई हो ।

जगत में भोगन संग ॥ १ ॥

भूल गइ निज घर अपना हो ।

धार रही अद्रुत माया रंग ॥ २ ॥

मिलें जब सतगुरु दाता हो ।

निकालें मन की सभी तरंग^३ ॥ ३ ॥

दया कर बचन सुनावें हो ।

सिखावें गुरु भक्ती का ढंग ॥ ४ ॥

शब्द अभ्यास करावें हो ।

चढ़े तब घट में उमँग उमँग ॥ ५ ॥

सरन दे काज बनावें हो ।

बसावें राधास्वामी प्रीति अँग अँग

॥ शब्द ५ ॥

सुरत निज घर बिसरानी^१ हो ।
 जगत में पाय कुसंग ॥ १ ॥
 रहे मन इंद्री सँग भरमाय ।
 उठावत नित नित नई तरंग ॥ २ ॥
 गुरू बिन कौन सम्हारे याहि^२ ।
 करावें वोही मन से जंग^३ ॥ ३ ॥
 मेहर से मन का मुख मोड़ें ।
 चढ़ावें सूरत अधर उमंग ॥ ४ ॥
 छुटे तब यह औघट^४ घाटा ।
 मिटे तब मन की सबहि उचंग ॥ ५ ॥
 मेहर प्यारे राधास्वामी की पावे ।
 प्रेम का धारे अचरज रंग ॥ ६ ॥

॥ शब्द ६ ॥

आओ री सखी चलो गुरू के पासा ।
 भक्ति दान आज लीजिये ॥ १ ॥
 जीव उबारन सतगुरू आये ।
 सतसँग उनका कीजिये ॥ २ ॥
 प्रीति प्रतीति धार चरनन में ।
 तन मन भेंट धरीजिये^५ ॥ ३ ॥

१—भूली । २—इसको । ३—लड़ाई । ४—कठिनाई से पार किया जाने वाला । ५—रखिए ।

दूष्टि जोड़ उन दरशन करना ।
 चित दे बचन सुनीजिये ॥ ४ ॥
 बचन कहो चाहे अमृत धारा ।
 उमँग उमँग घट पीजिये ॥ ५ ॥
 सुन सुन बचन खिलत घट मनुआँ ।
 हियरे उमँग भरीजिये ॥ ६ ॥
 कूड़^१ देख जग का परमारथ ।
 करम धरम तज दीजिये ॥ ७ ॥
 सुरत शब्द का ले उपदेशा ।
 घट में बिलास करीजिये ॥ ८ ॥
 अधर चढ़त सुत हुई मगनानी ।
 मनुआँ धुन सँग रीझिये^२ ॥ ९ ॥
 भक्ति महातम^३ महिमा जानी ।
 प्रेम रंग घट भीजिये ॥ १० ॥
 समरथ सतगुरु राधास्वामी पाये ।
 सीस चरन में दीजिये ॥ ११ ॥

॥ शब्द ७ ॥

आओ री सखी चलो गुरु सतसँग में ।
 जीव का काज बनाई ॥ टेक ॥

गिरही^१ पंडित शेख^२ और भेषा ।
 सब मुए^३ धर धर पिछली टेका ॥
 पूजे^४ देवी देव अनेका ।
 जनम जनम भरमाई ॥ १ ॥

राधास्वामी चरनन धर परतीती ।
 सतगुरु से कर गहरी प्रीती ॥
 या बिधि मन माया को जीती ।
 काल को मार गिराई ॥ २ ॥

सतसंग कर ले गुरु उपदेशा ।
 सुरत शब्द में करो प्रवेशा ॥
 जनम मरन का मिटे आदेशा^५ ।
 घट में करो चढ़ाई ॥ ३ ॥

गुरु स्वरूप का कर दीदारा^६ ।
 सुन में सुनो शब्द भनकारा ॥
 मुरली बिन बजे जहँ सारा^७ ।
 सतगुरु दरशन पाई ॥ ४ ॥

वहाँ से भी अधर चढ़ावत ।
 अलख अगम का दरशन पावत ॥
 राधास्वामी चरन निहारत ।
 निज घर जाय बसाई^८ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

कोई कछू कहे मैं नेक न मानूँ ।

मेरा गुरु चरनन मन लागा री ॥ १ ॥

दरशन करूँ नित्त हित चित से ।

(मेरा) रूप रस्स^१ मन राता^२ री ॥ २ ॥

साकित^३ जन का सँग नहिँ चाहूँ ।

चाहूँ न भोग और रागा^४ री ॥ ३ ॥

दीन गरीबी धारूँ चित में ।

सेवा में रहूँ जागा री ॥ ४ ॥

गुरु सतसँग मोहि मिला सहज में ।

क्या कहूँ मैं बड़ भागा री ॥ ५ ॥

मेहर करी गुरु मोहि सम्हाला ।

जगत भाव भय त्यागा री ॥ ६ ॥

शब्द डोर गहि सुरत चढ़ाऊँ ।

छिन छिन धुन रस पागा^५ री ॥ ७ ॥

गुरु बल सबहि बिकार^६ निकाहूँ ।

हंस होय मन कागा^७ री ॥ ८ ॥

सत्त शब्द में सुरत पिरोऊँ ।

जैसे सुई में धागा री ॥ ९ ॥

१—रस । २—लीन । ४—संसार के भोगों में लीन । ४—भोगों की चाह ।

५—लीन । ६—दोष । ७—कौए जैसी वृत्ति वाला । ८—प्रवेश करूँ ।

राधास्वामी धाम चलूँ फिर सज के ।
 वहि उन दरशन ताका^१ री ॥१०॥
 मेहर करी मोहि अंग लगाया ।
 दीन्हा अचल सुहागा^२ री ॥११॥

॥ शब्द ८ ॥

मेरे राधास्वामी प्यारे हो ।
 दरश दे बिपति^३ हरो^४ ॥ १ ॥
 मेरे राधास्वामी प्यारे हो ।
 चरन मेरे सीस धरो ॥ २ ॥
 मेरे राधास्वामी प्यारे हो ।
 हिये में मेरे आन^५ बसो ॥ ३ ॥
 मैं तो जाऊँ बलिहारी हो ।
 मेहर की दृष्टि करो ॥ ४ ॥
 राधास्वामी लेव बचाई हो ।
 अब मैं सरन पड़ो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १० ॥

मेरे राधास्वामी जग आये ।
 करन को जीव उबार ॥ १ ॥
 धर संत रूप औतार ।
 सुनाया घट का भेद अपार ॥ २ ॥

शब्द धुन घट में सुन्ना हो ।

ध्यान गुरु रूप सम्हार ॥ ३ ॥

भोग जग जान असारा^१ हो ।

त्याग चल शब्द का कर आधार^२ ॥ ४ ॥

सरन राधास्वामी धारो हो ।

मेहर से देवें पार उतार ॥ ५ ॥

भाग १०

॥ शब्द १ ॥

रुनभुन रुनभुन हुइ धुन घट में ।

सुन सुन लगी मोहि प्यारी रे ॥ टेक ॥

यह धुन आवत दसम द्वार से ।

काल शब्द से न्यारी रे ॥ १ ॥

सुन सुन धुन अब सोया मनुआँ ।

इंद्री भी थक हारी रे ॥ २ ॥

अधर चढ़त सुत मगन होय कर ।

गुरु चरनन पर वारी रे ॥ ३ ॥

उमँग उमँग सुत गइ सतपुर में ।

दया दूष्टि गुरु डारी रे ॥ ४ ॥

आगें चल पहुँची निज धामा ।

राधास्वामी के बलिहारी रे ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

कोइ दिन का है जग में रहना सखी ।
 ले सुध बुध^१ घर की ओर चलो ॥ टेक ॥
 यहाँ दूत^२ दिखावें जोर घना^३ ।
 और इंद्री नाच नचावें मना^४ ॥
 इन सबको दीजे बेग^५ हटा ।
 कुल काल करम का आज दलो^६ ॥ १ ॥
 सतगुरु का खोज करो भाई ।
 उन चरनन प्रीति धरो आई ॥
 प्रेमी जन से मेल मिलाई ।
 सतसंगत में उमँग रलो^७ ॥ २ ॥
 गुरु देवें घर का भेद बता ।
 सुत शब्द का दें उपदेश सचा ॥
 तब घट में अपने धूम मचा ।
 गुरु शब्द से चढ़ कर जाय मिलो ॥ ३ ॥
 फिर वहाँ से अधर चढ़ो प्यारी ।
 धुन मुरली बीन सुनो सारी ॥
 मन माया काल रहे वारी^८ ।
 सतगुरु की गोद में जाय पलो ॥ ४ ॥

१—सुध बुध—पता । २—काम, क्रोध इत्यादि । ३—बहुत । ४—और मन
 भी । ५—जल्दी । ६—नाश करो । ७—लीन हो जाओ । ८—इसी तरह ।

सतपुर से भी अधर चलो ।
 घर अलख अगम के पार बसो ॥
 लख अचरज लीला मगन रहो ।
 राधास्वामी चरन में जाय घुलो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

भजन में कैसे करूँ हेली री ।
 भजन में कैसे करूँ ॥
 बिन मन निश्चल होय ।
 भजन में कैसे करूँ ॥ टेक ॥
 संसारी ख्यालों में भरमे ।
 नित वहि कार कमाय ॥
 मैं चाहूँ रोकूँ याहि घट में ।
 नेक नहीं ठहराय ॥ १ ॥
 बहु बिधि याहि समझीती दीन्हीं ।
 नेक कहन नहि मान ॥
 दया करो मेरे सतगुरु प्यारे ।
 समरथ पुरुष सुजान ॥ २ ॥
 भोग वासना दूर निकारो ।
 धुन सँग सुरत लगाय ॥
 मनुआँ रहे चरन लीलीना ।
 बहुर न कितहूँ जाय ॥ ३ ॥

बिना दया यह मन नहि माने ।

करिये केती^१ घाल^२ ।

राधास्वामी चाहैं तो छिन में मोड़ें ।

पल में करें निहाल ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

मैं तो पड़ी री दूर निज घर से ।

मेरा दरशन को जिया तरसे ॥ १ ॥

छिन छिन पिया की याद सतावे ।

जल नैनन से बरसे ॥ २ ॥

दया करें गुरु पूरे अपनी ।

जब पिया पद जाय परसे^३ ॥ ३ ॥

मैं गुरु प्यारे की सरन पड़ूँगी ।

सतसँग करूँ नित डर से ॥ ४ ॥

सुरत शब्द की जुगत कमाऊँ ।

तब घट में कुछ दरसे ॥ ५ ॥

चढ़ूँ अधर लखूँ रूप पिया का ।

तब मन सूरत सरसे^४ ॥ ६ ॥

राधास्वामी दया काज हुआ पूरा ।

जाय मिली निज बर^५ से ॥ ७ ॥

१—कितनी ही । २—काररवाई, कोशिश । ३—स्पर्श करे । ४—खिलें ।

५—पति, मालिक ।

॥ शब्द ५ ॥

भक्त का पंथ निराला है ॥ टेक ॥

भक्तन के भगवंत की महिमा ।

और सकल जंजाला है ॥ १ ॥

जो भक्ती संतन ने भाषी^१ ।

वही तो सब से बाला^२ है ॥ २ ॥

उनका प्रीतम कुल का करता^३ ।

राधास्वामी दीन दयाला है ॥ ३ ॥

और उपाश^४ सकल जग माहीं ।

अंस कला पुर्ष काला^५ है ॥ ४ ॥

इनके संग उबार न होई ।

कटे न माया जाला है ॥ ५ ॥

मिल सतगुरु जो शब्द कमावे ।

वही खोले घट ताला है ॥ ६ ॥

प्रेम भक्ति की महिमा भारी ।

जो धारे सोइ आला^६ है ॥ ७ ॥

अस प्रेमी प्रीतम से अपने ।

जाय मिले दरहाला^७ है ॥ ८ ॥

राधास्वामी दयाल भक्त को अपने ।

मेहर से आप सम्हाला है ॥ ९ ॥

१—बताई । २—ऊँची, श्रेष्ठ । ३—कर्त्ता । ४—उपास्य, इष्ट । ५—काल ।

६—बढ़ कर । ७—जल्दी ।

॥ शब्द ६ ॥

मनुआँ मेरा सोवे जगत में ।

जगा देव जी ॥ टेक ॥

गुरु सतसँग में ले चल सजनी ।

बचन सुना देव जी ॥ १ ॥

गहरी प्रीति बसाय हिये में ।

चरन लगा लेव जी ॥ २ ॥

दया करो देव शब्द उपदेश ।

मरम^१ जना देव जी ॥ ३ ॥

तब जागे यह सोता मनुआँ ।

अधर चढ़ा देव जी ॥ ४ ॥

राधास्वामी चरन निहारूँ ।

काज बना देव जी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

हे मेरे मित्रा मनुआँ ।

क्यों न चले निज देश ॥ टेक ॥

या तन में नित दुख सुख सहना ।

छोड़ो यह परदेश ॥ १ ॥

बिन सतसँग घर भेदन पावे ।

ले गुरु से उपदेश ॥ २ ॥

शब्द जुगत ले नित्त कमाओ ।

काटो करम कलेश^१ ॥ ३ ॥

सुरत चढ़ाय गगन में धाओ ।

छूटे माया लेश^२ ॥ ४ ॥

मानसरोवर कर अशनाना ।

धारो हंसा भेष ॥ ५ ॥

भँवरगुफा की बंसी बाजी ।

दयाल देश का मिला सँदेश ॥ ६ ॥

सत्तलोक सतपुरुष रूप लख ।

राधास्वामी चरन करो परवेश^३ ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

कौन बिधि मनुआँ रोका जाय ।

जतन कोइ देव बताय ॥ १ ॥

मौत का डर जब मन में आय ।

नर्क का भय जब चित्त समाय ॥ २ ॥

दुखन से जियरा जब घबराय ।

खोज सतसँग में करे बनाय ॥ ३ ॥

गुरू और साध से ले उपदेश ।

सुरत मन घट धुन संग लगाय ॥ ४ ॥

मेहर से घट में परचा पाय ।

प्रीति गुरु दिन दिन बढ़ती जाय ॥ ५ ॥

सहज में करम धरम छुटकाय ।

भोग इंद्रियन के नहीं सुहाय ॥ ६ ॥

दया गुरु तब मन होय निश्चल ।

शब्द संग सूरत अधर चढ़ाय ॥ ७ ॥

सरन दे राधास्वामी गुरु दातार ।

मेहर से दें निज घर पहुँचाय ॥ ८ ॥

॥ शब्द ट ॥

मनुआँ अनाड़ी से कह दीजो ।

जाव बसो चौरासी देश ॥ टेक ॥

मैं तो अब तेरा संग तियागा ।

जाऊँगी पिया के देश ॥ १ ॥

चलना होय तो अबहि चलो घर ।

छोड़ो जग के रेश^१ ॥ २ ॥

नहिं फिर जनम जनम पछताओ ।

बाँधेंगे जम गह केश^२ ॥ ३ ॥

चित से चेत गहो गुरु सरना ।

छूटे काल कलेश ॥ ४ ॥

शब्द डोर गहि चढ़ो गगन पर ।

धारो हंसा भेष ॥ ५ ॥

नित गुन गाओ नाम पुकारो ।

राधास्वामी पूरन धनी धनेश^१ ॥ ६ ॥

॥ शब्द १० ॥

मनुआँ अनाड़ी को समझाओ ।

क्यों करे हमारी (आपनी) हान^२ । १ ॥

जनम जनम किया भोग बिलासा ।

छोड़ी न अपनी बान^३ ॥ २ ॥

दुख सुख बहु बिधि भोगत रहिया ।

गुरु की सीख न मान ॥ ३ ॥

दुर्लभ नरदेही फिर पाई ।

अब तो चेत अजान^४ ॥ ४ ॥

शब्द शोर नित घट में होता ।

सुनो ज़रा दे कान ॥ ५ ॥

गुरु दयाल अब भेंटे आई ।

कर उनकी पहिचान ॥ ६ ॥

मेहर से घर का भेद सुनावें ।

चित्त लगा सुन तान^५ ॥ ७ ॥

१—धनियों के धनी । २—नुकसान । ३—आदत । ४—मूर्ख । ५—शब्द की धुन ।

त्रिकुटी जाय बसो तुम प्यारे ।
 तीन लोक का राज कमान ॥ ८ ॥
 हम पहुँचें जहाँ राधास्वामी धामा ।
 धर उन चरनन ध्यान ॥ ९ ॥

॥ शब्द ११ ॥

हे मेरे समरथ सार्ई ।
 निज रूप दिखान्त्रो ॥ १ ॥
 हे मेरे प्यारे दाता ।
 निज मेहर करान्त्रो ॥ २ ॥
 मैं तड़प रहूँ दिन राती ।
 मेरी धीर बँधान्त्रो ॥ ३ ॥
 तुम बिन मोहि सुख नहिँ चैना^१ ।
 क्यों देर लगान्त्रो ॥ ४ ॥
 आस २ में बहु दिन बीते ।
 अब मेरी आस पुरान्त्रो^२ ॥ ५ ॥
 योंही उमर जाय मेरी बीती ।
 कब तक तरसान्त्रो ॥ ६ ॥
 दरस दिखाय हरो^३ मन पीड़ा^४ ।
 राधास्वामी काज बनान्त्रो ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२ ॥

सखी री मैं जाऊँगी घर ।

नहिं ठहरूँगी माया देश ॥ टेक ॥

घर तो मेरा ऊँच से ऊँचा ।

जहँ नहिं काल कलेश^१ ॥ १ ॥

नहिं वहँ ब्रह्म और परब्रह्मा ।

नहिं वहँ ब्रह्मा बिष्णु महेश ॥ २ ॥

आतम परमातम नहिं दोई ।

देवी देव न गौर^२ गनेश ॥ ३ ॥

राधास्वामी जहँ सदा बिराजें ।

धारें अगम अलख सत भेष^३ ॥ ४ ॥

हंसन की जहँ सोभा भारी ।

करते वहँ सद^४ आनंद ऐश^५ ॥ ५ ॥

बिन गुरु दया कोई नहिं पहुँचे ।

गुरु चरनन में करूँ अदेश^६ ॥ ६ ॥

राधास्वामी प्यारे सतगुरु मेरे ।

सुफल करी मेरी अब के बैस^७ ॥ ७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

जो मेरे प्रीतम से प्रीति करे ।

मोहि प्यारा लागे री ॥ १ ॥

१—कष्ट । २—पार्वती । ३—रूप । ४—सदा, हमेशा । ५—बिलास ।

६—प्रणाम । ७—वयस, उम्र ।

जो मेरे प्रीतम की सेवा धारे ।
 वहि दिन दिन जागे^१ री ॥ २ ॥
 जो मेरे प्रीतम की महिमा गावे ।
 मोहि अधिक सुहावे री ॥ ३ ॥
 जो मेरे प्रीतम के चरनन लागे ।
 वहि जग से भागे री ॥ ४ ॥
 जो मेरे प्रीतम का रूप निहारे ।
 वहि छबि^२ ताके^३ री ॥ ५ ॥
 जो मेरे प्रीतम का शब्द सम्हारे ।
 गुरु दर^४ भौंके री ॥ ६ ॥
 जो मेरे प्रीतम की सरन सम्हारे ।
 वहि घर जावे री ॥ ७ ॥
 जो मेरे प्रीतम का नाम पुकारे ।
 सोइ निज धाम सिधारे^५ री ॥ ८ ॥
 भौजल से जो तरना चाहे ।
 राधास्वामी राधास्वामी गावे री ॥ ९ ॥

॥ शब्द १४ ॥

भोग बासना छोड़ पियारे ।
 इसमें क्या फल पावेगा ॥ १ ॥

मेहनत करे रात दिन जग में ।

अंत को खाली^१ जावेगा ॥ २ ॥

भाई बंधु और कुटुंब कबीला^२ ।

कोई काम न आवेगा ॥ ३ ॥

यह सब हैं स्वारथ के संगी ।

अंत को फिर पछतावेगा ॥ ४ ॥

गुरु सतसँग में लगन^३ लगा ले ।

भेद वहाँ तू पावेगा ॥ ५ ॥

कर अभ्यास प्रेम से निस दिन ।

घट में आनंद पावेगा ॥ ६ ॥

राधास्वामी सरन धार दूढ़ मन में ।

भोजल पार सिधारेगा^४ ॥ ७ ॥

॥ शब्द १५ ॥

जगत जीव सब होली पूजें ।

साधू होला गावें री ॥ १ ॥

अबीर गुलाल उड़ावत चालें ।

प्रेम रंग घट लावें री ॥ २ ॥

विरह अनुराग^५ की धारा भारी ।

हिय में नित उमँगावें री ॥ ३ ॥

जो जिव चरन सरन में आवें ।
 उनका भाग जगावें री ॥ ४ ॥
 राधास्वामी चरन धार परतीती ।
 सतगुरु शब्द मनावें री ॥ ५ ॥
 शब्द अभ्यास करत नित घट में ।
 जग देह भाव^१ भुलावें री ॥ ६ ॥
 जग जीवन को दया धार कर ।
 राधास्वामी नाम सुनावें री ॥ ७ ॥

॥ शब्द १६ ॥

सतगुरु प्यारी चरन अधारी ।
 खुन २ करती आई हो ॥ १ ॥
 उमँग उमँग कर सेवा करती ।
 धाउँ २ धाउँ २ धाई हो ॥ २ ॥
 गुरु आरत कर मगन हुई अब ।
 घन घन घंट बजाई हो ॥ ३ ॥
 प्रीति सहित परशादी लेकर ।
 खाउँ २ खाउँ २ खाई हो ॥ ४ ॥
 राधास्वामी दया करी अब ।
 रुनभुन शब्द सुनाई हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

माया रूप नवीन^१ धार कर ।

सतसँग में आई ॥

मान भरे रही बोल बचन ।

अहंकार रहा चित में छाई ॥

मैं आऊँ मैं आऊँ मैं आऊँ शोर मचाई । १।

काल भी दूजा^२ रूप धार कर ।

अपना मत गाई ॥

क्रोध बिरोध ईरषा भगड़ा ।

चहुँ^३ दिस फैलाई ॥

बोलत फूँ फूँ फूँ फूँ भक लाई^४ ॥ २॥

सतसँग में नहि मिला दाव^५ तब ।

आपस में भगड़ा ठाना ॥

भूठी रार^६ बढ़ाय जीव को ।

चाहत भरमाना ॥

घुर^२ करत ऐंठते दोऊ फरफूँ दिखलाई ।

प्रेमी जन अस देख हाल ।

सुमिरन में ली लाई ॥

१—नया । २—दूसरा । ३—चारों । ४—भक लाई—धुन लगा कर ।

५—मौक़ा । ६—भगड़ा ।

राधास्वामी नाम सम्हार ।

जाल को दीन्हा तुड़वाई ॥

कालरहा अब भूर^१ रही माया भी मुरझाई

॥ वचन २२ ॥

भाग १

॥ शब्द १ ॥

सुरतिया खेलत बाल समान ।

चरन में गुरु के उमँग उमँग ॥ १ ॥

दूर ही दूर रहा जग माहीं ।

मेहर हुई पाया गुरु का संग ॥ २ ॥

निरख गुरु चरन नवीन बिलास ।

चढ़त नित नया प्रेम का रंग ॥ ३ ॥

वचन सुन मनुआँ हरष रहा ।

भरम और संशय होते भंग^२ ॥ ४ ॥

सरन राधास्वामी दूढ़ करता ।

भाव और भक्ति हिये धरता ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

सुरतिया धूम^३ मचाय रही ।

करें गुरु क्यों नहि दया विचार ॥ १ ॥

बिनय करत मोहि बहु^१ दिन बीते ।

सहत रहे दुख मन बीमार ॥ २ ॥

बिन गुरु दरस दवा नहि कोई ।

माँग रहा दरशन हर बार^२ ॥ ३ ॥

जस होय मौज तुम्हारी प्यारे ।

अंतर बाहर देव दीदार^३ ॥ ४ ॥

जो अभी मेल न हो सतसँग में ।

घट में दरशन रहूँ निहार ॥ ५ ॥

चाहे अपना रूप दिखाओ ।

चाहे सुनाओ शब्द अपार ॥ ६ ॥

जस तस मन कुछ शान्ती पावे ।

सोई जुगत^४ करो दातार ॥ ७ ॥

तुम्हारे घर कुछ कमी न होई ।

खोलो दया मेहर भंडार ॥ ८ ॥

किनका प्रेम का बखिशा दीजे ।

निस दिन तड़प रहूँ लाचार^५ ॥ ९ ॥

पिरथम दया करी मोपै भारी ।

अब क्यों हुए कठोर दयार ॥ १० ॥

मेहर करो मोपै जल्दी प्यारे ।

जस तस मन को लेव सम्हार ॥ ११ ॥

१—बहुत । २—समय । ३—दर्शन । ४—उपाय । ५—मजबूर ।

दीनदयाल जीव हितकारी ।

प्यारे राधास्वामी मेरे प्राण आधार १२

॥ शब्द ३ ॥

सुरतिया भाव^१ सहित^२ ।

आई सुन गुरु महिमा सार ॥ १ ॥

दरशन कर मन में हरषानी ।

सुन सुन वचन बढ़ा हिये प्यार ॥ २ ॥

नित्त बिलास देख मगनानी ।

दरशन नित्त नवीन निहार ॥ ३ ॥

सतसँग करत भरम सब भागे ।

जग^३ परमारथ कूड़ बिचार ॥ ४ ॥

शब्द भेद पाया सतगुरु से ।

सुरत चढ़ावत धुन की लार^४ ॥ ५ ॥

जुगत कमावत होत सफ़ाई ।

मन से आसा भोग निकार ॥ ६ ॥

रहूँ निश्चित सरन गुरु धारूँ ।

राधास्वामी उतारें भौजल पार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सुरतिया उमँग उमँग ।

गुरु आरत^५ करत सम्हार ॥ १ ॥

१—प्रेम, श्रद्धा । २—साथ । ३—संसार का । ४—साथ । ५—देखिए पृष्ठ २८ नोट नं० २ ।

दीन अधीन चरन में आई ।
 बिसरत^१ कृत^२ संसार ॥ २ ॥
 प्रीति सहित गुरु सेवा करती ।
 नित्त बढ़ावत प्यार ॥ ३ ॥
 सुन सुन महिमा गुरु सतसँग की ।
 भाव^३ हिये में धार ॥ ४ ॥
 दिन दिन बढ़त चरन बिस्वासा ।
 गावत राधास्वामी नाम अपार ॥ ५ ॥
 प्रेमी जन से हेल मेल कर ।
 गुरु गुन गावत सार ॥ ६ ॥
 राधास्वामी महिमा हिये बसावत ।
 संसय भरम सब दूर निकार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

सुरतिया घट में आनँद पाय ।
 निरख^४ गुरु भक्ती रीत नई ॥ १ ॥
 प्रेमी जन की हालत देखत ।
 मन में अचरज करत रही ॥ २ ॥
 माँगे गुरु से दया विशेषा^५ ।
 सुरत शब्द की लार^६ लई ॥ ३ ॥

१—भूल जाती है । २—काररवाई । ३—श्रद्धा । ४—देखकर । ५—खास ।

६—साथ ।

देखे घट में अचरज नूरा^१ ।

सुन सुन धुन फिर अधर^२ गई ॥ ४ ॥

ऐसी मेहर करो गुरु दाता ।

घट में नित आनंद लई ॥ ५ ॥

दीन अधीन पड़ी तुम सरना ।

तुम बिन को मोहि दान दई ॥ ६ ॥

प्रेम की दात देव मोहि प्यारे ।

सुरत चरन में लिपट रही ॥ ७ ॥

और अँदेस^३ न लावे मन में ।

मौज धार नित मगन रही ॥ ८ ॥

प्रेम रंग रहे सुरत रँगिली ।

राधास्वामी सरन पई^४ ॥ ९ ॥

॥ शब्द ६ ॥

सुरतिया सिमट गई ।

गुरु दर्शन दूष्टी जोड़ ॥ १ ॥

प्रेम अंग ले करती दर्शन ।

चित चंचलता छोड़ ॥ २ ॥

मन और सुरत जमावत तिल पर ।

सुनती अनहद घोर^५ ॥ ३ ॥

निरख प्रकाश मगन^१ हुई मन में ।

अंतर दूष्टी लाई मोड़ ॥ ४ ॥

गुरु चरनन में प्यार बढ़ावत ।

छोड़त जग का मोर और तोर ॥ ५ ॥

जागत प्रेम सुनत गुरु बानी ।

थकित^२ रहे सब दूत^३ और चोर ॥ ६ ॥

राधास्वामी दयाल दया की भारी ।

आप घटाया काल का जोर ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७ ॥

सुरतिया सुनत रही ।

नित राधास्वामी बानी सार ॥ १ ॥

दीन चित्त सतसँग में आई ।

धर गुरु चरनन प्यार ॥ २ ॥

मेहर करी गुरु दिया उपदेशा ।

सुरत शब्द की जुगती सार ॥ ३ ॥

सुरत सम्हार करत अभ्यासा ।

सुनत मगन होय धुन भनकार ॥ ४ ॥

राधास्वामी सतगुरु हुए दयाला ।

दीन जान लिया गोद बिठार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

सुरतिया अचरज करत रही ।

पिरेमी जन का देख बिलास ॥ १ ॥

तज जग का भय भाव और लज्या ।

गुरु चरनन में करती बास^१ ॥ २ ॥

भक्ति भाव में निस दिन बरते^२ ।

उमँग सहित करती अभ्यास ॥ ३ ॥

प्रीति परस्पर छिन छिन पालत ।

गुरु दरशन कर बढ़त हुलास^३ ॥ ४ ॥

हरष २ सुनती गुरु बचना ।

ध्यान धरत घट होत उजास^४ ॥ ५ ॥

शब्द सुनत सुत चढ़त अधर में ।

त्रिकुटी पहुँची फोड़ अकाश ॥ ६ ॥

मुन्न महासुन भँवरगुफा लख ।

सत्त अलख और अगम निवास ॥ ७ ॥

राधास्वामी धाम पाय मगनानी^५ ।

आज हुई मेरी पूरन आस ॥ ८ ॥

॥ शब्द ९ ॥

सुरतिया करत रही ।

गुरु दर्शन सहित उमँग ॥ १ ॥

मोहित हुई सुनत गुरु बचना ।

चढ़त सवाया रंग ॥ २ ॥

भक्ती रीति लगी अब प्यारी ।

गुरु भक्तन का धारत^१ ढंग^२ ॥ ३ ॥

जग जीवन की प्रीति तियागी ।

प्रेमी जन का करती संग ॥ ४ ॥

छोड़ भिभ्रक करती गुरु सेवा ।

प्रेम गुरू छाया^३ अंग अंग ॥ ५ ॥

याद बढ़ावत नाम पुकारत ।

सहज हटावत सबहि उचंग^४ ॥ ६ ॥

रूप धियावत शब्द सुनावत ।

सुरत चढ़ावत जैसे पतंग ॥ ७ ॥

सुरत खिलावत मन बिगसावत ।

नई उठावत प्रेम तरंग ॥ ८ ॥

काल बिडारत^५ कर्म सुलावत ।

मन माया से लेती जंग^६ ॥ ९ ॥

घट में धावत आनंद पावत ।

हिय उमंगावत संसय भंग^७ ॥ १० ॥

भिभ्रक हटावत कदम बढ़ावत ।

दूत दुष्ट सब होते तंग ॥ ११ ॥

१—ग्रहण करती । २—तरीका । ३—बस गया । ४—मन की तरंगें । ५—
हटाती है । ६—लेती जंग—लड़ाई करती है । ७—नाश ।

घंटा संख सुनत हरषावत ।

पार चढ़त धस^१ नाली बंक ॥ १२ ॥

गरज मृदंग सुनत चली आगे ।

बेनी न्हावत हंसन संग ॥ १३ ॥

मुरली धुन सुन अधर सिधारी^२ ।

महाकाल रहा दंग^३ ॥ १४ ॥

सत पद पार गई निज घर में ।

राधास्वामी धाम अरूप अरंग^४ ॥ १५ ॥

राधास्वामी दिया प्रसन्न होय कर ।

प्रेम प्रसाद और भक्ति उत्तंग^५ ॥ १६ ॥

॥ शब्द १० ॥

सुरतिया खिलत रही ।

देख गुरु मनमोहन छबि आज ॥ १ ॥

दरशन करत भूल रही सुध बुध ।

छोड़ दिया सब जग का काज ॥ २ ॥

उमँग २ कर आरत गावत ।

प्रेम का पाया अद्भुत साज^६ ॥ ३ ॥

भक्ति अंग में खुल खुल बरते ।

छोड़ भिभक और कुल^७ की लाज । ४ ।

१—प्रवेश करके । २—गई । ३—हैरान । ४—रंग रहित ।

५—उत्कृष्ट, तेज । ६—सामान । ७—स्रान्दान ।

राधास्वामी दया से गई भौ पारा ।

तज दिया मन कपटी का राज ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

सुरतिया वार^१ रही ।

तन मन गुरु चरन निहार^२ ॥ १ ॥

बिमल बैराग धार कर मन में ।

छोड़ दिया संसार ॥ २ ॥

मोह जाल के बंधन काटे ।

गुरु सेवा में रहे हुशियार ॥ ३ ॥

सतसँग बचन धार कर चित में ।

मन को छिन छिन डारत मार ॥ ४ ॥

भोग अंक^३ को काटत छिन छिन ।

राधास्वामी नाम जपत हर बार ॥ ५ ॥

ध्यान लगाय बढ़ावत प्रीती ।

शब्द सुनत हियरे धर प्यार ॥ ६ ॥

घंटा संख मचावत शोरा ।

छिटक^४ रहा घट जोत उजार^५ ॥ ७ ॥

अनहद शब्द लगा अब गरजन ।

चढ़ कर पहुँची गगन मँभार^६ ॥ ८ ॥

१—निछावर कर । २—देख कर । ३—संस्कार । ४—फैल । ५—
प्रकाश । ६—में ।

द्वारा फोड़ गई अब सुन में ।

न्हार्ई मानसर मैल उतार ॥ ८ ॥

भँवरगुफा का देख उजारा ।

बीन सुनी सतगुरु दरबार ॥ १० ॥

अलख अगम के पार चढ़ाई ।

राधास्वामी चरन मिला आधार^१ ॥ ११ ॥

तन मन तोड़ किया जब सतसँग ।

भोग बासना दई निकार ॥ १२ ॥

गुरु चरनन में प्रीति घनेरी^२ ।

कीन्ही हिये से तन मन वार^३ ॥ १३ ॥

दीन गरीबी धार चित्त में ।

मन के मान दिये सब भ्राड़^४ ॥ १४ ॥

तब गुरु परसन होय मेहर से ।

अंग लगाया किरपा धार ॥ १५ ॥

अस सतसंग करे जो कोई ।

सोई जावे भोजल पार ॥ १६ ॥

राधास्वामी परम गुरु दातारा ।

पहुँचावें फिर निज घर बार ॥ १७ ॥

होय निचिन्त बसे सुख सागर^५ ।

हर दम राधास्वामी दरस निहार ॥ १८ ॥

१—अवलंब । २—बहुत । ३—निछावर करके । ४—दिये भ्राड़—दूर कर दिए । ५—समुद्र ।

अचरज नाम और अचरज रूपा ।

अचरज मेहर का वार न पार ॥ १८ ॥

लख २ भाग सराहत अपना ।

राधास्वामी चरन पकड़ रही सार^१ ॥ २० ॥

राधास्वामी दयाल सरन हिये धारी ।

उन मेहर से दिया मेरा काज सँवार ॥ २१ ॥

॥ शब्द १२ ॥

सुरतिया हरष रही ।

निरखत गुरु चरन बिलास ॥ १ ॥

बिगसत^२ खेलत संग गुरु के ।

दिन दिन बढ़त हुलास^३ ॥ २ ॥

प्रीति प्रतीति बढ़त चरनन में ।

तजत काम और भोग बिलास ॥ ३ ॥

उमँग २ कर गावत बानी ।

मगन^४ होय रह गुरु के पास ॥ ४ ॥

चित दे सुनत बचन सतसँग के ।

चेत करत घट में अभ्यास ॥ ५ ॥

मन और सुरत सिमट^५ कर चालें ।

तजत देश जहाँ माया बास^६ ॥ ६ ॥

१—उत्तम । २—प्रसन्न होती है । ३—हर्ष । ४—प्रसन्न । ५—एकाग्र हो ।

६—निवास ।

तीसर तिल धस सुनती बाजा ।

लखती जहँ वहँ जोत उजास^१ ॥ ७ ॥

गगन और धावत सुत प्यारी ।

पावत काल तरास^२ ॥ ८ ॥

अधर चढ़त सुन २ धुन अक्षर^३ ।

सुन में हंसन संग बिलास ॥ ९ ॥

भँवरगुफा धुन सुन गई आगे ।

निज सूरज संग मिला अभास ॥ १० ॥

अलख अगम लख हुई अचिन्ती ।

मिल गई प्रेमानंद^४ की रास^५ ॥ ११ ॥

प्रेम पियारी सुरत रँगौली ।

प्यारे राधास्वामी की हुई खवास^६ ॥ १२ ॥

दरशन कर अति कर मगनानी ।

पाय गई धुर धाम निवास ॥ १३ ॥

प्रेम प्रताप छाये रहा घट में ।

प्रेम स्वरूप किया हिरदे बास ॥ १४ ॥

यह गत मत है अगम अपारा ।

पावे मेहर से कोइ निज दास ॥ १५ ॥

कर सतसंग गहे^७ स्वामी सरना ।

सुरत चढ़ावे निज आकाश ॥ १६ ॥

१—प्रकाश । २—त्रास, भय । ३—अक्षर पुरुष की । ४—प्रेम व आनंद ।

५—भंडार । ६—निज सेवक । ७—लेवे ।

सुरत होय तब स्वामी प्यारी ।
 प्रेम की दीलत पावे खास^१ ॥ १७ ॥
 राधास्वामी मेहर दूष्टि से हेरें^२ ।
 प्रेम दुलार होय खासुलखास^३ ॥ १८ ॥
 जो अस दुर्लभ भक्ति कमावे ।
 जावे निज घर बिन परियास^४ ॥ १९ ॥
 सुरत निमानी^५ मेरी स्वामी सँवारी ।
 गावत उन गुन स्वाँसो स्वाँस ॥ २० ॥
 प्रेम दुलारी शब्द पियारी
 होय निहाल^६ बैठी चरनन पास ॥ २१ ॥
 दयाल सरन ले काज बनाया ।
 तज दिया जग का मोह और आस ॥ २२ ॥
 प्रेम आधार जियत सुत प्यारी ।
 जग से रहती सहज उदास ॥ २३ ॥
 धूम हुई भक्ती की भारी ।
 करम भरम सब हो गये नाश ॥ २४ ॥
 प्रेम अधारी सुरत शिरोमन ।
 आरत^७ दीपक करती चास^८ ॥ २५ ॥
 सब सखियाँ मिल आरत गावें ।
 राधास्वामी चरनन धर विश्वास ॥ २६ ॥

१—विशेष । २—देखें । ३—अत्यंत विशेष । ४—प्रयास, कठिनाई ।

५—दीन । ६—पूर्ण संतुष्ट । ७—देखिए पृष्ठ २८ नोट नं० २ । ८—तेज ।

दया करी राधास्वामी प्यारे ।

घट घट कीन्हा प्रेम प्रकाश ॥ २७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

सुरतिधा ध्याय रही ।

गुरु रूप हिये धर प्यार ॥ १ ॥

शब्द सुनत हरषत नित घट में ।

परखत मेहर अपार ॥ २ ॥

मगन होय नित गुरु गुन गावत ।

हिये से करत पुकार ॥ ३ ॥

वाह वाह मेरे गुरू दयाला ।

वाह वाह मेरे पिता दयार ॥ ४ ॥

वाह वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ।

वाह वाह मेरे सत^१ करतार ॥ ५ ॥

जस जस मेहर करी मेरे ऊपर ।

कस कस गाऊँ तुम गुन सार^२ ॥ ६ ॥

कहत कहत मोसे कहत न आवे ।

नित नित रहूँ मैं शुकरगुजार ॥ ७ ॥

लिपट रहूँ चरनन में हित^३ से ।

कभी न छोड़ूँ अमृत धार ॥ ८ ॥

चित्त रहे चरनन लौलीना^१ ।

काल करम बैठे सब हार ॥ ८ ॥

मैं अति दीन हीन और निरबल^२ ।

जियत रहूँ राधास्वामी आधार ॥ १० ॥

केल^३ कहूँ नित उनके संग ।

राधास्वामी बल ले रहूँ हुशियार ॥ ११ ॥

मैं बालक उन सरन अधारा ।

राधास्वामी किया मेरा निज उपकार^{१२}
आपहि खैंच लिया सतसँग में ।

आप दिखाया निज दीदार^४ ॥ १३ ॥

राधास्वामी महिमा कहत न आवे ।

राधास्वामी राधास्वामी कहूँ हरबार^{१४}
चरन अमी रस पियत रहूँ नित ।

राधास्वामी प्रेम रहूँ सरशार ॥ १५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सुरतिया सोच करत ।

कस जाऊँ भौ^५ के पार ॥ १ ॥

भजन ध्यान मोसे बन नहि आवे ।

काल करम बरियार^६ ॥ २ ॥

मन मलीन गुरु कहन न माने ।

छोड़त नहीं बिकार^१ ॥ ३ ॥

जगत आस में रहे बँधाना ।

और भरम रहा भोगन लार^२ ॥ ४ ॥

चिंता में रहे अधिक भुलाना ।

गुरु का वचन न माने सार ॥ ५ ॥

जग कारज नित प्रती सतावे ।

चिंता संग रहे बीमार ॥ ६ ॥

गुरु दयाल नित कहत पुकारी ।

घट में ले उपदेश सम्हार ॥ ७ ॥

यह मन चंचल बूझ^३ न लावे ।

जग में भरमे जुगत बिसार ॥ ८ ॥

मुझ निरबल की पेश न जावे ।

मेहर करो हे गुरु दयार ॥ ९ ॥

ऐसी दया करो मेरे दाता ।

चरनन में रहूँ नित हुशियार ॥ १० ॥

ध्यान धरत मोहि मिले अनंदा ।

शब्द सुनत मन होय सरशार ॥ ११ ॥

काल बिघन सब दूर हटाओ ।

मेहर से मुझको लेव सम्हार ॥ १२ ॥

चरन सरन हिये दूढ़ कर धारूँ ।
 रहूँ दया का भरोसा धार ॥१३॥
 गुरु दयाल सब काज सँवारें ।
 बिरथा^१ चिन्ता देऊँ बिसार ॥१४॥
 जो कुछ होय मौज से गुरु के ।
 ता में परखूँ दया बिचार ॥१५॥
 भक्ती रीत सम्हारूँ निस दिन ।
 प्रेम की दौलत पाऊँ अपार ॥१६॥
 दरशन की रहूँ उमँग जगाई ।
 सेवा करूँ हिये धर प्यार ॥१७॥
 परमारथ का भाग बढ़ाऊँ ।
 गाऊँ गुरु गुन बारम्बार ॥१८॥
 सुरत रहे चरनन में लागी ।
 घट में निरखूँ बिमल बहार^२ ॥१९॥
 अपना कर मोहि लेव सम्हारी ।
 मन के देव बिकार निकार ॥२०॥
 काल करम से खूँट छुड़ाओ ।
 निरमल कर लेव गोद बिठार ॥२१॥
 यह अरज़ी मानो अब मेरी ।
 राधास्वामी प्यारे सत करतार ॥२२॥

॥ शब्द १५ ॥

सुरतिया उमँग भरी ।
 होली खेलत आज नई ॥ १ ॥
 जग का मैला रंग निकारत ।
 निरमल धार बही ॥ २ ॥
 हिये में निस दिन प्रीति बसावत ।
 जग का मोह बिसार^१ दई ॥ ३ ॥
 प्रेम रंग ले खेलत गुरु से ।
 अचरज होली आज सही^२ ॥ ४ ॥
 सुरत रँगीली चढ़त अधर में ।
 गगना ओर गई ॥ ५ ॥
 गुरु स्वरूप का दरशन करके ।
 उमँग उमँग अब चरन पई^३ ॥ ६ ॥
 राधास्वामी दया निरख कर ।
 हिये में मगन भई ॥ ७ ॥

॥ शब्द १६ ॥

सुरतिया मगन हुई ।
 घट शब्द का आनंद पाय ॥ १ ॥
 तन मन से गुरु सेवा करती ।
 हिये में उमँग जगाय ॥ २ ॥

सतसँग बचन चित्त से सुनती ।

मनन करत मन को समझाय ॥ ३ ॥

करनी की अभिलाषा भारी ।

सुरत सम्हार शब्द सँग धाय ॥ ४ ॥

मन को मोड़त^१ तन को तोड़त^२ ।

अमृत रस घट पियत अघाय^३ ॥ ५ ॥

जब तब माया देत झकोले ।

गुरु का बल ले ताहि^४ हटाय ॥ ६ ॥

राधास्वामी दया परख कर घट में ।

सहज सहज जिव काज बनाय । ७ ॥

॥ भाग २ ॥

॥ शब्द १ ॥

पिरेमी सुरत रँगीली आय ।

दिया सतसँग में प्रेम जगाय ॥ १ ॥

दरस गुरु पाय मगन होती ।

बचन सुन मल^५ हिये से धोती^६ ॥ २ ॥

बढ़ावत सतसँगियन से प्रीत ।

पकावत हिये में गुरु परतीत ॥ ३ ॥

हरषती निरखत गुरु सजना ।

फड़कती गावत गुरु बचना ॥ ४ ॥

१—संसार से हटाती । २—बश में करती । ३—वृत्त होकर । ४—उसको ।

५—मैल । ६—साफ करती ।

गुरू की शोभा निरख निहार ।

मगन होय डारत तन मन वार ॥ ५ ॥

भाव नित नया नया दिखलाती ।

गुरू की छवि पर बल जाती ॥ ६ ॥

लगा अब रूखा^१ जग व्योहार ।

मिला परमारथ सार का सार ॥ ७ ॥

प्रेम का किनका गुरू दीना ।

सुरत रहे चरनन ली^२ लीना^२ ॥ ८ ॥

बिनय करूँ राधास्वामी चरनन में ।

प्रीति रहे बाढ़त दिन दिन में ॥ ९ ॥

मिले नित घट में रस आनंद ।

कटें सब काल करम के फंद ॥ १० ॥

सुरत रहे चरनन में लागी ।

रहे मन निस दिन अनुरागी ॥ ११ ॥

हुए परशन राधास्वामी दयाल ।

मेहर से कीना मोहि निहाल ॥ १२ ॥

उमँग कर आरत सामाँ लाय ।

धरे सब गुरू के सन्मुख आय ॥ १३ ॥

चमक और दमक के बस्तर लाय ।

मगन होय गुरू को दिये पहिनाय ॥ १४ ॥

निरख छवि हरख हुआ भारी ।
 दया पर छिन छिन बलिहारी ॥१५॥
 आरती^१ गाई उमंग उमंग ।
 सुरत मन रंगे प्रेम के रंग ॥१६॥
 हंस सब जुड़ मिल नाच रहे ।
 मधुर धुन बाजे बाज रहे ॥१७॥
 हुई सतसंग में भारी धूम ।
 नाच रहे सब मिल भूम और घूम ॥१८॥
 प्रेम की बरषा चहुँ दिस होय ।
 सुरत रही सबकी चरन समोय^२ ॥१९॥
 सुद्ध बुध देह बिसार^३ रहे ।
 गुरु पर तन मन वार रहे ॥२०॥
 सुरत मन उमंग अधर चढ़ते ।
 गगन में गुरु दर्शन करते ॥२१॥
 अजब यह और आया हाथ ।
 सुरत मन नाचत गुरु के साथ ॥२२॥
 सुन्न और महासुन्न के पार ।
 सुरत गई सत्तपुरुष दरबार ॥२३॥
 अलख और अगम के पार ठिकान ।
 चरन राधास्वामी परसे^४ आन ॥२४॥

१—देखिये पृष्ठ २८ नोट नं० २ । २—रही समोय—लीन हो रही ।

३—भुला । ४—स्पर्श किए ।

दया राधास्वामी की भारी ।

हुए सब प्रेमी सुखियारी ॥२५॥

॥ शब्द २ ॥

पिरेमन लाई आरती साज ।

दिया गुरु भक्तिभाव का दाज^१ ॥ १ ॥

प्रीति हिये अंतर जाग रही ।

सुरत घट धुन सँग लाग रही ॥ २ ॥

काल ने दीन्हा बहु भक्कभोर^२ ।

मेहर हुई कट गया उसका जोर ॥ ३ ॥

दया से करती नित सतसंग ।

बचन सुन बाढ़त चित्त उमंग ॥ ४ ॥

जगत का देखा भूठा खेल ।

करूँ अब प्रेमी जन से मेल ॥ ५ ॥

जगत जिव स्वारथ के बन्दे^३ ।

फँसे सब काल करम फंदे ॥ ६ ॥

सुद्ध परमारथ की नहि लाय ।

संत का बचन न चित ठहराय ॥ ७ ॥

करें गुरु निदा दिन और रात ।

पिरेमी जन से करें उत्पात^४ ॥ ८ ॥

संग उन चित से नहि चाहूँ ।

बचन उन नेक^१ न मन लाऊँ ॥ ८ ॥

करूँ गुरु भक्ती उमँग उमँग ।

प्रेम का धारूँ हिरदे रंग ॥१०॥

करे प्यारे राधास्वामी मेरी सहाय ।

काल के बिघन से लेहि बचाय ॥११॥

प्रीति चरनन की नित बढाय ।

सुरत मन देवें अधर चढाय ॥१२॥

सहसदल लखे जोत उजियार ।

संख और घंटा संग पियार ॥१३॥

गगन चढ़ सुने गरज मिरदंग ।

सुन्न में बाजे धुन सारंग ॥१४॥

भँवर चढ़ पहुँची सतपुर धाय ।

पुरुष का दर्शन अद्भुत पाय ॥१५॥

परे चढ़ निरखा राधास्वामी धाम ।

वही है अकह अपार अनाम ॥१६॥

मेहर बिन कस पावे यह ठाम^२ ।

दया बिन मिले नहीं निज नाम ॥१७॥

दिया मेरा राधास्वामी भाग जगाय ।

मेहर से लीन्हा मोहि अपनाय ॥१८॥

चरन में राधास्वामी खेलूँ नित्त ।

धार रहूँ राधास्वामी बल निज चित्त । १८ ।

॥ शब्द ३ ॥

बिरहनी सुरत हिये धर प्यार ।

उमँग कर आई गुरु दरबार ॥ १ ॥

नेम से दरशन करती नित्त ।

चरन में धरती हित^१ कर चित्त ॥ २ ॥

रहे यह चिन्ता चित्त समान ।

जीव का होवे कस कल्याण ॥ ३ ॥

करत नित प्रति अभ्यास सम्हार ।

सुधारत मन को इच्छा मार^२ ॥ ४ ॥

भोग जग चित से देत बिसार ।

बचन गुरु सुन २ करत बिचार ॥ ५ ॥

तजत छिन २ मन माया देश ।

शब्द में करत सुरत परवेश ॥ ६ ॥

संख और घंटा धुन सुनती ।

सुरत मन खैंच अधर धरती ॥ ७ ॥

सूर लख चंद्र का दर्शन पाय ।

गुफा चढ़ सोहं शब्द सुनाय ॥ ८ ॥

पुरुष का दर्शन सतपुर कीन ।

सुनी वहाँ मधुर २ धुन बीन ॥ ८ ॥

परे तिस^१राधास्वामी दर्शन पाय ।

लिया मोहि अपने चरन लगाय ॥ १० ॥

आरती^२ चरनन में धारी ।

मेहर मोपै राधास्वामी की भारी ॥ ११ ॥

काज मेरा सब बिधि पूरा कीन ।

सुरत हुई राधास्वामी चरनन लीन ॥ १२ ॥

॥ शब्द ४ ॥

गुरु की धर हिये में परतीत ।

बढ़ावत दिन दिन चरनन प्रीत ॥ १ ॥

ध्यान धर मन होवत निश्चल ।

भजन कर चित होवत निर्मल ॥ २ ॥

सरन गह करम होत निष्फल ।

बचन सुन दूर भरम कलमल^३ ॥ ३ ॥

जगत का देख तमाशा आय ।

भोग जग आसा गई बिलाय^४ ॥ ४ ॥

धरत मन दर्शन की आसा ।

चहत मन चरनन में बासा ॥ ५ ॥

१—उसके । २—देखिए पृष्ठ २८ नोट नं० २ । ३—काल के मैल । ४—छिप गई ।

शब्द का मारग जाना सार ।

नेम ले^१ करत अभ्यास सम्हार ॥ ६ ॥

मेहर गुरु माँग रहा निस दिन ।

सुरत मन घट में करें दरशन ॥ ७ ॥

सिमट कर चढ़ें गगन की ओर^२ ।

सुनें धुन घंटा और घनघोर ॥ ८ ॥

परे जाय सुन में निरख बिलास ।

अधर चढ़ करें भँवर गढ़ बास ॥ ९ ॥

परे लख सत्तपुरुष का नूर^३ ।

अलख और अगम का पाय सूर^४ ॥ १० ॥

अचल घर राधास्वामी चरन रली ।

मेहर हुई पिया से जाय मिली ॥ ११ ॥

॥ शब्द ५ ॥

प्रेम गुरु रहा हिये में छाया ।

सुरत अब नई २ उमँग जगाय ॥ १ ॥

चहत नित सतगुरु का सतसंग ।

सुरत मन भीज रहे गुरु रंग ॥ २ ॥

बचन सुन होत मगन मन सूर^५ ।

करम और भरम हुए सब दूर ॥ ३ ॥

१—नेम से—नियम पूर्वक । २—तरफ । ३—प्रकाश । ४—आनन्द । ५—

निरखती मन इंद्री की चाल ।

करन चहे दूतन को पामाल^१ ॥ ४ ॥

निरख कर धारत गुरु का ढंग ।

परख कर भ्राड़त माया रंग ॥ ५ ॥

जगत का परखत फीका रंग ।

समझ कर त्यागत सबहि कुसंग ॥ ६ ॥

चरन गुरु हर दम याद बढ़ाय ।

रूप गुरु रखती हिये बसाय ॥ ७ ॥

काल रहा डारत बिघन अनेक ।

काट रही धर सतगुरु की टेक ॥ ८ ॥

गढ़त मेरी राधास्वामी करते आप ।

दया का अपने धर कर हाथ ॥ ९ ॥

पिता प्यारे राधास्वामी दीनदयाल ।

अनेक बिधि^२ कर रहे मेरी सम्हाल ॥ १० ॥

गाउँ क्या महिमा उनकी सार ।

दर्ई मोहि चरन सरन कर प्यार ॥ ११ ॥

बिना राधास्वामी और न कोय ।

लेय जो मन मलीन को धोय ॥ १२ ॥

अबल^३ मैं कस उन गुन गाऊँ ।

चरन पर नित बल बल जाऊँ ॥ १३ ॥

भरोसा मेहर का हियरे धार ।

जिऊँ मैं राधास्वामी नाम आधार ॥१४॥

तड़प दर्शन की उठत हर बार ।

बिबस^१ मैं बैठ रहूँ मन मार ॥१५॥

चरन गहि अंतर में धाऊँ ।

दरस राधास्वामी वहँ पाऊँ ॥१६॥

करो प्यारे राधास्वामी ऐसी मेहर ।

सुरत मन चरनन में रहैं ठहर । ॥१७॥

पाउँ रस घट में नित नवीन^२ ।

केल^३ करूँ धुन सँग जस जल मीन^४ ॥१८॥

गाउँ नित आरत प्रेम भरी ।

सुरत रहे राधास्वामी चरन अड़ी ॥१९॥

करो प्यारे राधास्वामी मेहर बनाय ।

लेव सब जीवन चरन लगाय ॥२०॥

करें तुम आरत^५ धर कर प्यार ।

गायें नित राधास्वामी नाम दयार ॥२१॥

॥ शब्द ६ ॥

करूँ गुरु सतसँग नित अली^६ ।

खटक परमारथ चित्त खली^७ ॥ १ ॥

१—बिबस, लाचार । २—नया । ३—बिलास । ४—मछली । ५—देखिए पृष्ठ २८ नोट नं० २ । ६—सखी । ७—खटकती है ।

कुटुंब संग करूँ सतसंग सम्हार ।

शब्द का मन में धारूँ प्यार ॥ २ ॥

जगत का भय और भाव तियाग ।

करूँ भोगन से अब बैराग ॥ ३ ॥

चरन में राधास्वामी धर अनुराग ।

सुरत मन दोऊ उठे अब जाग ॥ ४ ॥

शब्द धुन सुन सुन होत मगन ।

कहत राधास्वामी सतगुरु धन धन ॥ ५ ॥

बिरह दरशन की जाग रही ।

जगत से छिन छिन भाग रही ॥ ६ ॥

काल ने डाले बिघन अनेक ।

काट दिये गह' सतगुरु की टेक ॥ ७ ॥

उमँग सेवा की हिये बसाय ।

करूँ मैं जब तब औसर पाय ॥ ८ ॥

गुरु से माँगूँ प्रेम की दात ।

दया का चाहूँ सिर पर हाथ ॥ ९ ॥

दीनता साँची मन में लाय ।

रहूँ नित गुरु की भक्ति कमाय ॥ १० ॥

पिरेमी जन से नाता जोड़ ।

रहूँ जग जीवन से मुख मोड़^१ ॥ ११ ॥

उमँग कर आरत गाऊँ नित्त ।

सरन राधास्वामी धारूँ चित्त ॥१२॥

॥ शब्द ७ ॥

प्रेम की महिमा क्या गाई ।

हिये में सीतलता छाई ॥ १ ॥

प्रेम जिस घट में किया परकास ।

गया तम^१ हुआ शब्द उजियास ॥ २ ॥

पिरीतम^२ हिरदे में बसिया ।

सुरत मन चरन लाग रसिया^३ ॥ ३ ॥

प्रेम राधास्वामी चरनन लाय ।

हिये में निस दिन आनँद पाय ॥ ४ ॥

प्रीति गुरु चरनन आन धरी ।

सुरत घट धुन सँग गगन भरी^४ ॥ ५ ॥

लगा वाहि गुरु सतसँग प्यारा ।

हुआ मन जग से अब न्यारा ॥ ६ ॥

बचन सुन जग उगलत^५ मनुआँ ।

चढ़त नित घट में गह धुनुआँ ॥ ७ ॥

सुनत सतसँग की महिमा सार ।

सुरत आई उमँगत गुरु दरबार ॥ ८ ॥

१—अंधकार । २—प्रीतम । ३—रस लेने वाले । ४—प्रवेश की । ५—बाहर

निकालता है अर्थात् संसार का मोह दूर करता है ।

प्रीति हिये भर भर करती सेव^१ ।
 धरत परतीत चरन गुरु देव ॥ ८ ॥
 सुनत गुरु बचन धार अनुराग ।
 भोग जग देती मन से त्याग ॥ ९ ॥
 करत नित भजन बिरह अँग लाय ।
 शब्द सँग सूरत नित रस पाय ॥ १० ॥
 दया गुरु घट में परख रही ।
 चाल मन इंद्री निरख रही ॥ ११ ॥
 रूप गुरु हिये में ध्याय रही ।
 सरन गुरु मन में पकाय रही ॥ १२ ॥
 पाय घट आनंद चरन बिलास ।
 चरन गुरु बढ़ता नित बिश्वास ॥ १३ ॥
 उमँग अँग आरत^२ गुरु धारी ।
 हुए अब तन मन सुखियारी ॥ १४ ॥
 मेहर की दृष्टि करी गुरु ने ।
 सुरत मन लागे घट चढ़ने ॥ १५ ॥
 तोड़ तिल गई सुरत नभ^३ माहि ।
 जोत लख मिटी काल की दाय^४ ॥ १६ ॥
 गगन चढ़ शब्द गुरु दरशन ।
 मिले और वारा^५ तन मन धन ॥ १७ ॥

१—सेवा । २—देखिए पृष्ठ २८ नोट नं० २ । ३—सहसदलकमल । ४—रौंद ।

५—निष्ठावर कर दिया ।

सुन्न में चढ़ गई सुरत अकेल ।

करत वहँ हंसन सँग अब केल^१ ॥१८॥

भँवर में गई महासुन पार ।

सुनी धुन सोहं मुरली सार ॥२०॥

सत्तपुर दरशन सतपुर्ष पाय ।

बीन धुन सुनत रही हरषाय ॥२१॥

वहाँ से अलख के पार गई ।

अगमलख राधास्वामी चरन पई^२ ॥२२॥

वहीं है राधास्वामी का निज धाम ।

परम गुरु संतन का बिसराम ॥२३॥

मिला वहाँ अद्भुत भक्ती साज ।

सुरत का हो गया पूरा काज ॥२४॥

दया गुरु मिला निज घर येही ।

शब्द में सूरत जब देई^३ ॥२५॥

करी यहँ आरत राधास्वामी जोर^४ ।

सुरत हुई प्रेम रंग सरबोर ॥२६॥

परम पुर्ष राधास्वामी हुए सहाय ।

लिया मोहि अपनी गोद बिठाय ॥२७॥

॥ शब्द ८ ॥

प्रेम की दौलत अपर अपार ।

प्रेम से मिलता सिरजनहार^१ ॥ १ ॥

प्रेम बिना सब भूँठा ध्यान ।

प्रेम बिना सब थोथा^२ ज्ञान ॥ २ ॥

प्रेम बिना सब बानी रीती^३ ।

प्रेम से काल करम को जीती ॥ ३ ॥

प्रेम से मन माया बस आये ।

प्रेम से सूरत अधर चढ़ाये ॥ ४ ॥

प्रेम निकारे सबहि बिकार ।

प्रेम से होवे जग से न्यार ॥ ५ ॥

प्रेम से दीखे घट में नूर ।

प्रेम रहा घट घट भरपूर ॥ ६ ॥

प्रेम की महिमा सबसे भारी ।

प्रेम बिना सब पच पच हारी ॥ ७ ॥

प्रेम बिना सब थोथी कार^४ ।

प्रेम से उतरे भौजल पार ॥

प्रेम की बखिशाश दें राधास्वामी ॥ ८ ॥

१—कर्तार, मालिक । २—व्यर्थ । ३—खाली, निरर्थक । ४—काररवाई ।

॥ शब्द ८ ॥

राधास्वामी दाता दीनदयाला ।

दास दासी को लेव सम्हाला ॥ १ ॥

बहु दिन जग में भटका खाया ।

मेहर हुई अब चरन लगाया ॥ २ ॥

दया करी तुम दोउ पर भारी ।

बिरह अग्नि चिनगी हिये डारी ॥ ३ ॥

किरपा कर उसको सुलगाओ ।

बुझने न पावे अस मेहर कराओ ॥ ४ ॥

माया घर सब फूँक जलाओ ।

मन को निकालो अधर चढ़ाओ ॥ ५ ॥

सुरत पड़ी जो इसके बस में ।

ताहि पहुँचाओ द्वारे दस में ॥ ६ ॥

हंस हंसनी सँग करे बिलासा ।

देखे अचरज बिमल तमाशा ॥ ७ ॥

यह मन कच्चा बूझ^१ न लावे ।

कभी सीधा कभी उलटा धावे ॥ ८ ॥

भोगन की जब तरँग उठावे ।

सतसँग वचन वहीं बिसरावे^२ ॥ ९ ॥

अनेक ख्याल में रहे भरमाई ।

अनेक काज की चिन्ता लाई ॥१०॥

बिरह प्रेम तब जाय छिपाई ।

जग कारज का रूप धराई ॥११॥

भजन ध्यान में सूखा फीका ।

घट में रस नहि पावत नेका^१ ॥१२॥

अस हालत जब मन की होई ।

बेकली और घबराहट दोई ॥१३॥

बाढ़ें चित में चैन न आवे ।

तड़प तड़प जिया बहु घबरावे ॥१४॥

अस अस भय मन माहि समाई ।

दया मेहर क्या खिच^२ गई भाई ॥१५॥

फिर जब जग कारज हुआ पूरा ।

भूलके प्रेम बिघन हुआ दूरा ॥१६॥

गुरु चरनन में प्रीति जगानी ।

राधास्वामी दया सत्त कर मानी ॥१७॥

ऐसे भूकोले आवें जावें ।

कभी सूखा^३ कभी प्रेम दिखावें ॥१८॥

इस बिधि मन शान्ती नहि लावे ।

डिगमिग डिगमिग भोके^४ खावे ॥१९॥

गहरी दया करो मेरे प्यारे ।

प्रेम के खोल देव भंडारे ॥२०॥

निस दिन रहूँ चरन लौलीना ।

केल^१ करूँ जस जल सँग मीना^२ ॥२१॥

जग कारज मोहि अब न सतावें ।

चिन्ता डर मोहि नहिं भरमावें ॥२२॥

प्रेम धार रहे हरदम जारी ।

धुन सँग सुरत की लागे ताड़ी^३ ॥२३॥

जब चाहूँ तब रस लेऊँ भारी ।

अमी धार सँग भीजूँ सारी ॥२४॥

ऐसी मेहर करो स्वामी प्यारे ।

शब्दारस घट पाऊँ सदा रे ॥२५॥

चरन बिना नहिं और अधारे ।

हरष हरष गुन गाऊँ तुम्हारे ॥२६॥

जो यह झकोले मीज से आवें ।

बिरह जगा नशा हजम करावें ॥२७॥

तौ चरनन में दूढ़ बिश्वासा ।

देव छुड़ाय काल घर बासा ॥२८॥

झोनी याद प्रेम सँग मन में ।

बनी रहे नहिं भूले छिन में^४ ॥२९॥

राधास्वामी राधास्वामी नित नित गाऊँ ।
चरन सरन पर बल बल जाऊँ ॥३॥

॥ शब्द १० ॥

राधास्वामी सत^१ मत जिसने धारा ।
सहज हुआ उन जीव उधारा ॥ १ ॥

राधास्वामी चरन सरन सत धारी ।
वही जीव उतरे भी पारी ॥ २ ॥

सुरत शब्द की जो करे करनी ।
वही जीव भीसागर तरनी ॥ ३ ॥

प्रीति प्रतीति चरन में लावे ।
राधास्वामी दया सोई जिव पावे ॥ ४ ॥

सतगुरु से जो प्रेम लगावे ।
राधास्वामी चरनन जाय समावे ॥ ५ ॥

गुरु की प्रीति तुड़ावे बंधन ।
सहजहि वारे तन मन और धन ॥ ६ ॥

जग का मोह सहज में छूटे ।
तन मन बंधन बहु बिधि^२ टूटे ॥ ७ ॥

बिरह अंग ले करे अभ्यासा ।
प्रेम पंख ले उड़े अकाशा ॥ ८ ॥

गुरु सरूप का धर कर ध्याना ।

ताके^१ घट में बिमल निशाना ॥ ८ ॥

प्रीति सहित जो करे यह करनी ।

सुरत निरत^२ निज पद में धरनी ॥ ९ ॥

माया बिघन न लागे कोई ।

शब्द रूप में सुरत समोई ॥ १० ॥

निस दिन घट में आनँद पावे ।

राधास्वामी की महिमा गावे ॥ ११ ॥

मेहर दया का धार भरोसा ।

चित को अपने छिन छिन पोसा^३ ॥ १२ ॥

भोग वासना मन से टारे ।

मगन रहे चरनन आधारे ॥ १३ ॥

मौज गुरु की सदा निहारे ।

रजा^४ गुरु की सदा सम्हारे ॥ १४ ॥

सतगुरु रक्षक तन मन प्राण ।

सतगुरु देवें भक्ती दान ॥ १५ ॥

बिना मौज गुरु कुछ नहि होवे ।

मौज आसरे निरभय^५ सोवे ॥ १६ ॥

जिसको हुई अस गुरु परतीती ।

सोइ जन काल करम को जीती ॥ १७ ॥

१—स्थिर होकर दृष्टि जमावे । २—सुरत का बाहर का ज्ञान लेने वाला व निर्णय करने वाला अंग । ३—पुष्ट किया । ४—प्रसन्नता । ५—निडर ।

जब कभी मन और चित घबरावे ।
 घट में चरन और को धावे ॥१८॥
 और प्रार्थना करे घनेरी^१ ।
 देव सहारा काटो बेड़ी^२ ॥२०॥
 बहु बिधि करम किये मन साथी ।
 सो सतगुरु काटें दे हाथा^३ ॥२१॥
 कोइ दिन करम भोग हट जावें ।
 मेहर करें जल्दी भुगतावें ॥२२॥
 जब गुरु में हुआ गहरा प्यार ।
 शब्द भेद तब मिलिया सार ॥२३॥
 मन और सुरत चढ़ें ऊँचे को ।
 उलट न देखें फिर नीचे को ॥२४॥
 राधास्वामी चरनन बड़े पिरीती ।
 धारे मन में दूढ़ परतीती ॥२५॥
 सतसंगी सब प्यारे लागें ।
 गहरी प्रीति परस्पर^४ पालें ॥२६॥
 दया भाव जीवन में आवे ।
 सुरत अंस घट घट नज़रावे ॥२७॥
 सहज बिरोध अंग छुट जावे ।
 हसद^५ ईर्ष्या नाहि सतावे ॥२८॥

मन में रहे कोई नहि इच्छा ।

यही आस मालिक मिले सच्चा ॥२८॥

यही आस बड़े दिन दिन मन में ।

मालिक का दर्शन मिले तन में ॥३०॥

काम क्रोध अस दूर बहावे ।

राधास्वामी चरन सरन लिपटावे ॥३१॥

भरम और कपट होयँ अस दूर ।

घट घट दीखे सत का नूर^१ ॥३२॥

जागत रहे उमंग नवेली^२ ।

प्रेम रंग रहे सुरत रँगिली ॥३३॥

दीन गरीबी मन में धारे ।

प्रीति अंग घट में बिस्तारे^३ ॥३४॥

सब जीवन सँग धरे पियारा ।

यह भी लागे सबको पियारा ॥३५॥

बाल दशा होय जग में बरते ।

मन में अकड़ पकड़ नहि धरते ॥३६॥

होय निःकर्म सबन से न्यारा ।

राधास्वामी बिन नहि और सहारा ॥३७॥

संसय भरम न राखे कोई ।

मन में कभी निरास न होई ॥३८॥

दूढ़ बिश्वास चरन में धारे ।
 मुक्ति आपनी होत निहारे ॥३८॥
 गुरु दयाल भी पार उतारें ।
 कुल कुटुम्ब को भी ले तारें ॥४०॥
 क्या महिमा गुरु भक्ती गाऊँ ।
 गुरु की दया अपार सुनाऊँ ॥४१॥
 निर्मल भक्ति करे सोइ सूर^१ ।
 काज करें वाका^२ गुरु पूरा ॥४२॥
 तासे बार बार कहूँ बचना ।
 गुरु भक्ती सम और न जतना ॥४३॥
 याते सब कारज होयँ पूरे ।
 करम काट पहुँचे घर सूर^३ ॥४४॥
 गृहस्त होय चहे हो बैरागी ।
 गुरु चरनन में जो लीं लागी ॥४५॥
 पुरुष होय चहे स्त्री होई ।
 गुरु के संग प्रीति करे सोई ॥४६॥
 सतगुरु वाका करें उधारा ।
 मेहर दया से लेहि सुधारा ॥४७॥
 सब जीवों को चाहिये ऐसी ।
 गुरु सँग प्रीति करें जैसी तैसी ॥४८॥

तौ उनका भी कारज सरई^१ ।

भौसागर वे इक दिन तरई ॥४८॥

जग में जम^२ का जोर घनेरा ।

जीव करें चौरासी फेरा ॥५०॥

कोई जीव बचने नहि पावें ।

सतगुरु बिन सब भटका खावें ॥५१॥

बड़भागी जाय सतगुरु भेंटे ।

चरन भेद दे घट में खेंचें ॥५२॥

सुरत शब्द का भेद सुनावें ।

ध्यान भजन की जुगत लखावें ॥५३॥

सहसदल कँवल जोत दरसावें ।

अनहद घंटा संख सुनावें ॥५४॥

बंकनाल धस त्रिकुटी तीर^३ ।

सुरत चढ़ी मिला पद गंभीर ॥५५॥

लाल सूर जहाँ गुरु का रूपा ।

ओंकार पद त्रिकुटी भूपा ॥५६॥

सुन में लखा चंद्र अस्थान ।

अक्षर पुरुष रकार निशान ॥५७॥

किंगरी बाजे और सारंग ।

छोड़े नीचे गरज मृदंग ॥५८॥

महासुन्न होय गई गुफा में ।

सोहं धुन सुनी सुरत सफ़ा में ॥५८॥

सत्तलोक का द्वारा सोई ।

आगे चढ़ सुत शब्द समोई^१ ॥६०॥

सत्तलोक सतपुर्ष निवास ।

हंस करें जहाँ सदा बिलास ॥६१॥

आगे अलख पुरुष दरबारा ।

तिस परे अगम लोक इक न्यारा ॥६२॥

तिस के परे लखा धुर धाम ।

अकह अपार अगाध अनाम ॥६३॥

हैरत रूप अथाह दवाम^२ ।

राधास्वामी का जहाँ बिसराम ॥६४॥

हरष हरष सुत अति मगनानी ।

राधास्वामी चरन समानी ॥६५॥

॥ शब्द ११ ॥

उठत मेरे मन में नित उचंग^३ ।

रहूँ नित गुरु के संग निसंक^४ ॥ १ ॥

प्रेम का किनका बख़िश देव ।

सर्व अँग मोहि अपना कर लेव ॥ २ ॥

निकारो मन के सबहि बिकार ।

चुवाओ घट में अमृत धार ॥ ३ ॥

बिना तुम मेहर रहूँ कंगाल^१ ।

प्रेम की दीजै दात दयाल ॥ ४ ॥

धरो नहि औगुन चित्त दयाल ।

दया कर कीजै आज निहाल ॥ ५ ॥

सरन में तुम्हरे जब आया ।

सुरत और शब्द भेद पाया ॥ ६ ॥

काल से नाता टूट गया ।

करम का लेखा^२ छूट गया ॥ ७ ॥

मौज से तुम्हरे होय सो होय ।

दूसरा करनहार नहि कोय ॥ ८ ॥

बिनय सुनो राधास्वामी गुरु प्यारे ।

देव मोहि चरनन आधारे ॥ ९ ॥

प्रेम रँग भीज रहे मन मोर ।

सुरत चढ़े पकड़ शब्द की डोर ॥ १० ॥

लेउँ नित घट में रस आनंद ।

फसूँ नहि कबही माया फंद ॥ ११ ॥

अर्ज यह राधास्वामी करो मंजूर ।

रखो मोहि हाज़िर चरन हज़ूर ॥ १२ ॥

॥ शब्द १२ ॥

सुरत पियारी शब्द अधारी ।

करत आज सतसंग ॥ १ ॥

बिरह अंग ले सनमुख आई ।

चित में धार उमंग ॥ २ ॥

जगत भोग से कर बैरागा ।

तज दिया माया रंग ॥ ३ ॥

रहत उदास चित्त में निस दिन ।

क्योंकर छुटे कुसंग ॥ ४ ॥

बिघन अनेक डालता काला ।

माया करती कारज भंग^१ ॥ ५ ॥

भजन ध्यान कुछ बन नहि आवत ।

मनुआँ रहता तंग^२ ॥ ६ ॥

दया करो गुरु लेव सम्हारी ।

मोड़ो याका अंग ॥ ७ ॥

चरन सरन गुरु दूढ़ कर धारे ।

घट मे होय असंग^३ ॥ ८ ॥

शब्द माहि नित रहे लीलीना ।

सुरत चढ़े मेरी जैसे पतंग ॥ ९ ॥

ऐसी दया करो मेरे प्यारे ।
 भक्ति करूँ मैं होय निसंक^१ ॥१०॥
 राधास्वामी चरनन बासा पाऊँ ।
 माया के उतरें सबहि कुरंग^२ ॥११॥

॥ शब्द १३ ॥

सुरत रँगीली सतगुरु प्यारी ।
 लाई आरती धार ॥ टेक ॥
 उमँग उमँग कर सेवा करती ।
 धर गुरु चरनन प्यार ॥ १ ॥
 दरशन करत फूलती तन में ।
 चरनन पर जाती बलिहार ॥ २ ॥
 सतसँग सतगुरु प्यारे लागे ।
 बचन सुनत हुशियार ॥ ३ ॥
 सतसँगियन से हेल मेल कर ।
 देखत बिमल बहार ॥ ४ ॥
 सुरत शब्द का ले उपदेशा ।
 करत अभ्यास सम्हार ॥ ५ ॥
 सुन सुन धुन मोहित हुई मन में ।
 निरखत घट उजियार ॥ ६ ॥

राधास्वामी दया करी अब ।

लीन्हा गोद बिठार ॥ ७ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सुरत प्यारी गुरु सनमुख आई ।

आरती प्रेम सहित गाई ॥ १ ॥

करत सतसँगियन सँग प्रीती ।

धार गुरु चरनन परतीती ॥ २ ॥

नित्त गुरु सतसँग में रहे जाग ।

बढ़ावत परमारथ का भाग ॥ ३ ॥

समझ सतसँग को निज सुख रास ।

कुटँबसँग चहत चरन में बास ॥ ४ ॥

गुरु को छिन छिन कर परसन्न ।

चरन पर वारत तन मन धन ॥ ५ ॥

दीन दिल करत गुरु की सेव ।

निमाना माँगत दया गुरु देव ॥ ६ ॥

बाल को जस पित मात प्रिये ।

धरत अस राधास्वामी सरन हिये ॥ ७ ॥

चरन में खेलूँ धर बिश्वास ।

करें राधास्वामी पूरन आस ॥ ८ ॥

मेहर से देव पिता प्यारे संग ।

करूँ तुम भक्ती उमँग उमँग ॥ ९ ॥

होयँ सब बिधि मेरे कारज पूर ।
रहूँ मैं राधास्वामी चरन हज़ूर ॥१०॥

॥ शब्द १५ ॥

भाग भरी सुत सतसँग करती ।
गुरु चरनन लिपटाय ॥ १ ॥
दरशन करती दूष्टि जोड़ कर ।
घट में प्रेम बढ़ाय ॥ २ ॥
हिये में छिन छिन बिरह जगाती ।
नैनन जल भर लाय ॥ ३ ॥
सतसँगियन से हेल मेल कर ।
नित नई प्रीति जगाय ॥ ४ ॥
जगत भोग से होय उदासा ।
परमारथ में लगन^१ लगाय ॥ ५ ॥
दीन अधीन करत नित सेवा ।
चित में भाव बसाय ॥ ६ ॥
चरन सरन राधास्वामी दूढ़ कर ।
दया भरोसा लाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द १६ ॥

भूलत घट में सुरत हिंडोला ।
बाजत अनहद शब्द अमोला^२ ॥ १ ॥

धुन की डोरी लगी अधर^१ में ।

सुरत निरत^२ रही भाँक उधर में ॥ २ ॥

सखी सहेली सब सँग आई ।

गगन मँडल में उमँग समाई ॥ ३ ॥

अमी धार बरसत चहुँ ओरी^३ ।

हरष हरष भीजत सुत गोरी^४ ॥ ४ ॥

हंस हंसनी जुड़ मिल आये ।

राग रागिनी नइ नइ गाये ॥ ५ ॥

देख नवीन बिलास मगन मन ।

ऊपर चढ़े सुन अधर शब्द धुन ॥ ६ ॥

शब्द हिंडोल बना सतपुर में ।

राधास्वामी भूलत जहाँ अधर में ॥ ७ ॥

हंसन के जहाँ भुंड सुहाये ।

अचरज सोभा कही न जाये ॥ ८ ॥

जुड़ मिल दरशन राधास्वामी करते ।

प्रीतम प्यारे के चरनन पड़ते ॥ ९ ॥

प्रेम सहित सब आरत गावें ।

छिन छिन राधास्वामी पुरुष रिभावें १०

१—अंतर । २—सुरत का निर्णय करने वाला अंग । ३—तरफ । ४—स्वच्छ, निर्मल ।

॥ शब्द १७ ॥

होली खेले रँगीली नार ।

सतगुरु से प्रेम लगाई ॥ टेक ॥

दीन अधीन रली सतसँग में ।

घट अनुराग जगाई ॥

प्रीत प्रतीति बढ़त चरनन में ।

दिन दिन भक्ति सवाई^१ ॥

मेहर से काल की अटक तुड़ाई ॥ १ ॥

प्रेम रंग घट भर भर लाई ।

उमँग उमँग गुरु पै छिड़काई ॥

सतसंगिन सतसंगी भाई ।

सब पै रंग अधिक बरसाई ॥

भींज भींज सब अति हरषाई ॥ २ ॥

अबीर गुलाल चहुँ देस उड़ाना ।

लाल सेत आकाश दिखाना ॥

सबके मुख भलकत अब नूरा^२ ।

बाजत घट घट अनहद तूरा^३ ॥

समाँ बँधा कुछ कहा न जाई ॥ ३ ॥

ऐसा अचरज फाग रचाई ।

जग बिच भारी धूम मचाई ॥

मन माया की धूल उड़ाई ।
 काल करम दोउ गये ठगाई ॥
 ऐसी दया राधास्वामी कराई ॥ ४ ॥
 भक्ती रीत हुई अब जारी ।
 प्रेम की घट घट बरषा भारी ॥
 मोह और काम रहे सब हारी ।
 जीवन का सहज होत उधारी ॥
 जग में फिरी राधास्वामी की दुहाई ५
 राधास्वामी नाम हुआ जग परघट ।
 काल करम की मिट गई खटपट ॥
 मन के मते सब रह गये सटपट ।
 सुरत शब्द कारज करे भटपट ॥
 राधास्वामी राधास्वामी सब मिल गाई ६
 जीव रहे जग सबहि दुखारी ।
 मेहर से सब अब हुए सुखारी ॥
 राधास्वामी ऐसी दया बिचारी ।
 मन माया दोउ बाज़ी हारी ॥
 राधास्वामी सबको पार लगाई ॥ ७ ॥

॥ शब्द १८ ॥

आग लगी संसार में ।
 सब कोई तपन सहे ॥

जो माने गुरु वचन को ।
 ऊँचे देस चढ़े ॥ १ ॥
 चढ़े जो ऊँचे देस को ।
 करम भरम सब त्याग^१ ॥
 शब्द सुने निज भवन में ।
 चरनन में रहे लाग ॥ २ ॥
 शब्द शब्द पौड़ी चढ़े ।
 निरखे जाय सत नूर ॥
 राधास्वामी चरन के ।
 दरशन करे हज़ूर ॥ ३ ॥
 महा प्रेम आनंद का ।
 वही है निज भंडार ॥
 जो पहुँचे वहाँ दया से ।
 उसी का होय उधार ॥ ४ ॥
 और सकल^२ परपंच^३ है ।
 भोजल पार न जाय ॥
 चौरासी के घेर में ।
 फिर फिर भटका खाय ॥ ५ ॥
 याते सब जिव समझ कर ।
 पकड़ो सतगुरु बाँह ॥

जनम जनम नहि सहोगे ।

काल करम की दाँह^१ ॥ ६ ॥

राधास्वामी सरन लो ।

गावो राधास्वामी नाम ॥

सुरत शब्द अभ्यास कर ।

चढ़ पहुँचो निज धाम ॥ ७ ॥

॥ शब्द १८ ॥

यह देह मलीन और नाशमान ।

जगत कलेश और दुख की खान^२ ॥ १ ॥

और कहीं नहि अमन अमान^३ ।

माया देश के पार चलान ॥ २ ॥

सुरत शब्द का गहो निशान^१ ।

राधास्वामी धाम बसान ॥ ३ ॥

(चरन समान)

॥ शब्द २० ॥

धन धन राधास्वामी गाय रहूँगी ।

जग में शोर मचाय रहूँगी ॥

गुरु गुरु नाम पुकार रहूँगी ॥ टेका ॥

वाह वाह मेरे राधास्वामी प्यारे ।

वाह वाह रचना के अधारे ॥

वाह वाह गुरु परम उदारे ।
 वाह वाह मेरे सत करतारे^१ ॥
 चरन पकड़ आज लिपट रहूँगी । १।
 दया करी मोहि संग लगाया ।
 जग जँजाल से लीन छुड़ाया ॥
 बचन सुना सब भरम नसाया ।
 करम धरम से लीन बचाया ॥
 चरनन सेवा धार रहूँगी ॥ २ ॥
 मेहर करी घट भेद सुनाया ।
 मन में मेरे प्रेम जगाया ॥
 रूप अनूप मेरे हिये बसाया ।
 जग का भय और भाव हटाया ॥
 बिमल बिमल गुन गाय रहूँगी ॥ ३ ॥

॥ शब्द २१ ॥

भूल भरम गफलत अब छोड़ो ।
 शब्द गुरु में सूरत जोड़ो ॥ १ ॥
 मन का कहा न मानो कब ही ।
 यह भोजल में गोते देही ॥ २ ॥
 प्रेम प्रीति गुरु चरनन लाओ ।
 राधास्वामी चरन पकड़ घर जाओ ॥ ३ ॥

अब ही चेतो समझो भाई ।
 धन और मान देव बिसराई ॥ ४ ॥
 फिर औसर अस मिले न भाई ।
 चौरासी में रहो भरमाई ।
 माया देस में भटका खाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द २२ ॥

मेरा भीज रहा मन प्रेम रंग ।
 अब चाहत निस दिन संत संग ॥ १ ॥
 गुरु चरनन धावत नित उमंग ।
 कर दर्शन फूलत उमँग उमंग ॥ २ ॥
 सुन बचन अमी रस नित पियंग^१ ।
 सुत चढ़ती धुन सँग ज्यों पतंग ॥ ३ ॥
 गुरु का बल हिरदे धर उतंग^२ ।
 अब काल करम सँग करती जंग^३ ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

पिरेमन सुरत आरती धार ।
 चरन गुरु आई कर सिंगार ॥ १ ॥
 सील की ओढ़ चदरिया सार ।
 छिमा की कुरती अंग सँवार^४ ॥ २ ॥

घेर मन लहँगा दीन बनाय ।

चित्त की चोली चमक सजाय ॥ ३ ॥

सरन गुरु हार हिये में डार ।

सील की माला गले सँवार ॥ ४ ॥

वचन २३

॥ भाग १ ॥

साखी

राधास्वामी दाता दयाल हैं ।

मेरे पित और मात ॥

चरनन से लागी रहूँ ।

तजूँ न उनका साथ ॥ १ ॥

राधास्वामी समरथ पुर्ष हैं ।

और राधास्वामी सच करतार ॥

राधास्वामी दीनदयाल हैं ।

और राधास्वामी परम उदार^१ २

वाह वाह राधास्वामी ।

सुमिरो भाई राधास्वामी ॥ ३ ॥

मंसा^३ बाचा^३ कर्मना^४ सबको सुख पहुँचाय ।

अपने मतलब कारने दुख न देतू काय^५ ॥ १ ॥

जो सुख नहि तू दे सके तो दुख काहू मत दे ।
ऐसी रहनी जो रहे सोई शब्द रस ले ॥ २ ॥

नाम रूप से प्यार कर लागे घट के माहि ।
गुनना^१ सबहि बिसार कर चित राखे
पिव माहि ॥

बाहर की मत देख तू अंतर साईं राख ॥
मतगुरु दीनदयाल हैं देहैं अचल सुहाग ।१॥

चुपके चुपके बैठ कर करो नाम की याद ॥
दया मेहर मे पाइहो तुम सतगुरु परशाद ।१॥

बंधन ही से ऊपजें दुख सुख और त्रिय ताप^२ ।
बंधन ही से सहत हैं जनम मरन की घात^३ ।१॥
बंधन से बंधन कटे निरबँध हो जावे ।
राधास्वामी दया से निज घर चढ़ जावे ॥२॥

चलो चलो घर घंट पुकारे ।
रलो मिलो सँग दयाल पियारे ॥ १ ॥

१—गुनावन । २—त्रिय ताप—आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक कष्ट ।

३—चोट ।

किता

मुझे अपने प्रीतम से है यह करार^१ ।
 कि जब तक है जाँ देह में बरकरार^२ ॥१॥
 करूँ उसके भक्तों से हर दम पियार ।
 रहूँ उनको आपे के मुवाफ़िक़ निहार ॥२॥

पिया मेरे और मैं पिया की ।
 कुछ भेद न जानो कोई ॥ १ ॥
 जो कुछ होय सो मौज से होई ।
 पिया समरथ करें सोई ॥ २ ॥

॥ ठुमरी ॥

इतनी अरज मेरी मानो स्वामी ।
 इतनी अरज मेरी मानो ॥
 चरनन लेव लगाइ ।
 देव मोहि ठाऊँ ॥ टेक ॥
 मैं बलहीन दीन मोहि जानो ।
 दीजै प्रेम भक्ति मोहि दानो ॥ १ ॥

॥ सवाल ॥

सखी री मैं कैसे बचूँ इस मन से।

यह तो मोह रहा भोगन में ॥ १ ॥

॥ जवाब ॥

राधास्वामी दीनदयाल सुने हैं।

तोहि प्रीति देवें चरनन में।

प्यारीतू ऐसे बचे इस मन से ॥ १ ॥

॥ भाग २ ॥

॥ टेकें व कड़ियाँ मुतफ़रिक्क ॥

संत में यार परघट है।

इधर आवो यहाँ ढूँढो ॥ १ ॥

तेरे घट में छिपा बैठा।

इधर आवो यहाँ ढूँढो ॥ २ ॥

मेरे प्यारे बहन और भाई।

दुक दया बिचारो।

मोहि लेव निकारी ॥ १ ॥

मेरे प्यारे बहन और भाई।

जग योंही बीता जावे।

जल्दी से काज बना लो ॥ २ ॥

मेरे प्यारे बहन और भाई ।

क्यों आपस में तुम भगड़ो ।

रल मिल कर सतसँग करना ॥३॥

मेरे प्यारे बहन और भाई ।

जग आसा दूर निकारो ।

गुरु चरनन प्रीति बढ़ाना ॥ ४ ॥

मेरे प्यारे बहन और भाई ।

यह देश तुम्हारा नाहीं ।

निज धाम जाय कर बसना ॥ ५ ॥

मेरे प्यारे बहन और भाई ।

यह जग रैन का सुपना ॥

परमारथ चेत कमाओ ॥ ६ ॥

मेरे प्यारे बहन और भाई ।

भोगन की चाह तियागो ॥

घट में नित आनँद लेना ॥ ७ ॥

मेरे प्यारे बहन और भाई ।

क्यों जग में बिरथा भरमो ॥

अंतरमुख साधन करना ॥ ८ ॥

मेरे प्यारे बहन और भाई ।

राधास्वामी सरन सम्हारो ।

निज घट में चरन रस लेना ॥ ८ ॥

मेरे प्यारे बहन और भाई ।

गुरु बचन समझ कर मानो ।

जीव काल से लेव बचाई ॥१०॥

मेरे प्यारे बहन और भाई ।

गुरु का उपदेश सम्हारो ॥

चौरासी फेर बचा लो ॥११॥

बचन सुना जग भाव हटाया ।

दरशन दे मोहि चरन लगाया ॥ १ ॥

काल और करम दोऊ सुलवाया ।

घट में मेरे प्रेम जगाया ॥ २ ॥

वाह प्यारे सतगुरु राधास्वामी ।

मन मेरा मुझे नचाय रहा ॥टेक॥

जो मारग अब गुरु बतावें ।

ताको पीठ दिखाय रहा ॥ १ ॥

जगत से मन को तोड़ चलो ।

चरन में चित को जोड़ चढो ॥ १ ॥

काल से डर कर सरन गहो ।

चरन गुरु दूढ़ कर पकड़ रहो ॥ २ ॥

जैसे बने तैसे करो कमाई ।

राधास्वामी चरनन धर परतीत ॥

चरन गुरु दम दम हिरदे धार ।

सरन पर डारूँ तन मन वार ॥

मनुआँ हठीला कहन न माने ।

भोगन में रस लेत ॥

गली गली में भरमत डोले ।

करे न गुरु सँग हेत ॥ १ ॥

मेरे प्यारे गुरु दातार ।

चरनन पकड़ रहूँ ॥

जगत तज गुरु चरन में भाज ।

सुरत आज लाई आरती साज ॥

सुरत शिरोमन फाग रचाया ।

जग बिच धूम मची री ॥

नाम का लीना कर हथियार ।

मोह मद डाले भाड़ निकार ॥

स्वामी प्यारे क्यों नहि सुनो पुकारी ॥

स्वामी प्यारे अब ही मेहर कराओ ॥

स्वामी प्यारे अबही लेव सुधारी ॥

मन इंद्री मेरे चुप न रहावें ।

चंचल रहत सदा री ॥ १ ॥

गहो रे चरन गुरु धर हिये प्रीती ।

धारो रे सरन गुरु धर परतीती ॥१॥

सतगुरु प्यारे ने रचाया ।

जग फाग रँगीला हो ॥

सतगुरु प्यारे ने सुलाये ।

पंच दूत दिवाने हो ॥

सतगुरु प्यारे ने बुझाई ।

जग तपन करारी हो ॥

सतगुरु प्यारे ने बचाई ।

जम से सुरत हमारी हो ॥

सतगुरु प्यारे ने जगाई ।

मन में प्रीति नवीनी हो ॥

कस पिघा घर जाऊँ री ।

सँग मनुआँ अनाड़ी ॥

कस जायँ री सखी ।

मेरे मन के बिकारा ॥

गुरु प्यारे चरन पर आज ।

मनुआँ वारूँगी ॥

गुरु प्यारे की आरत सार ।

गाऊँ उमँग उमँग ॥

गुरु प्यारे का ले बल हाथ ।

करम पछाड़ूँगी ॥

गुरु प्यारे का धर बिश्वास ।
मन से जूझूँगी ॥

गुरु प्यारे के नित गुन गाय ।
प्रेम जगाऊँगी ॥

सुन री सखी रात प्यारे राधास्वामी ।
मोहि सुपने में अँगवा लगाय रहे ॥

दरश आज दीजिये ।
मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥
मेहर अब कीजिये ।
मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥

सरन में लीजिये ।
मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥

बार बार मैं भूलनहार ।
तुम सतगुरु समरथ दातार ॥

सखी री घर जाऊँगी ।
सतगुरु सँग हिये धर प्यार ॥

सखीरी घर जाने दे मोहि ।

सतगुरु सँग तज परदेश ॥

मन तू भज ले बारम्बार ।

राधास्वामी नाम का आधार ॥

राधास्वामी नाम सदा सुखदाई ।

जिन सुमिरा तिनहीं गत पाई ॥

लीला अगम अपार ॥ १ ॥

सतसँग बिना जिया तरसे ।

मैं तो आय पड़ी हूँ चोरन के नगर ॥

भक्तन के स्वामी काज सँवारे ।

काल जाल से जीव निकारे ॥

धर सतगुरु औतार ॥

सुरतिया प्रेम जगाय रही

प्रेमीजन का कर सतसंग ॥

सुरतिया बिनती धार रही ।

लेव अब सबको चरन लगाय ॥

सुरतिया हैरत रूप भई ।

गुरू सन्मुख दूष्टी तान ॥

सुरतिया वाह वाह करती ।

गुरू की महिमा गाय रही ॥

सुरतिया हँस हँस गावत नित्त ।

गुरू की आरत प्रेम भरी ॥

सुरतिया झुरत रही मन माहि ।

प्रेम की घट में देख कसर ॥

सुरतिया घट में धावत नित्त ।

भरन को अमी गगरी ॥

सुरतिया धार बहाय रही ।

सतगुरू का दर्शन पाय ॥

सुरतिया बचन गुरू के जाँच ।

मगन होय सतसँग नित्त करती ॥

सुरतिया हरष रही मन माहि ।

गुरू के सुन सुन नये बचना ॥

सुरतिया बिगस रही ।

हर दम गुरु सेवा धार ॥

सुरतिया धार बसंती रंग ।

करन आई आरत गुरु दरबार ॥

सुरतिया बिनती करत रही ।

करो गुरु मेरा आज उधार ॥

सुरतिया नींद भरी ।

नित सोवत टाँग पसार ॥

मोहि नाच नचावे मन ठगिया ।

मेरा अब कैसे छुटना होय दइया ॥

पिया का दरस कस पाऊँ सखी ।

कोइ जतन बता दो री ॥

बिन दर्शन मन तड़प रहा ।

कस तपन बुझाऊँ री

बिन दर्शन मोहि चैन न आवे ।

कस मन समझाऊँ री ।

बिन दर्शन मोहि कुछ न सुहावे ।

कस जग बिच रहना होय ॥

बिन दर्शन मैं बिकल रहूँ ।

मन शान्ति न लावे हो ॥

बिन दर्शन चित रहे उदासा ।

कहि चैन न पावे हो ॥

भाग भरी सुत अजब अनोखी ।

सेवा धार रही ॥

पुस्तकों का सूचीपत्र

ये पुस्तकें मैनेजर पब्लिकेशन्स, दयलाबारा (आगरा) से मिल सकती हैं

नाम	मूल्य
परम गुरु स्वामीजी महाराज रचित	
१ सारबचन (पद्य)	हिन्दी ७.००
२ सारबचन (गद्य)	" ३.००
परम गुरु हुजूर महाराज रचित	
३ राधास्वामी मत प्रकाश	अंगरेजी १.५०
४ पिलग्रिम्स पाथ (हुजूर महाराज के पत्र)	" १.५०
५ राधास्वामी मत संदेश	हिन्दी १.००
६ राधास्वामी मत उपदेश	" १.००
७ निज उपदेश	" १.००
८ प्रेम उपदेश	" १.००
९ सार उपदेश	" १.२५
१० प्रश्नोत्तर	" १.००
११ जुगत प्रकाश	" २.००
१२ प्रेमबानी भाग १	" ५.००
१३ " भाग २	" ४.२५
१४ " भाग ३	हिन्दी ४.२५
१५ " भाग ४	" २.५०
१६ प्रेमपत्र भाग १	" ४.००
१७ " भाग २	" ४.००
परम गुरु सरकार साहब रचित	
१८ प्रेम-समाचार	" १.२५
राधास्वामी सतसंग सभा के स्वत्वाधिकार में अनुबादित पुस्तकें	
१९ राधास्वामी मत प्रकाश	बंगला १.२५
२० अमृतबचन	" ३.००
(परम गुरु महाराज साहब रचित पुस्तक 'डिस्कोर्सेस आन राधास्वामी फ़ेथ' का अनुवाद)	
परम गुरु स्वामीजी महाराज रचित	
२१ सारबचन	अंगरेजी ३.२५

नाम	मूल्य
परम गुरु हुजूर महाराज रचित	
२२ प्रेम पत्र भाग १	अंगरेजी ६.००
२३ " भाग २	" ६.००
२४ " भाग ३	" ६.००
२५ " भाग ४	" ६.००
२६ " भाग ५	" ६.००
२७ " भाग ६	" ३.००
२८ राधास्वामी मत उपदेश	" १.००
२९ राधास्वामी मत संदेश	" १.००
हुजूर साहबजी महाराज रचित	
३० यथार्थ प्रकाश भाग १ (विशेष संस्करण)	" ६.००
३१ " (साधारण संस्करण)	" ३.५०
३२ " भाग २	" ५.५०
३३ " भाग ३ (प्रथम पुस्तक)	" ५.५०
३४ " (द्वितीय पुस्तक)	" ४.००
३५ जिज्ञासा	" १.००
३६ राधास्वामी मत दर्शन	" १.००
३७ प्रेम संदेश	" १.००
३८ डिस्कोर्सेज भाग १ (सतसंग के उपदेश)	" ४.००
३९ " भाग २	" ४.००
४० " भाग ३	" ३.५०
४१ जतन प्रकाश	" १.००
४२ सिलैक्शन्स फ्राम प्रेम सन्देश	" १.००

राधास्वामी सतसंग सभा के स्वत्वाधिकार में सम्पादित या लिखित पुस्तकें

४३ फोर लैटर्स (हुजूर सरकार साहब)	" १.००
४४ सिलवरी स्पीचेज	" ०.२५
४५ शब्द संग्रह भाग १	हिन्दी ३.५०
४६ " " भाग २	" ३.५०
४७ संत बानी संग्रह भाग १	" १.००
४८ संत बानी संग्रह भाग २	हिन्दी १.२५
४९ रत्नावली	" १.००
५० दयालबाग पैम्फलेट (छोटा)	अंगरेजी ०.५०

